ज्यूज़ की परियों की कथाऐं

चयन और हिन्दी अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2023

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Jews Ki Pariyon Ki Kathayen (Jewish Fairy Tales and Legends)
Cover Page picture: Jerusalem, Israel
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Israel

Some Countries of Asia
Arab, Iran, Iraq, Afganistan, Pakistan, India, Kazakistan, Turkmen, Russia, Mongolia, Combodia, Japan, China, North and South Korea, Taiwan, Indonesia, South-east Asian Islands etc…

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **3000** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है। ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" के नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2023

इज़रायल की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। इस तरह साइज़ में भी और जनसंख्या में भी एशिया सबसे बड़ा महाद्वीप है। रूस का साइज़ इसको साइज़ में और चीन और भारत की जनसंख्या इसको जनसंख्या में सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है।

एशिया महाद्वीप में लगभग पचास देश हैं। इसके कुछ मुख्य देशों के नाम हैं – रूस, चीन, भारत, जापान, उत्तर और दक्षिण कोरिया, मंगोलिया, कम्बोडिया, तिब्बत, अरब, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, कज़ाकिस्तान आदि। इनमें से एक देश है इज़रायल जहाँ से दो धर्म शुरू होते है जहाँ एक मसीहा पैदा हुआ था जहाँ के लोग बहुत अक्लमन्द माने जाते हैं जहाँ के धर्म के लोगों ने हिटलर को भी डरा दिया था। ऐसा है यह इज़रायल देश। इस नाम से यह देश एक नया बना देश है जहाँ दुनियाँ भर के ज्यूज़ को शरण दी गयी है।

इसलिये यहाँ एक जनसंख्या तो वह है जो नया देश बनने से पहले थी और दूसरी जनसंख्या वह है जो दुनियाँ भर के ज्यूज़ के यहाँ इकट्ठे हो जाने के बाद बनी है। यहाँ भारत को मिला कर दुनियाँ भर के पैंतीस देशों से भी ज़्यादा देशों के ज्यूज़ रहते हैं।

यहाँ दी गयी ज्यू लोक कथाऐं एक पुस्तक का अनुवाद हैं जो टालमुड और मिडरैश पर आधारित हैं।[1] आशा है कि और लोक कथाओं की तरह से ये लोक कथाऐं भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी।

---

[1] Jewish Fairy Tales and Legends. By "Aunt Naomi" (Gertrude Landa). 1919. https://www.sacred-texts.com/jud/jftl/index.htm

1 गरुड़ों का महल[2]

"उगते हुए सूरज के देश"[3] के पूर्व में एक राजा रहता था जो अपना सारा दिन और आधी रातें आनन्द मनाने में बिताया करता था। उस समय के ज्ञान के अनुसार उसका राज्य दुनियाँ के बिल्कुल किनारे पर था और करीब करीब चारों तरफ से समुद्र से घिरा हुआ था।

ऐसा लगता था कि पहाड़ियों के पीछे क्या था इस बात की किसी को चिन्ता ही नहीं थी। उन्होंने उसे बाकी बची हुई दुनियाँ से अलग कर रखा था। शायद इसी लिये उस देश में किसी को कोई परेशानी नहीं थी।

अधिकतर लोग राजा की नकल करते थे और बिना किसी काम के इधर उधर घूमते रहते थे। उन्हें अपने भविष्य की भी कोई चिन्ता नहीं थी। राजा को अपनी जनता पर राज करना बहुत ही बेकार का काम लगता था।

वह अपनी जनता की भलाई के लिये जो सलाहें आती थीं उनकी भी कोई परवाह नहीं करता था। उसके सलाहकार जो कागज उसके हस्ताक्षर के लिये उसके पास लाते थे वह उन्हें पढ़ता भी नहीं था।

---

[2] The Palace of the Eagles. (Tale No 1)

[3] Land of the Rising Sun, means Japan"

वह जानता था कि वे कागज चॉद के स्कूल के नियमों के लिये होंगे, न कि व्यापार आदि के नियमों के लिये। ऐसा जब भी होता तो वह अक्सर यही कहता — "तुम मुझे इसके लिये तंग मत किया करो। तुम लोग मेरे सलाहकार और राज्य के मंत्री हो इसलिये जो तुम समझते हो कि राज्य के लिये सबसे ज़्यादा ठीक है वही कर लिया करो।"

यह कह कर वह अपने प्रिय खेल शिकार के लिये चला जाता। यह उसका समय बिताने सबसे अधिक प्रिय साधन था।

उसके राज्य की जमीन बहुत उपजाऊ थी तो किसी के दिमाग में यह विचार ही नहीं आया कि किसी साल बुरा मौसम होने की वजह से उन्हें अनाज की कमी महसूस हो सकती है। इसलिये वे अनाज को इकट्ठा करने के लिये कोई कोशिश भी नहीं करते थे।

एक बार गर्मी के मौसम में ठीक से बारिश नहीं हुई तो जमीन सूख गयी। उसके बाद जो जाड़े आये तो उसमें लोगों को बहुत परेशानी हुई। राज्य में अकाल पड़ गया।

लोगों को यह अच्छा नहीं लगा। पर उन्हें यह भी नहीं पता था कि ऐसी परिस्थिति में वे क्या करें। जब उन्होंने यह बात राजा से कही तो वह भी उनकी कोई सहायता नहीं कर सका। वास्तव में वह समझ ही नहीं सका कि समस्या क्या है। उसने इस पर कभी ध्यान ही नहीं दिया था।

वह बोला — "मैं तो एक ताकतवर शिकारी हूँ। मैं तो अपने खाने के लिये हमेशा ही कितने भी जानवर मार सकता हूँ।" पर सूखे ने तो पेड़ों घास आदि सभी को नष्ट कर दिया था। और फिर इस तरह के खाने की कमी ने तो जानवरों को भी दुबला पतला और कम कर दिया था।

राजा ने देखा कि जंगल में अब जानवर और चिड़ियें बहुत कम रह गये हैं। न कोई हिरन दिखायी देता है और न चिड़ियें। और जो हैं भी तो वह बहुत पतले दुबले और मरे हुए हैं।

लेकिन फिर भी वह परिस्थिति की गम्भीरता को नहीं समझ पा रहा था। तभी एक शानदार विचार उसके दिमाग में आया।

उसने कहा — "मैं इन पहाड़ों के उस पार की जो अनजान जगह है उसे जा कर देखता हूँ। मुझे विश्वास है कि मुझे उधर कोई ऐसी जगह जरूर मिल जायेगी जहाँ बहुतायत हो। और कुछ नहीं तो वहाँ शिकार का ही कुछ आनन्द रहेगा।"

सो इसके लिये काफी लोग तैयार किये गये और राजा और उसके शिकारी लोग पहाड़ियों के ऊपर रास्ता खोजते हुए चले। यह कोई मुश्किल काम नहीं था।

तीसरे दिन उन्हें पहाड़ियों की चोटियों और खाइयों के बीच एक दर्रा मिल गया जिससे दूर तक फैली हुई जमीन देखी जा सकती

थी। वहॉ से वह एक बहुत सुन्दर जमीन लग रही थी। जहॉ तक नजर जाती थी ऊॅचे ऊॅचे हरे भरे पेड़ नजर आते थे।

सावधानीपूर्वक सारे शिकारी चट्टानी दीवार के दूसरी तरफ उतर गये और उस अनजानी जगह में प्रवेश किया।ऐसा लगता था कि वहॉ कोई रहता नहीं था।

पर वहॉ तो किसी जानवर या पक्षी का भी कोई नामो निशान नहीं था। कोई आवाज नहीं थी केवल जंगल की खामोशी थी। कोई रास्ता दिखायी नहीं दे रहा था।

जहॉ तक शिकारियों को लग रहा था अब तक वहॉ कोई गया नहीं था। यहॉ तक कि प्रकृति भी अनछुई थी। पेड़ पुराने थे उनके तने अजीब अजीब शक्ल के थे। उनकी पत्तियॉ पीली पड़ी हुई थीं जैसे उनकी बढ़ोत्तरी बहुत पहले ही रुक गयी हो।

जब वे लोग जंगल में से गुजर रहे थे तो उनको बड़ी अजीब सी सिहरन हो रही थी। सब शिकारी एक लाइन में चले जा रहे थे इससे उनकी सिहरन में और बढ़ोत्तरी ही हो रही थी। इस नये वातावरण से राजा बहुत खुश था वह चार दिन तक उसमें चलता रहा।

उसके बाद अचानक ही जंगल खत्म हो गया और एक बड़ा से खुला हुआ मैदान, रेगिस्तान, आ गया। उसके बीच एक बहुत चौड़ी नदी बह रही थी।

बहुत दूर एक बरफ से ढका हुआ एक पहाड़ था जो था तो एक चौरस शक्ल का पर हर हाल में वह लग पत्थरों का ही पहाड़ लग रहा था। फिर भी क्योंकि वह बहुत दूर था इसलिये निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता था।

वज़ीर बोला — "पानी तो जीवन का चिन्ह है।"

राजा ने उस पहाड़ तक जाने का निश्चय किया। नदी में एक जगह ऐसी देख कर जहाँ नदी का पानी उथला था वहाँ से नदी पार की। जब वे नदी के उस पार पहुँच गये तब उस चट्टान के पहाड़ की तरफ जाना आसान हो गया। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि वह चट्टानें होने के लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही एकसार थीं।

राजा को पूरा विश्वास था कि उस पहाड़ की चोटी पर जरूर ही कोई बहुत बड़ा मकान होगा। जब वे और पास आये तो उनको यह निश्चय हो गया कि वहाँ पर कुछ है। अब या तो वहाँ कोई शहर था या महल था। यह देखने के लिये उन लोगों ने अगले दिन वहाँ चढ़ने का निश्चय किया।

रात को कोई आवाज सुनायी नहीं दी। पर सुबह सबको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऊपर जाने के लिये एक रास्ता स्पष्ट दिखायी दे रहा था।

उस रास्ते पर इतनी ज़्यादा घास और मौस आदि उगी हुई थी और बेलें फैली पड़ी थीं कि ऐसा लग रहा था जैसे कि उसे बहुत

दिनों से इस्तेमाल न किया गया हो। उस रास्ते की चढ़ाई भी कठिन थी। पहाड़ी पर आधी दूर चढ़ने के बाद उन्हें पहली बार वहाँ ज़िन्दगी के कुछ चिन्ह दिखायी दिये।

यह एक गरुड़ था। अचानक ही वह पहाड़ की चोटी से उड़ा और शिकारियों के ऊपर एक चक्कर काट कर उड़ गया। वह चिल्लाया जरूर पर उसका उन पर हमला बोलने का कोई इरादा नहीं था।

आखिर वे सब चोटी पर पहुँच गये। वह एक बहुत बड़ा पठार था। वह सारी जगह एक बहुत बड़ी और भारी दीवार से घिरी हुई थी। उसमें बड़ी बड़ी मीनारें भी थीं। राजा बोला — "यह जगह तो किसी बड़े राजा की लगती है।" पर उसमें घुसने की जगह कहीं दिखायी नहीं दे रही थी।

वह सारा दिन उनका इधर उधर घूमने में ही निकल गया पर उनको उसमें कोई दरवाजा खिड़की आदि कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। सो यह तय किया गया कि अगले दिन सवेरे फिर से घुसने की जगह ढूँढने की कोशिश की जायेगी।

उस दीवार में से अन्दर जाने का रास्ता ढूँढना तो सचमुच बहुत बड़ी समस्या नजर आ रही थी। शिकारियों में से एक साहसी शिकारी ने कहीं से उसकी सबसे छोटी मीनार पर एक गरुड़ का घोंसला ढूँढ लिया था।

बड़ी मुश्किल से उसने उस चिड़िया को पकड़ भी लिया था और वह उसे राजा के पास ले आया। राजा ने अपने एक अक्लमन्द आदमी मफ़लोग[4] से जो चिड़ियों की भाषा जानता था गरुड़ से बात करने के लिये कहा।

गरुड़ ने अपनी भद्दी मोटी आवाज में कहा — "मैं तो केवल एक बच्चा चिड़िया हूँ, सात सौ साल का। मैं कुछ नहीं जानता। इस मीनार से एक और ऊँची मीनार पर मेरे पिता गरुड़ का घोंसला है। वह शायद आपको इसके बारे में ज़्यादा कुछ बता सकें।"

इससे ज़्यादा वह नहीं बोला। सो अब तो यही करना था कि उस ज़्यादा ऊँची मीनार पर चढ़ कर उसके पिता से कुछ जानकारी प्राप्त की जाती। सो वे लोग दूसरी ऊँची मीनार पर पहुँचे।

वहाँ रह रहे गरुड़ ने जवाब दिया — "इससे भी ऊँची मीनार पर मेरे पिता रहते हैं। और उससे भी ऊँची मीनार पर मेरे बाबा रहते हैं जो दो हजार साल के हैं। शायद वह आपके सवालों के जवाब दे सकें। मैं कुछ नहीं जानता।"

बड़ी मुश्किल से उस सबसे ऊँची मीनार पर पहुँचा गया और उस आदरणीय चिड़िया को ढूँढा गया। वह कुछ सोया सोया सा लग रहा था। बड़ी मुश्किल से उसे हिला हिला कर जगाया गया। तब कहीं जा कर उसने शिकारियों को सावधानी से देखा।

[4] Muflog

फिर वह बोला — "मुझे सोचने दो। मुझे सोचने दो। मैंने सुना था जब मैं बहुत ही छोटा सा बच्चा गरुड़ था फिर भी कुछ साल का था। यह बहुत बहुत दिनों पुरानी बात है जब मेरे दादा जी[5] के दादा जी से उनके दादा जी ने कहा था कि उन्होंने भी इस बात को उनसे बहुत बहुत पहले सुना था कि एक राजा इस महल में रहता था।

लाखों साल पहले हवा के एक भयानक तूफान से इस किले का दरवाजा बन्द हो गया था।"

मफ़्लौग ने पूछा — "इस किले का दरवाजा कहाँ है।"

यह तो उसके लिये भी एक पहेली थी वह तुरन्त ही इस बात का जवाब नहीं दे सका। वह बहुत देर तक सोचता रहा फिर सो गया। अपना जवाब पाने के लिये वे उसे बार बार जगाते रहे। जब तक उन्हें उसका जवाब नहीं मिल गया।

वह बोला — "सुबह को जब सूरज निकलता है तो उसकी पहली किरन इस महल के दरवाजे पर पड़ती है।" अपने सोचने और बात करने की वजह से वह फिर सो गया।

उस रात उनमें से कोई भी नहीं सो सका। वे सभी यह सोचते रहे कि सुबह होते ही सबसे पहले वे ही महल का दरवाजा देखेंगे। जब सूरज की पहली किरन जिस जगह पर पड़ी तो उन सबने उस जगह को सावधानी से देखा।

---

[5] Translated for the word "Great-grandfather"

परन्तु वहॉ उन्हें कोई दरवाजा दिखायी नहीं दिया। उसके बाद खुदाई शुरू की गयी तो कई घंटे की खुदाई के बाद उन्हें एक खुली हुई जगह दिखायी दी।

इसी खुली जगह में से वे लोग किले के अन्दर घुसे। कितनी आश्चर्यजनक और रहस्यमयी जगह थी वह। उसमें सदियों पुरानी घास और पौधे उगे हुए थे। चारों तरफ वहॉ लताऐं उलझी पड़ी थीं जहॉ पहले कभी सुन्दर सजे हुए रास्ते हुआ करते थे।

और इन सब में छिपी हुई थीं नीची नीची इमारतें जिनकी दीवारों की झिरियों में कई तरह की जड़ें उग आयी थीं। उनके उगने और बढ़ने से पत्थर तक टूट गये थे। सब जगह अकेलापन और सूनापन छाया हुआ था।

राजा के लोगों को वहॉ से जाने के लिये रास्ता बनाने के लिये वे सब पौधे ओर बेलें आदि की सफाई करने में काफी समय लग गया।

जब उन्होंने यह सब कर लिया तो वे एक ऐसे दरवाजे पर आये जहॉ लकड़ी में कुछ खुदा हुआ था। यह भाषा सिवाय मफ़लौग के बाकी सबके लिये अनजानी थी। उसने उसे पढ़ा —

"हम, इस महल में रहने वाले, यहॉ बहुत समय तक आराम से रहे। पर फिर भूख आयी। हमने उसके लिये कोई तैयारी नहीं की

थी। हमारे पास बहुत सारे रत्न थे पर अनाज नहीं था। हमने मोती और लाल बारीक आटे में पीसे पर हम उनसे रोटी नहीं बना पाये।

इसलिये हम मर रहे हैं और अपना यह महल गरुड़ों के रहने के लिये छोड़ रहे हैं। वे हमारे शरीर को खा जायेंगे और हमारी मीनारों पर अपना घोंसला बनायेंगे।

सारे शिकारी यह सुन कर डर गये जब मफ़लौग ने यह वहाँ लिखा हुआ पढ़ा। और राजा तो बिल्कुल ही पीला पड़ गया। बहुत पुरानी लिखी गयी इस चेतावनी ने तो नयी जगह के देखने के आनन्द पर पानी ही फेर दिया।

कुछ लोगों ने कहा कि उनको यह सब छोड़ कर तुरन्त ही घर वापस चलना चाहिये। उनको छिपे हुए खतरे से डर लगने लगा था पर राजा अपने इरादों पर अटल था।

राजा ने अटल इरादे से कहा — "मैं इसकी आखीर तक जाँच पड़ताल करूँगा। तुममें से जिन जिन को डर लग रहा हो वे वापस जा सकते हैं। मुझे तो जरूरत पड़ी तो मैं अकेला ही जाऊँगा।"

राजा का यह अटल इरादा देख कर दूसरे लोग वहीं रुक गये। एक ने तो दरवाजे को नष्ट कर देने की कोशिश भी की पर राजा ने कहा कि "नहीं इस दरवाजे को सुरक्षित रखो।"

उन्होंने और ज़्यादा घास बेलें आदि काटे तो उन्हें ताले में लगी हुई उसकी चाभी मिल गयी। दरवाजे को खोलना भी कोई आसान

काम नहीं था क्योंकि बहुत सालों से इस्तेमाल में न आने के कारण उसमें जंग लग गयी थी और वह जाम हो गया था।

किसी तरह से जब वह खुला तो उसने भयंकर शोर मचाया और बड़ी धीरे धीरे खुला। खुलने के साथ ही उसमें से सीलन और जंग की बदबू बाहर निकली।

लोग टखने भरी धूल में चल कर उसके अन्दर पहुँचे। वहाँ वे कई कमरों की भूलभुलैया में से गुजरते हुए एक बहुत बड़े कमरे में पहुँचे जिसमें बहुत सारी मूर्तियाँ रखी हुई थीं। वे सब मूर्तियाँ इतनी सुन्दर बनी हुई थीं कि बिल्कुल ज़िन्दा लग रही थीं। उनको देख कर एक पल के लिये तो उन सबकी साँस ही रुक गयी।

यह कमरा बिल्कुल साफ था। इसमें कोई धूल नहीं थी। मफ़लोग ने एक तरफ को इशारा कर के बताया कि वह कमरा हवाबन्द कमरा था। यह तो साफ था कि उस कमरे को इसी लिये ऐसा बनाया गया था ताकि वे मूर्तियाँ सुरक्षित रह सकें।

राजा ने कहा – "ये मूर्तियाँ राजाओं के खानदान की होंगी।"

उनके नीचे जो शब्द खुदे हुए थे उन्हें पढ़ कर मफ़लोग बोला कि हाँ वह वैसा ही था। दूर की तरफ एक चबूतरे पर जो बाकी चबूतरों से कुछ ऊँचा था वहाँ एक मूर्ति खड़ी थी जो दूसरी मूर्तियों से कुछ अधिक बड़ी थी। नाम के अलावा उसके चबूतरे पर कुछ और भी खुदा हुआ था। मफ़लोग ने उसे पढ़ा –

"मैं यहाँ का आखिरी राजा हूँ – "या"[6] – आखिरी आदमी। मैंने अपने हाथों से इस काम को पूरा किया है। मैं हजारों शहरों पर राज करता था। हजारों घोड़ों पर सवारी करता था। हजारों राजकुमारों से कर वसूल करता था। पर जब अकाल आया तो मैं शक्तिहीन हो गया।

तुम लोग जो इसे पढ़ सकते हो किस्मत से सीख लो जो इस देश पर छा गयी थी। इस आखिरी आदमी की यह सलाह मानो कि जब तक दिन की रोशनी है अपना खाना बना लो... ।"

यहाँ आ कर शब्द टूट से गये थे और बाकी के लिखे हुए को समझा नहीं जा सका।

"बस करो।" राजा बोला। उसकी आवाज स्थिर नहीं थी। "यह तो वास्तव में में एक बहुत ही अच्छा शिकार रहा। अपनी बेवकूफी में मैं जो आनन्द के लिये निकला था उससे मैंने बहुत कुछ सीखा। मैंने वह सीखा जो मैं खुद देखने में असफल रहा।

चलो घर वापस चलो और अब हम इस राजा की सलाह को मानेंगे जो अपने अन्त को भुगत चुका है। अगर हम उसकी चेतावनी पर ध्यान नहीं देंगे तो हमारा भी वही अन्त होगा जो इसका हुआ है।"

---

[6] Yea – the last of the men

उस मैदान की तरफ देखते हुए जिसे वे अभी अभी पार कर वहाँ आये थे राजा के दिमाग में अब बहुत सारे धनी और समृद्ध शहरों की और मुस्कुराते हुए लहलहाते हुए उपजाऊ खेतों की शक्ल घूम गयी।

कल्पना में उसने बहुत तरह के सामानों की भरी भरी गाड़ियाँ शहरों में आती जाती देखीं। जैसे ही निराशा के बादल उस पर छाये तो उसने देश के ऊपर फिर अँधेरे की छाया देखी।

शहर टूट रहे थे गायब हो रहे थे। गरुड़ उसके देश पर मँडरा रहे थे और वे उस सबको अपने काबू में कर रहे थे जिसकी आदमी को कद्र ही नहीं थी। उन गरुड़ों के आने के बाद सब धूल अब दबती जा रही थी और हर साल इकट्ठी होते हुए एक रेगिस्तान में बदल रही थी।”

इसके बाद कोई एक शब्द भी नहीं बोला और अपने घरों की तरफ "उगते हुए सूरज के देश" के पूर्व में लौट पड़े। वे कुल मिला कर चालीस दिन तक बाहर रहे थे। उसके बाद ही वे चट्टानों की दीवार को फिर से पार कर रहे थे। लोगों ने खुशी से उनका स्वागत किया।

जनता ने उनसे पूछा — "आप हमारे लिये क्या ले कर आये हैं? कुछ समय बाद ही हम भूखे मरने लगेंगे।"

राजा बोला — "नहीं तुम लोग भूखे नहीं मरोगे। मैं गरुड़ों के महल से बुद्धि ले कर आया हूँ। दूसरों के दुख और किस्मत से मैंने वहाँ कुछ सीखा है – अपना कर्तव्य करना।"

तुरन्त ही वह यह देखने में जुट गया कि जमीन अन्न उपजाने के लिये ठीक से तैयार है अन्न ठीक से उगाया जा रहा है उसका ठीक से वितरण हो रहा है।

अब उसने अपने बेवकूफी वाले सुख के साधनों को छोड़ दिया था और अब "सूरज उगने वाले देश" के पूर्व के देश में खुशियाँ और समृद्धि छा गयी। साथ में गरुड़ों के महल जाते समय जिस मैदान से राजा गुजर कर गया था वहाँ भी उसने शहर बसा लिये।

2 बाढ़ का राक्षस[7]

दुनियाँ के डूबने से ठीक पहले सारे जानवर आर्क[8] के सामने इकठ्ठे हुए और पिता नोआ ने सब कुछ ठीक से देखा भाला और कहा — "वे सब जो लेट सकते हैं वे अब नाव में घुसेंगे और बड़ी बाढ़ से सुरक्षित रहेंगे जो अभी आ कर दुनियाँ को डुबोने और नष्ट करने वाली है। जो खड़े हो सकते हैं वे अभी नहीं घुस सकते।"

यह सुन कर रेंगने वाले भिन्न भिन्न जानवरों ने घुसना शुरू किया। पिता नोआ उन सबको ध्यान से देख रहे थे। वह कुछ परेशान से दिखायी दे रहे थे।

उन्होंने सोचा — "पता नहीं। मैं यह एक सींग वाला घोड़ा[9] कहाँ से लाऊँ और फिर कैसे उसे अपनी नाव में चढ़ाऊँ।"

इतने में पीछे से एक गरजती हुई आवाज आयी — "पिता नोआ। मैं आपके लिये "एक सींग वाला घोड़ा" ला सकता हूँ।"

---

[7] The Giant of the Flood. (Tale No 2)

[8] Noah's Ark – this was the big boat God asked Noah to build during coming of the Great Flood

[9] Translated for the word "Unicorn" – a mythical animal – a horse with one stright horn projecting from his forehead. See its picture above.

पिता नोआ ने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि उनके पीछे राक्षस औग[10] खड़ा हुआ है। उसने फिर कहा — "पर आप मुझसे वायदा कीजिये कि आप मुझे बाढ़ से बचा लेंगे।"

पिता नोआ बोले — "जाओ यहाँ से चले जाओ। तुम राक्षस हो। मैं तुम्हारे साथ कोई व्यवहार नहीं रख सकता।"

राक्षस ने प्रार्थना भरे शब्दों में कहा — "पिता। मेरे ऊपर दया कीजिये। देखिये न कि मेरी शक्ल किस तरह सिकुड़ रही है। एक समय था जब मैं इतना लम्बा हुआ करता था कि मैं बादलों से पानी पी लिया करता था और अपनी मछली सूरज में भून लिया करता था।

मुझे इस बात का डर नहीं है कि मैं बाढ़ में डूब जाऊँगा। मुझे तो बस डर केवल इस बात का है कि बाढ़ में सारा खाना नष्ट हो जायेगा और फिर मैं भूखा रह जाऊँगा और मर जाऊँगा।"

यह सुन कर पिता नोआ मुस्कुराये पर जब औग "एक सींग वाला घोड़ा" ले आया तो बाद में फिर गम्भीर हो गये। हालाँकि राक्षस तो यह कह रहा था कि वह घोड़ा तो सबसे छोटा था जो वह ढूँढ पाया पर वह घोड़ा तो एक पहाड़ जितना बड़ा था।

अब औग आर्क के सामने लेट गया और पिता नोआ को उसके इस कार्य से लगा कि उसे तो उन्हें अवश्य ही बचाना चाहिये। कुछ

---

[10] Og – a demon

देर तक तो वह बहुत परेशान रहे कि वह उसे कैसे ले कर जायें उन्हें क्या करना चाहिये पर फिर एक बहुत ही बढ़िया विचार उनके दिमाग में आया।

उन्होंने उस बड़े से जानवर के सींग को आर्क से रस्सी से बॉध दिया ताकि वह आर्क के साथ साथ तैर सके और कुछ खा भी सके।

औग खुद पास के एक पहाड़ पर बैठ गया और वहॉ बैठे बैठे बारिश पड़ती हुई देखने लगा। बारिश तेज़ पर तेज़ होती गयी इतनी कि नदियॉ अपनी सीमाऐं लॉघ गयीं और पानी इतना बढ़ गया कि उसने जमीन पर की सारी चीज़ें बहा दीं।

यह देख कर पिता नोआ आर्क के दरवाजे के सामने खड़े रहे जब तक कि पानी उनकी गरदन तक नहीं आ गया। बस फिर पानी ने उन्हें आर्क के अन्दर धक्का दे दिया और उसका दरवाजा धड़ाम से बन्द हो गया।

आर्क धीरे से ऊपर उठी और चलने लगी। एक सींग वाला घोड़ा भी उसके साथ ही तैर गया। जब वह घोड़ा औग के पास से गुजरा तो औग कूद कर उसके ऊपर बैठ गया।

वह ज़ोर से हॅसा और पिता नोआ से बोला — "देखा आपको मुझे बचाना ही पड़ा। आपने खिड़की के रास्ते जो खाना घोड़े के

लिये इकट्ठा कर के रखा है मैं वह सारा खाना उससे छीन कर खा जाऊँगा।”

पिता नोआ ने देखा कि औग से बात करने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि वह कभी भी उसकी आर्क को अपनी असीम ताकत से डुबो भी सकता है।

सो पिता नोआ ने एक खिड़की से झॉक कर औग से कहा — “मैं तुमसे एक समझौता करना चाहता हूँ। मैं तुम्हें खाना खिलाऊँगा पर तुम्हें मेरे वंशजों का नौकर बनना पड़ेगा।”

औग बहुत भूखा था सो वह तुरन्त ही इस समझौते पर राजी हो गया और उस दिन का अपना पहला नाश्ता खाया।

भारी बारिश पड़ती रही पड़ती रही। इस भारी बारिश की वजह से बाहर ॲधेरा छा गया था पर आर्क के अन्दर सब जगह उजाला ही उजाला था क्योंकि नोआ ने धरती से बहुत सारे कीमती पत्थर इकट्ठे कर लिये थे और उन्हें खिड़की की जगह इस्तेमाल कर लिया था। उनकी चमक से आर्क की तीनों मंजिलों में उजाला हो रहा था।

आर्क में कुछ जानवर बहुत शरारतें कर रहे थे। वे नोआ को सोने ही नहीं दे रहे थे। शेर को बहुत ज़ोर का बुखार आ गया था। एक चिड़िया एक कोने में सारे समय सोती ही रही। यह फीनिक्स चिड़िया थी।

एक दिन पिता नोआ ने उसे कहा — “उठो उठो। चलो खाने का समय हो गया।”

चिड़िया बोली — “बहुत बहुत धन्यवाद पिता नोआ। मैंने देखा कि आप बहुत व्यस्त हैं इसलिये मैंने कुछ कहा नहीं।”

पिता नोआ यह सुन कर बहुत खुश हुए वह बोले — “तुम बहुत ही अच्छी चिड़िया हो इसलिये तुम कभी नहीं मरोगी।”

एक दिन बारिश रुक गयी बादल छँट गये और सूरज अपने पूरे ज़ोर से चमक उठा। अब दुनियाँ कितनी अलग दिखायी दे रही थी। दुनियाँ सारा का सारा समुद्र दिखायी दे रही थी। पानी के अलावा वहाँ और कुछ था ही नहीं।

बस पहाड़ की एक दो ऊँची ऊँची चोटियाँ ही दिखायी दे रही थीं। सारी दुनियाँ ही पानी में डूबी हुई थी। पिता नोआ ने आँखों में आँसू भर कर चारों तरफ देखा। आर्क के पीछे एक सींग वाले घोड़े पर बैठा औग बहुत खुश था।

वह बहुत चहक कर हँसा और बोला — “हा हा हा हा। अब मैं अपनी मरजी से चाहे जितना खा सकूँगा और अब मुझे कभी भी आदमी जैसे कोई भी छोटे मोटे जानवर तंग नहीं कर पायेंगे।”

पिता नोआ बोले — “अब तुम इतने भी यकीन से ऐसा मत कहो। ये छोटे छोटे जानवर ही तुम्हारे मालिक बनेंगे। वे तुम सबसे ज़्यादा ज़िन्दा रहेंगे।”

राक्षस को पिता नोआ का यह विचार कुछ ज़्यादा अच्छा नहीं लगा। उसे मालूम था कि जो कुछ पिता नोआ कहेंगे वह सच होगा सो उनकी यह बात सुन कर वह इतना दुखी हुआ कि उसने दो दिन तक खाना नहीं खाया। वह दुबला होता जा रहा था।

जैसे जैसे पानी नीचे उतरता जा रहा था और पहाड़ दिखायी देने शुरू होने लगे थे वह रोज ब रोज दुखी होता जा रहा था। आखिर पिता नोआ की आर्क अरारात पहाड़[11] पर जा कर ठहर गयी। इसके साथ ही खत्म हुआ औग का लम्बा सफर भी।

उसने पिता नोआ से कहा — "अब बहुत जल्दी ही मैं आपको छोड़ कर चला जाऊँगा। मैं दुनियाँ में चारों तरफ जा कर देखूँगा कि क्या बचा है।"

पिता नोआ बोले — "तुम कहीं नहीं जाओगे जब तक मैं तुम्हें जाने की इजाज़त नहीं देता। क्या तुम हमारा समझौता इतनी जल्दी भूल गये। अब तुम हमारे नौकर हो। मेरे पास तुम्हारे लिये बहुत काम है।"

राक्षस लोग काम करना पसन्द नहीं करते और औग तो सारे राक्षसों का पिता था। वह तो बहुत ही आलसी था। उसे केवल

---

[11] Ararat Mount - Mount Ararat, Turkish Ağrı Dağı, volcanic massif in extreme EaTurkey, overlooking the point at which the frontiers of Turkey, Iran, and Armenia converge. See its picture above.

खाना और सोना ही आता था। पर वह यह भी जानता था कि इस समय वह पिता नोआ के काबू में था।

जब उसने जमीन को फिर से प्रगट होते देखा तो वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

पिता नोआ बोले — "रोना बन्द करो। क्या तुम अपने ऑसुओं के समुद्र में धरती को फिर से डुबो देना चाहते हो?"

सो औग एक पहाड़ पर बैठ गया और अन्दर ही अन्दर रोते हुए इधर से उधर हिलने लगा। वह जानवरों को आर्क छोड़ कर बाहर निकलते हुए और फिर कड़ी मेहनत करते देखने लगा। पिता नोआ के बच्चे मकान बनाने लगे।

वह रोज पिता नोआ से शिकायत करता कि वह दिनोंदिन सिकुड़ कर आदमी के साइज़ का होता जा रहा है क्योंकि पिता नोआ के पास काफी खाना नहीं था।

एक दिन पिता नोआ ने उससे कहा — "औग तुम मेरे साथ आओ। मैं दुनियॉ घूमने जा रहा हूॅ। मुझे आज्ञा मिली है कि मैं धरती को सुन्दर बनाने के लिये फल और फूलों के पेड़ और पौधे लगाऊॅ। इसके लिये मुझे तुम्हारी सहायता चाहिये।"

कई दिनों तक वे इधर उधर घूमते रहे और औग उनके साथ बीजों के भारी भारी थैले उठाये घूमता रहा। सबसे आखीर में पिता नोआ ने अंगूर की बेल लगायी।

औग ने पूछा — "पिता नोआ। यह क्या है खाना या पीना?"

पिता नोआ बोले — "यह दोनों है। इसे खा भी सकते हैं और इसके रस से वाइन भी बना सकते हैं।"

जैसे ही उसने उसे जमीन में लगाया तो उसे आशार्वाद दिया — "तेरा पौधा ऑखों को सुखदायी हो और ऐसे फल पैदा करे जो भूखे के लिये खाना हो और प्यासे और बीमार के लिये स्वास्थ्यदायक पेय।"

औग यह सुन कर गुर्राया। वह बोला — "मैं इस आश्चर्यजनक फल को बलि चढ़ाऊँगा, पर अभी नहीं, अपना काम खत्म होने के बाद।"

पिता नोआ राजी हो गये। काम खत्म होने के बाद औग एक भेड़ एक शेर एक सूअर और एक बन्दर ले कर आया। पहले उसने भेड़ को मारा फिर शेर को मारा।

फिर बोला — "जब कोई आदमी इसका रस की पहली कुछ बूँदें पियेगा तो वह इतना ही भोला होगा जितनी कि भेड़ होती है। जब वह थोड़ी सी और पियेगा तो वह शेर जैसा ताकतवर होगा।

उसके बाद औग ने उस पौधे के चारों तरफ नाचना शुरू कर दिया और फिर सूअर और बन्दर को मारा। पिता नोआ को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ।

औग बोला — "मैं आपके वंशजों को दो और आशीर्वाद देता हूँ।"

कह कर वह जमीन पर ख़ुशी से लोटने लगा और बोला — "जब कोई आदमी इसे बहुत ज़्यादा पी लेगा वह जंगली जानवर सूअर के समान हो जायेगा। और अगर वह उसके बाद भी पीता रहा तो बेवकूफ बन्दर की तरह से बर्ताव करेगा।"

और इसी लिये आज तक बहुत ज़्यादा वाइन आदमी को बेवकूफ सा बना देती है। औग खुद बहुत सारी वाइन पिया करता था।

बहुत साल बाद जब औग पिता अब्राहम[12] का नौकर था तो पिता अब्राहम ने उसे इतना डॉटा इतना डॉटा कि वह बहुत डर गया। उसका एक दॉत गिर गया। अब्राहम ने उसके उस दॉत की अपने लिये एक कुर्सी बनवा ली।

बाद में औग बाशन[13] का राजा बन गया तो पिता नोआ से किये गये समझौते को भूल गया सो कैनान[14] लेने में इज़रायल के लोगों की सहायता करने की बजाय उनका विरोध करने लगा।

---

[12] Abraham

[13] Bashan

[14] Cannan – see its map on next page.

The land known as Canaan was situated in the territory of the southern Levant, which today encompasses Israel, the West Bank and Gaza, Jordan, and the southern portion ond Syria and Lebanon.

उसने कहा कि वह एक ही वार में सबको मार डालेगा। सो अपनी सारी ताकत लगा कर उसने एक पहाड़ उखाड़ लिया और उसे अपने सिर से भी ऊँचा उठा कर वह इज़रायल के निवासियों के कैम्प पर फेंक कर उन्हें कुचलने ही वाला था।

कि एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात हुई। वह पहाड़ बहुत सारे टिड्डों और चींटियों से भरा हुआ था जिन्होंने उस पहाड़ में बहुत छोटे छोटे छेद कर रखे थे।

सो जैसे ही औग ने उसे अपने हाथों में उठाया वह भुरभुरा कर उसके अपने ही सिर और गर्दन के चारों तरफ पर गिर पड़ा। उसने

उसे वहॉ से हटाने की कोशिश की पर उसके दॉत उस मिट्टी में अटक कर रह गये। वह गुस्से और दर्द से नाचने लगा।

इज़रायल निवासियों का नेता मोसेस[15] तब उसके पास गया। अब औग के मुकाबले में मोसेस तो बहुत ही छोटा आदमी था – केवल दस ऐल[16] ऊॅचा। वह अपने साथ एक तलवार ले गया था जो उसी के बराबर लम्बी थी।

अपनी पूरी ताकत लगा कर वह दस ऐल ऊपर उछला और अपना पूरा ज़ोर लगा कर उसने अपनी तलवार राक्षस को मारी जो केवल उसके टखने तक ही पहुॅच सकी। पर फिर भी वह कम से कम घायल तो हो ही गया था।

इस तरह से कई सालों बाद पिता नोआ से किया गया वायदा तोड़ने के लिये यह बाढ़ का राक्षस मारा गया।

[15] Moses – he is famour for his ten Commandments God gave to him.
[16] Ell – is an ancient unit to measure length. 1 Ell = 18”. So 10 Ell = 180” = 15 feet

3 अरगीट्ज़ की परी राजकुमारी[17]

समुद्र के किनारे एक बहुत बड़ा और सुन्दर शहर था जिसमें एक बूढ़ा मरने वाला हो रहा था। उस बूढ़े का नाम था "मार शौमन"[18]। वह उस देश का सबसे धनी आदमी था।

वह अपने आरामदेह कमरे में एक कीमती सजे हुए बिस्तर पर तकियों के सहारे लेटा हुआ था। उसकी ऑखों में ऑसू थे और वह खिड़की में से डूबते हुए सूरज को देख रहा था। एक आग के गोले की तरह से वह नीचे और नीचे डूबता जा रहा था जब तक वह बन्दरगाह के उस पार समुद्र के शान्त पानी में नीचे तक नहीं डूब गया।

अचानक मार शौमन उठा और बड़ी धीमी आवाज में पूछा — "मेरा बेटा बार शौमन कहॉ है?" कहने के साथ ही उसका कॉपता हुआ हाथ अपनी ओढ़ने वाली चादर के नीचे पहॅुचा जैसे कुछ ढूॅढ रहा हो।

बेटा वहीं पास में खड़ा हुआ था। उसकी ऑखें भी ऑसुओं से गीली थीं पर उसकी आवाज स्थिर थी। वह बोला — "पिता जी मैं यहॉ हॅू।"

---

[17] The Fairy Princess of Ergetz. (Tale No 3)

[18] Mar Shalmon

बूढ़ा धीरे से मगर मजबूती से बोला — "मेरे बेटे। मैं अब यह दुनियाँ छोड़ने ही वाला हूँ। जब यह सूरज क्षितिज के नीचे डूब जायेगा मेरी आत्मा मेरे इस जर्जर शरीर से निकल जायेगी।

मैं बहुत दिन जिया भी और मैंने दौलत भी बहुत इकट्ठी की जो अब तेरी होगी। बेटे इसको ठीक से खर्च करना जैसा कि मैंने तुझ सिखाया है क्योंकि मेरे बेटे हमारे ज्यू धर्म के अनुसार जीना भी एक कला है। पर एक बात के लिये मैं तेरा वायदा चाहता हूँ।"

बार शौमन रोते हुए बोला — "जी पिता जी। बोलिये।"

बूढ़ा बोला — "नहीं रो मत बेटा। मेरा दिन खत्म हो गया है। मेरा जीवन किसी बुरी तरह खर्च नहीं हुआ है। बस मैं तुझे उस दर्द से बचाना चाहता हूँ जिसे मैंने बचपन में सहा है जब एक व्यापारी की तरह से मैं अपना भाग्य बना रहा था।

यह जो समुद्र है जो सूरज को अभी निगल जायेगा इस समय शान्त है पर इससे बच कर रहना क्योंकि यह बहुत भयानक है। तुम मुझसे वायदा करो, नहीं नहीं तुम मुझसे प्रतिज्ञा करो कि तुम इसे पार कर के विदेशी धरती पर नहीं जाओगे।"

बार शोमन ने अपना हाथ अपने पिता के हाथ में दे कर टूटी हुई आवाज में कहा — "पिता जी मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपकी इच्छा का पालन करूँगा। मैं कभी समुद्र की यात्रा नहीं करूँगा बल्कि

मैं यहीं अपनी इसी भूमि पर रहूँगा। मैं आपके सामने यह प्रतिज्ञा करता हूँ।"

बूढ़ा बोला — "तुम्हारी यह प्रतिज्ञा भगवान के सामने है। इस प्रतिज्ञा की रक्षा करना और इसको हमेशा याद रखना। भगवान तुम्हारी रक्षा करें। याद रखो। सूरज डूब रहा है।"

इतना कह कर मार शौमन अपने तकियों पर गिर पड़ा और फिर उसके बाद कुछ और नहीं बोला।

जब यह दुख की खबर लोगों को सुनायी गयी तो सब लोग बहुत दुखी हुए क्योंकि मार शौमन दान बहुत देता था। शहर के लगभग सारे लोग उसके ताबूत के साथ कब्रिस्तान तक गये।

उसके बाद शहर में बार शौमन ने उसकी जगह ले ली। गरीब लोगों को उसमें भी एक ऐसे आदमी की छवि दिखायी दी जो धन और सलाह दोनों के मामले में उनका साथी था।

इस प्रकार सालों बीत गये।

एक दिन बन्दरगाह पर दूर देश से एक अजीब सा जहाज़ आ कर रुका। उसका कप्तान कोई अनजानी भाषा बोल रहा था और क्योंकि बार शौमन बहुत ज्ञानी था इसलिये उसको वहाँ बुलाया गया। एक अकेला वही था जो उस जहाज़ के कप्तान की भाषा समझ सकता था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसे पता चला कि उस जहाज़ का सामान उसके पिता मार शौमन के नाम था।

बार शौमन बोला — "मैं मार शौमन का बेटा हूँ। मेरे पिता की तो मृत्यु हो चुकी है और अब उनका सब कुछ मेरा है।"

जहाज़ का कप्तान बोला — "तब तो तुम दुनियाँ के सबसे अधिक भाग्यवान आदमी हो। मेरा यह जहाज़ तो बहुत सारे रत्नों कीमती पत्थरों और दूसरी कीमती चीज़ों से भरा हुआ है। और ओ मार शौमन के प्यारे बेटे तुमको पता होन चाहिये कि यह सामान तो उस सम्पत्ति का बहुत थोड़ा सा हिस्सा है जो इस समुद्र के पार वाली जमीन पर है।"

बार शौमन बोला — "आश्चर्य है कि मेरे पिता ने इसके बारे में मुझे कभी कुछ नहीं बताया। यह तो मुझे मालूम है कि अपनी जवानी के दिनों में वह समुद्र के पार वाले देशों मे व्यापार किया करते थे पर उन्होंने मुझे यह कभी नहीं बताया कि उनकी वहाँ कुछ धन सम्पत्ति भी है बल्कि उन्होंने तो मुझसे किसी भी समुद्री यात्रा करने के लिये मना कर दिया।"

कप्तान तो यह सुन कर परेशानी में पड़ गया। वह बोला — "मेरी तो यह बात समझ में नहीं आ रही। मैं तो केवल अपने पिता का कहा कर रहा हूँ। मेरे पिता तुम्हारे पिता के नौकर थे और कई साल तक वह तुम्हारे पिता मार शौमन के लौटने का इन्तजार करते रहे ताकि वह अपना खजाना ले जा सकें।

जब वह मरने वाले हो रहे थे तो उन्होंने मुझसे यह प्रतिज्ञा ली कि मैं उनके मालिक या उनके मालिक के बेटे को ढूँढ कर उनका यह खजाना उनको वापस कर दूँ और वही मैं कर रहा हूँ।"

उसने बार शौमन को वे दस्तावेज भी दिखाये जो बिना किसी शक के यह बताते थे कि यह सारा पैसा मार शौमन का है। कप्तान आगे बोला — "अब आप ही मेरे नये मालिक हैं। आपको मेरे साथ समुद्र पार उस देश लौटना होगा ताकि आप अपनी विरासत को प्राप्त कर सकें। अगले साल तो काफी देर हो चुकी होगी क्योंकि उस देश के नियमों के अनुसार फिर आपका उस पर कोई हक नहीं रहेगा।"

बार शौमन बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता। मैंने भगवान के सामने यह प्रतिज्ञा की है कि मैं कभी कोई समुद्री यात्रा नहीं करूँगा।"

कप्तान हँसा और बोला — "वास्तव में मैं तुमको समझा नहीं जैसे कि मेरे पिता तुम्हारे पिता को नहीं समझ पाये। मेरे पिता यह तो कहा करते थे कि तुम्हारे पिता बहुत अजीब थे और साहसी थे पर यह उन्होंने कभी नहीं कहा कि वह इतना सारे खजाने की ओर ध्यान न देने वालों में से एक थे।"

कुछ गुस्सा सा दिखाते हुए बार शौमन ने कप्तान को रोका तो पर वह खुद बहुत पशोपेश में था कि वह क्या करे। अब उसे याद

आ रहा था कि उसके पिता विदेशों के बारे में कैसी विचित्र विचित्र कहानियॉ सुनाया करते थे और वह सोचता था कि मार शौमन अपने होश में तो थे कि उन्होंने अपने इस खजाने के बारे में कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

वह इस मामले के ऊपर कप्तान के साथ कई दिनों तक विचार करता रहा। पर फिर कप्तान ने उसे यह यात्रा करने के लिये मना ही लिया।

कप्तान बोला — "तुम अपनी प्रतिज्ञा के बारे में मत डरो। तुम्हारे योग्य पिता के पास अवश्य ही कोई कारण नहीं होगा जिसकी वजह से उन्होंने तुमसे इस खजाने के बारे में नहीं कहा। ऐसे पागल पिता के सामने की गयी प्रतिज्ञा का कोई मानी नहीं होता। यह कोई बन्धन नहीं है। यही हमारे देश का कानून है।"

बार शौमन बोला — "तो ठीक है।" और यह कहने के बाद उसकी आखिरी हिचकिचाहट भी चली गयी। उसने अपनी दोस्तों पत्नी और बच्चे को प्यार भरी विदा कही और पानी के जहाज़ से अनजाने देश को चल दिया।

तीन दिनों तक सब ठीक रहा पर चौथे दिन समुद्र शान्त हो गया और मस्तूल धीरे धीरे आपस में टकराने लगे। नाविक कुछ नहीं कर पा रहे थे वे बस डैक पर लेटे हुए थे और हवा का इन्तजार कर रहे

थे। बार शौमन को सबको दावत खिलाने का मौका मिल गया सो उसने सबको दावत पर बुला लिया।

अभी दावत चल ही रही थी कि उन्होंने महसूस किया कि उनका जहाज़ हिल रहा था और चल रहा था। उस समय वहॉ कोई हवा नहीं थी पर जहाज़ बड़ी तेज़ी से चल रहा था। कप्तान खुद जहाज़ को नियन्त्रण करने के लिये गया पर उसने देखा कि वह भी कुछ नहीं कर पा रहा था।

वह बोला — "लगता है कि जहाज़ पर जादू हो गया है। न तो कोई हवा है और न ही लहरें हैं तब भी यह चलता जा रहा है जैसे कि तूफान से पहले चलता है। इस तरह से तो हम खो जायेंगे।"

नाविक डर गये और बार शौमन उनको शान्त करने में असफल रहा। नाविकों ने बार शौमन की ओर देखते हुए कहा — "ऐसा लगता है कि जहाज़ पर कोई बुरी किस्मत वाला मौजूद है। हमको उसे पानी में फेंकना पड़ेगा।"

सब राजी हो गये और वे बार शौमन को जहाज़ से नीचे फेंकने के लिये बढ़े। कि अचानक उसी पल जहाज़ पर खड़े और लोग चिल्लाये — "अरे देखो सामने जमीन है।"

जहाज़ अभी भी मशीनों से नियन्त्रण में नहीं आ पा रहा था और रेत के किनारे पर जा कर ठहर गया। पूरा जहाज़ कॉप उठा पर भगवान का धन्यवाद कि वह कहीं से टूटा नहीं। वहॉ कोई

चट्टान नहीं थी सारा का सारा रेगिस्तान फैला हुआ था। बस कहीं कहीं कोई कोई पेड़ था।

कप्तान जब अपने आश्चर्य से उभरा तो बोला — "मुझे लगता है कि जहाज़ को कोई नुकसान नहीं पहुँचा है पर अब हम फिर से इसे समुद्र में कैसे उतारेंगे यह मैं नहीं जानता। यह जगह तो मेरे लिये बिल्कुल अनजान है।"

इस जमीन को वह किसी नक्शे पर भी नहीं देख पा रहा था। सारे नाविक लोग समुद्र के किनारे पर खड़े हुए उस टापू को देखे जा रहे थे।

बार शौमन ने कहा — "चलो। क्यों न हम इस टापू को चल कर देखते हैं।"

नाविक बोले — "नहीं नहीं। देखो न यहाँ कोई जहाज़ आ कर नहीं टूटा है। यह कोई आदमियों के रहने की जगह नहीं है यह तो राक्षसों के रहने की जगह लगती है। हम तब तक खोये हुए हैं जब तक हम उस बदकिस्मत आदमी को अपने जहाज़ से नहीं उतार देते।"

बार शौमन बोला — "ठीक है। मैं यहाँ उतरूँगा और मैं उस हर आदमी को पचास चाँदी के क्राउन दूँगा जो मेरे साथ उतरेगा।"

पर कोई भी नाविक उसके साथ उतरने के लिये तैयार नहीं हुआ। यहाँ तक कि जब उसने पचास सोने के क्राउन देने के लिये

कहा तभी भी उसके साथ कोई नहीं उतरा। आखिर बार शौमन ने कहा कि वह वहाँ अकेले ही उतरेगा।

हालाँकि जहाज़ के कप्तान ने उससे वहाँ अकेले उतरने के लिये बहुत मना किया पर वह नहीं माना। वह जहाज़ में से धीरे से किनारे पर कूद पड़ा। जैसे ही वह किनारे पर कूदा कि जहाज़ बड़ी ज़ोर से हिल गया।

जहाज़ के नाविक ने तुरन्त कहा — "मैंने तुम लोगों से क्या कहा था कि वह बार शौमन था जो हमारे लिये बुरी किस्मत ले कर आया था। अब हम अपने जहाज़ को फिर से समुद्र में तैरा सकेंगे।"

पर ऐसा नहीं हुआ। जहाज़ अभी भी किनारे पर मजबूती से जमा खड़ा रहा। बार शौमन एक पेड़ की ओर चला गया और उस पर चढ़ गया। कुछ पल बाद ही वह उस पेड़ की एक डंडी हाथ में लिये हुए वहाँ आया।

उसने कप्तान से कहा — "जैसा कि तुम देख सकते हो कि यह टापू मीलों तक ऐसा ही पड़ा हुआ है। यहाँ किसी आदमी का या किसी और के रहने का कोई निशान नजर नहीं आता।"

सो वह जहाज़ पर फिर से चढ़ने के लिये तैयार हुआ पर नाविक उसे जहाज़ पर चढ़ाने के लिये तैयार नहीं हुए। उनमें से

एक जहाज़ पर तलवार ले कर खड़ा हो गया और उसे टापू पर ही रुकने के लिये कहा।

बार शौमन ने उस डंडी से उसके तलवार के वार को बचाया और फिर उस डंडी से जहाज़ को मारा जिससे जहाज़ एक बार फिर से सारा का सारा हिल गया।

नाविक बोला — "मैं न कहता था कि इस जहाज़ पर किसी ने जादू डाल दिया है।"

और जब कप्तान ने डॉट कर उनसे कहा कि वे यह न भूलें कि बार शौमन उनका मालिक था तो उन्होंने कप्तान को भी धमकी दी।

बार शौमन को उनको डरता देख कर बड़ा आनन्द आ रहा था। उसने अपनी डंडी से जहाज़ को एक बार फिर मारा तो वह एक बार फिर हिल गया।

उसने तीसरी बार डंडी फिर से उठायी और कहा — "अगर इस जहाज़ पर जादू पड़ा हुआ है तो इस डंडी से तीसरी बार मारने से कुछ न कुछ जरूर होगा।"

डंडी के हवा में उठने से आवाज हुई और उसने उससे जहाज़ के अगले हिस्से पर मारा। कुछ जरूर हुआ। जहाज़ रेत में से कूदा और इससे पहले कि बार शौमन कुछ समझ पाता कि क्या हुआ जहाज़ समुद्र में तेज़ी से चला गया।

वह चिल्लाया — "वापस आओ। वापस आओ।"

उसने देखा भी कि कप्तान जहाज़ को वापस लाने की कोशिश कर रहा था पर जहाज़ वापस नहीं आया।

बार शौमन ने देखा कि जहाज़ दूर और दूर चलता चला जा रहा था और छोटा और छोटा होता चला जा रहा था आखिर वह उसकी ऑखों के सामने सामने ओझल हो गया। अब वह उस निर्जन रेगिस्तानी टापू पर अकेला खड़ा था।

उसने अपने आप से कहा "दुनियॉ के सबसे धनवान आदमी के साथ यह क्या बुरा हो रहा था।" अगले ही पल उसे लगा कि वह तो वास्तव में खतरे में था।

तभी कहीं से उसे एक बड़ी भयानक गर्जना सुनायी दी। इससे उसने अपने चारों ओर देखा तो एक बड़ा सा शेर उसको अपनी ओर आता दिखायी दिया। बिजली की सी तेज़ी के साथ बार शौमन पास के पेड़ की ओर भागा और जल्दी से उस पेड़ के ऊपर चढ़ गया। शेर ने गुस्से में भर कर उस पेड़ के तने को कई बार हिलाया पर बार शौमन वहॉ सुरक्षित रहा।

शाम होने वाली थी। शेर वहीं पेड़ की जड़ के पास ही बैठ गया। साफ था कि वह बार शौमन के उतरने का इन्तजार कर रहा था। शेर सारी रात वहीं बैठा बैठा बार शौमन के उतरने का इन्तजार करता रहा। बीच बीच में वह गर्जता भी रहा।

बार शौमन पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर बैठा रहा। वह वहाँ सोने से भी डर रहा था कि वह कहीं सोते में नीचे न गिर जाये और शेर उसे खा जाये।

अगले दिन सुबह को एक नया खतरा आ गया। एक बड़ा सा बाज़ पेड़ के चारों ओर मँडराने लगा और उसको अपनी भयानक चोंच से डराने धमकाने लगा। उसके बाद वह बाज़ उस पेड़ की एक मोटी सी टहनी पर बैठ गया।

यह देख कर बार शौमन धीरे से अपना चाकू अपनी कमर की पेटी से निकाला और चिड़िया के पीछे से आगे बढ़ा कि तभी चिड़िया ने अपने बड़े बड़े पंख फैलाये।

उससे बचने के लिये बार शौमन पेड़ से खिसका तो उसका चाकू नीचे गिर पड़ा और उसने उसके पंख पकड़ लिये। तभी वह चिड़िया पेड़ पर से उड़ी तो बार शौमन ने उसकी पीठ को कस कर पकड़ लिया।

बाज़ ऊपर और ऊपर उड़ता चला गया जब तक कि नीचे के पेड़ उसे बिन्दु की तरह दिखायी नहीं देने लगे। चिड़िया बहुत तेज़ी से मीलों दूर तक रेगिस्तान में उड़ती चली गयी।

बार शौमन को अब चक्कर आने लगे थे। भूख और प्यास से वह बेहोश सा हुआ जा रहा था। वह डर रहा था कि शायद वह बहुत देर तक अपने आपको होश में नहीं रख पायेगा।

चिड़िया सारे दिन बिना रुके हुए उड़ती रही। उसने टापू पार किया फिर समुद्र के ऊपर उड़ी। रास्ते में बार शौमन को कोई जहाज़ कोई घर कोई आदमी दिखायी नहीं दिया।

रात होने पर बार शौमन को पेड़ों से घिरा हुए एक शहर की रोशनियाँ दिखायी दीं। जब बाज़ शहर के और पास आया तो उसने नीचे की ओर एक बहुत ज़ोर की कूद लगायी। उसका सिर बिल्कुल नीचे था। बार शौमन को लगा कि चिड़िया ने नीचे उतरने में घंटों लिये। आखिर वह एक पेड़ से टकरायी।

उसके गिरते हुए शरीर के बोझ से पेड़ की कुछ शाखें टूट गयीं पर फिर भी वह और नीचे उतरती ही चली गयी। उसने उसके कपड़े फाड़ दिये और उसे कुछ घायल भी कर दिया पर जब आखीर में वह नीचे गिरा तो कोई बहुत ज़्यादा घायल नहीं था।

X X X X X X X

बार शौमन ने देखा कि वह शहर के बाहर की ओर गिरा था। वह सावधानीपूर्वक आगे बढ़ता गया। जब उसने वहाँ की पहली इमारत देखी तो देखा कि वह एक सायनागौग[19] था। यह देख कर उसे बड़ी तसल्ली हुई। उसके दरवाजे पर ताला लगा हुआ था।

[19] Synagogue – worship place of Jews, as the church is for Christians, Temple is for Hindus.

वह थका हुआ था उसके सारे शरीर में दर्द हो रहा था और बहुत देर से भूखा प्यासा होने के कारण कमजोर था सो बार शौमन वहीं सायनागौग की सीढ़ियों पर ही गिर पड़ा और बच्चों की तरह से रोने लगा।

किसी ने उसकी बॉह को छुआ तो उसने ऊपर देखा। चॉद की रोशनी में उसने देखा कि वहॉ एक लड़का खड़ा हुआ था। वह लड़का भी बहुत ही अजीब सा था। उसके पैर दो हिस्सों में फटे हुए थे और उसका कोट, अगर उसे कोट कहा जा सकता था तो, पंखों के आकार का था।

बार शौमन उसको देख कर बोला "इवरी ओनोची[20] यानी मैं हिब्रू हूँ।"

लड़के ने कहा — "मैं भी। आओ मेरे साथ आओ।"

वह उसके आगे आगे कुछ लॅगड़ाता सा चल रहा था। जब वे सायनागौग के पीछे एक घर के पास पहुँचे वह जमीन से ऊपर की ओर कूदा और अपने पंख फैला लिये। जब उसने ऐसा किया तो वह बीस फीट ऊपर एक खिड़की पर था।

अगले ही पल एक दरवाजा खुला और बार शौमन ने देखा कि लड़के ने ऊपर की खिड़की से एक सीधी कूद नीचे दरवाजे पर लगा

---

[20] Ivri Onochi

दी थी जिसे उसने अन्दर से खोल दिया था। लड़के ने उसे एक कमरे में आने का इशारा किया।

वह अन्दर चला गया। वहाँ एक बूढ़ा रैबाई बैठा हुआ था जो उसका स्वागत करने के लिये उठा। रैबाई ने उसे बैठने का इशारा करते हुए कहा "शान्ति से रहो।"

फिर रैबाई ने ताली बजायी और बार शौमन के सामने खाने की एक मेज लग गयी। बार शौमन को तो बहुत भूख लगी थी सो उस समय वह कोई सवाल नहीं पूछ सका वह बस खाना खाने में लग गया। न रैबाई ही कुछ बोला। जब वह खाना खा चुका तो रैबाई ने फिर से ताली बजायी और मेज गायब हो गयी।

अब रैबाई बोला — "अब तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओ।"

बार शौमन ने ऐसा ही किया। आखीर में उसने कहा — "अफसोस कि मैं एक बहुत ही दुखी आदमी हूँ। यह मुझे अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने की सजा मिली है। मेहरबानी कर के मुझे घर वापस जाने का कोई रास्ता बताइये। मैं आपको बहुत सारा इनाम दूँगा और अपने पाप का प्रायश्चित करूँगा।"

रैबाई ने गम्भीरता से कहा — "कहानी तो सचमुच ही बड़े दुख की है क्योंकि तुम अपने दुर्भाग्यपूर्ण दुख की सीमा को नहीं जानते। क्या तुम जानते कि यह देश कौन सा है जिसमें तुम्हें यहाँ ला कर फेंक दिया गया है?"

बार शौमन ने डर कर कहा "नहीं तो।"

रैबाई बोला — "तब तुम जान लो कि यह देश आदमियों का नहीं है। तुम अरगीट्ज़ में आ गये हो – राक्षसों के जिन्नों के और परियों के देश में।"

बार शौमन ने आश्चर्य से पूछा — "क्या आप ज्यू नहीं हैं?"

रैबाई बोला — "सचमुच में मैं रैबाई ही हूँ। इस देश में भी सब प्रकार के धर्म हैं जैसे धरती पर होते हैं।"

बार शौमन ने फुसफुसाते हुए पूछा — "तो फिर मेरा क्या होगा।"

रैबाई बोला —"मुझे नहीं मालूम। यहाँ धरती से कोई नहीं आता और जो कोई भी आता है तो उसे मार दिया जाता है क्योंकि राक्षस उन्हें पसन्द नहीं करते।"

बार शौमन चिल्लाया — "उफ़। कितनी मुश्किल में पड़ गया हूँ मैं। मैं तो गया।"

रैबाई बोला — "रोओ नहीं। एक ज्यू होने के नाते मैं तुम्हें हिंसा से मरते नहीं देख सकता। मैं तुम्हें बचाने की अपनी पूरी कोशिश करूँगा।"

बार शौमन बोला — "मैं आपका बहुत बहुत आभारी रहूँगा।"

रैबाई कोमलता से बोला — "अभी तुम अपने धन्यवाद को इन्तजार करने दो। मेरी नसों में आदमी का खून है। मेरे परबाबा धरती से यहाँ आये थे और उनको मारा नहीं गया था।

अब क्योंकि मैं धरती के एक आदमी का बच्चा था सो मुझे रैबाई बना दिया गया। हो सकता है कि तुमको भी यहाँ कोई तुम्हारी तरफदारी करने वाला मिल जाये तो तुमको न मारा जाये और तुमको यहाँ बसा लिया जाये।"

बार शौमन बोला — "पर मुझे तो घर जाना है।"

रैबाई ने ना में अपना सिर हिलाया और उससे कहा कि वह अब सो जाये। उसने अपना हाथ बार शौमन की आँखों पर फिराया और वह गहरी नींद सो गया।

जब वह उठा तो सुबह हो चुकी थी और वही लड़का उसके काउच के पास खड़ा था। उसने फिर से बार शौमन को अपने पीछे आने का इशारा किया और उसे धरती के नीचे की एक सुरंग से हो कर सायनागौग ले गया जहाँ उसने उसे रैबाई के पास बिठा दिया।

रैबाई उसके कान में फुसफुसाया — "तुम्हारी उपस्थिति का यहाँ पता चल गया है।" यहाँ तक कि जब उसने यह कहा तो एक बहुत बड़े शोर की आवाज आयी।

यह आवाज ऐसी थी जैसे बहुत सारी जंगली आवाजें बहुत ऊँची आवाज में बात कर रही हों। एक अजीब सी भीड़ सायनागौग के सारे दरवाजों और खिड़कियों से हो कर अन्दर आ गयी थी।

हर आकार और साइज़ के राक्षस थे। कुछ के शरीर बहुत बड़े थे पर उनका सिर बहुत छोटा था। जबकि दूसरों का सिर बहुत बड़ा था और सिर बहुत छोटा था। कुछ की बहुत बड़ी बड़ी घूरती हुई ऑखें थीं। कुछ के बहुत लम्बे चौड़े मुँह थे तो बहुत सारे लॅगड़े थे।

उन सबने बार शौमन को धमकी देते हुए और शोर मचाते हुए चारों ओर से घेर लिया। रैबाई तो चबूतरे पर चढ़ गया।

वहा वहॉ से चिल्लाया — "शान्त। शान्त।" तुरन्त ही सब लोग शान्त हो गये।

वह आगे बोला — "जो धरती के प्राणी के खून का प्यासा हो वह इस पवित्र बिल्डिंग में नहीं रह सकता जहॉ का मालिक मैं हूॅ। जिस किसी को भी जो कुछ भी कहना हो उसे हमारी सुबह की पूजा के खत्म होने का इन्तजार करना चाहिये।"

सो वे बेचारे इधर उधर अजीब अजीब जगह बैठे हुए उसकी पूजा खत्म होने तक धैर्य और शान्ति से इन्तजार करते रहे। कुछ कुर्सियों के पीछे बैठ गये। कुछ खम्भों के ऊपर बड़ी मक्खियों की तरह बैठ गये। कुछ खिड़कियों के ऊपर बैठ गये। कुछ बहुत छोटे

छोटे छत की शहतीरों पर बैठ गये। जैसे ही पूजा खत्म हुई तो फिर वे भीड़ की तरह आ गये।

"हमारे अपराधी को हमें दो। वह ज़िन्दा रहने योग्य नहीं है।"

काफी मुश्किल से रैबाई ने उन लोगों को शान्त किया और कहा — "ओ अरगीट्ज़ की आत्माओ और राक्षसो। यह आदमी मेरे हाथों में आ कर गिरा है। इसकी जिम्मेदारी मेरी है। हमारे राजा अशमेदाई[21] को इसकी सूचना होनी चाहिये।

हमको किसी ऐसे आदमी को नहीं मारना चाहिये जिसके बारे में हम जानते न हों। चलो हमको राजा के पास चल कर उनसे इसके लिये न्याय की प्रार्थना करनी चाहिये।"

कुछ शोर मचाने के बाद राक्षस लोग इस बात पर राजी हो गये और सायनागौग से झुंडों में उसी अजीब ढंग से बाहर चले गये जैसे वे आये थे। सबको उसी दरवाजे या खिड़की से जाना था जिससे वह आया था।

बार शौमन को राजा अशमेदाई के महल ले जाया गया। उसके आगे और पीछे शोर मचाती हुई राक्षसों और परियों की भीड़ जा रही थी। ऐसा लगता था जैसे वे लाखों में थे। वे सब बातें कर रहे थे और उसी की तरफ इशारा कर रहे थे।

[21] King Ashmedai

वे लॅगड़ा रहे थे वे कूद रहे थे एक घर की छत से दूसरे घर की छत पर कूद रहे थे जमीन के छेदों में से अचानक निकल आते थे और ठोस दीवारों में गायब हो जाते थे।

महल की एक बहुत बड़ी बिल्डिंग थी जो सफेद संगमरमर की बनी हुई थी। उसमें महीन जाली का काम बना हुआ था। वह एक बहुत ही शानदार चौराहे पर बना हुआ था जिसके आसपास साफ पानी के कई सुन्दर सुन्दर फव्वारे लगे हुए थे।

राजा अशमेदाई अपने महल के छज्जे पर आया तो उसको देखते ही सारे राक्षस और परियॉ चुप हो कर घुटनों पर बैठ गये।

राजा अपनी बिजली जैसी कड़क आवाज में बोला — "तुम लोगों को मुझसे क्या चाहिये?"

रैबाई आगे बढ़ा और उसने हिज़ मैजेस्टी के सामने सिर झुकाया और कहा — "धरती का एक ज्यू मेरे हाथों में आ कर गिर गया है और आपकी प्रजा को उसके खून की प्यास है। उनका कहना है कि वह अपराधी है। मैजेस्टी। मैं उसके लिये न्याय की प्रार्थना ले कर आया हॅू।"

अशमेदाई ने पूछा — "वह किस किस्म का धरती का आदमी है?"

बार शौमन आगे बढ़ा।

राजा ने उसे आज्ञा दी — "तुम यहाँ कूद कर आओ ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ।"

भीड़ चिल्लायी — "कूदो। कूदो।"

बार शौमन ने तीस फीट ऊँचे छज्जे की ओर देखते हुए कहा — "मैं इतना ऊपर नहीं कूद सकता।"

रैबाई ने कहा — "कोशिश करो।"

बार शौमन ने कोशिश की तो उसने देखा कि जैसे ही उसने अपने पैर उठाये तो वह तो छज्जे पर खड़ा हुआ था।

राजा बोला — "यह तो तुमने बहुत सफाई से किया। मैं देख रहा हूँ कि तुम सीखने में बहुत होशियार हो।"

बार शौमन बोला — "मेरे गुरू लोग भी यही कहा करते थे।"

राजा बोला — "बहुत अच्छा जवाब है। तो इसका मतलब यह है कि तुम एक पढ़ने वाले हो।"

बार शौमन बोला — "मेरे देश में मेरे लोगों का कहना था कि मैं विद्वानों में एक बड़ा विद्वान था।"

राजा ने कहा — "तो क्या तुम आदमियों वाला ज्ञान यहाँ भी दे सकते हो?"

बार शौमन बोला — "हाँ हाँ।"

राजा बोला — "ठीक है। हम देखेंगे। मेरे एक बेटा है जो ऐसे ज्ञान का बहुत इच्छुक है। अगर तुम ऐसे ज्ञान को उसे दे सको तो

तुम्हारी जान बच जायेगी। न्याय के लिये तुम्हारी अर्जी स्वीकार की जाती है।"

राजा ने अपना राजदंड हिलाया और उसके दो दासों ने बार शौमन को उसकी बाँहों से पकड़ लिया। फिर उसने महसूस किया जैसे वे उसको उठा कर हवा में कहीं ले जा रहे हों। बहुत सारे दास भी उनके साथ उड़े जा रहे थे।

जब वे सबसे बड़े फव्वारे के ऊपर थे तो उन्होंने उस पर से अपनी पकड़ छोड़ दी। बार शौमन को लगा कि वह उस फव्वारे में गिर पड़ेगा पर उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब उसने अपने आपको एक मकान की छत पर खड़े पाया।

उसके पास ही रैबाई भी खड़ा हुआ था। उसने रैबाई से पूछा — "हम कहाँ हैं। मैं तो आश्चर्य में ही पड़ गया था।"

रैबाई बोला — "हम लोग महल से सौ मील दूर न्याय की अदालत में हैं।"

उनके सामने एक दरवाजा प्रगट हुआ। वे उसके अन्दर घुस गये। वह कमरा बहुत सुन्दर था। वहाँ तीन जज लाल रंग के कपड़े पहने हुए और जामुनी रंग के नकली बाल लगाये हुए एक चबूतरे पर बैठे हुए थे। उस कमरे के बरामदों में बहुत सारी अजीब ढंग की भीड़ जमा थी जैसी कि सायनागौग में थी।

बार शौमन को जजों के सामने एक चबूतरे पर बिठा दिया गया। एक बहुत छोटी सी आत्मा लगभग छह इंच लम्बी उसके दॉये हाथ वाले एक दूसरे छोटे चबूतरे पर खड़ी हुई थी।

उसने एक लपटे हुए कागज से कुछ पढ़ना शुरू किया जिसका कोई अन्त दिखायी नहीं दे रहा था। उसने बार शौमन की ज़िन्दगी का पूरा हाल पढ़ा। उसमें से कोई एक भी छोटी सी भी घटना नहीं छूटी थी।

उस आत्मा ने सबसे बाद में पढ़ा कि बार शौमन का अपराध केवल यह था कि उसने अपने मरते हुए पिता के सामने जो प्रतिज्ञा की थी उसको तोड़ा था।

रैबाई ने बार शौमन की ओर से वकालत की कि वह प्रतिज्ञा उसके लिये कोई बन्धन नहीं था क्योंकि बार शौमन के पिता ने उसे अपने खजाने के बारे में नहीं बताया था इसलिये वह अपने होशो हवास में नहीं था। इसके आगे उसने कहा कि बार शौमन एक विद्वान था और राजा यह चाहता था कि वह युवराज को शिक्षा दे।

मुख्य जज अब अपना फैसला सुनाने के लिये उठा — "बार शौमन। अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने के लिये तुमको मौत की सजा मिलनी चाहिये क्योंकि यह एक बहुत ही गम्भीर पाप है। पर क्योंकि ऐसा लगता है कि तुम्हारे पिता का दिमाग ठीक नहीं था इसलिये तुम्हें छोड़ा जाता है।"

बार शौमन ने उसे धन्यवाद दिया और उससे पूछा — “मैं अपने घर कब लौट सकता हूँ?”

जज बोला — “कभी नहीं।”

बार शौमन बड़े उदास मन से अदालत छोड़ कर चला गया। पर कम से कम वह अब सुरक्षित तो था। राक्षस अब उसे तंग तो नहीं करेंगे पर उसकी घर जाने की इच्छा बहुत तीव्र थी।

उसने रैबाई से पूछा — “मैं महल वापस कैसे जा सकता हूँ। शायद जब मैं युवराज को शिक्षा दे दूँ तब राजा मुझे अपने घर वापस जाने की इजाज़त दे दे।”

रैबाई बोला — “यह मैं नहीं बता सकता। आओ मेरे साथ उड़ो।”

“उड़ूँ?”

“हाँ देखो न तुम्हारे पंख हैं।”

बार शौमन ने देखा कि वह भी अब वैसे ही कपड़े पहने था जैसे और दूसरे राक्षसों ने पहन रखे थे। जब उसने अपने हाथ फैलाये तो उसने देखा कि वह उड़ सकता था। वह जल्दी ही महल की ओर उड़ गया। इन पंखों को देख कर उसने सोचा कि एक दिन वह अपने घर भी उड़ जायेगा।

रैबाई बोला — "सोचना भी मत क्योंकि तुम्हारे पंख इस जमीन के बाहर बेकार हैं।" ऐसा लगा जैसे रैबाई उसके विचारों को भी पढ़ सकता था।

बार शौमन ने सोचा कि उसके लिये यही अच्छा रहेगा कि वह युवराज को पढ़ाना शुरू कर दे और वह मेहनत कर के युवराज को पढ़ाने लगा। राजकुमार एक बहुत अच्छा शिष्य था। वे दोनों जल्दी ही एक दूसरे के अच्छे दोस्त बन गये।

राजा अशमेदाई बार शौमन से बहुत खुश था। वह उसका भी प्यारा बन गया।

एक दिन राजा ने उससे कहा — "मुझे कुछ समय के लिये शहर छोड़ कर जाना है क्योंकि मुझे राक्षसों की एक गद्दार जनजाति से लड़ने के लिये जाना है जो यहाँ से हजारों मील दूर है। मुझे युवराज को भी साथ ले जाना है इसलिये मैं तुम्हें इस महल का रखवाला बना कर जाता हूँ।"

यह कह कर राजा ने उसे चाभियों का एक बहुत बड़ा गुच्छा दे दिया और कहा — "इन चाभियों से तुम इस महल के सारे कमरों को खोल सकते हो सिवाय एक कमरे के। क्योंकि उस कमरे की चाभी ही नहीं है। और ध्यान रखना तुम उसे खोलने की कोशिश भी मत करना।"

कई दिनों तक बार शौमन उस बड़े महल के अलग अलग कमरों को खोल खोल कर आनन्द लेता रहा कि एक दिन वह उस कमरे के सामने आया जिसकी उसके पास चाभी नहीं थी। वह राजा की चेतावनी को और उसका हुक्म मानने के वायदे को भूल गया।

उसने अपने नौकरों से कहा कि वे उस दरवाजे को खोलें पर उन्होंने कहा कि वे उसे नहीं खोल सकते। तो उसने कहा कि वे उसे तोड़ कर खोल दें।

वे बोले — "हम नहीं जानते कि किसी दरवाजे को कैसे तोड़ा जा सकता है। हम धरती के लोग नहीं हैं। अगर हमको इस दरवाजे के अन्दर घुसने की आज्ञा होती तो हम तो उसकी दीवारों में से भी उसके अन्दर जा सकते थे।"

पर बार शौमन तो यह नहीं कर सकता था सो उसने अपने कन्धे से उस दरवाजे में से धक्का मारा जिससे वह दरवाजा खुल गया।

वहाँ तो उसने एक बहुत ही अजीब दृश्य देखा। एक बहुत सुन्दर लड़की जितनी सुन्दर शायद उसने कभी न देखी हो एक सोने की कुर्सी पर बैठी हुई थी। उसके चारों ओर परी दासियाँ खड़ी हुई थीं जो जैसे ही वह अन्दर घुसा गायब हो गयीं।

बार शौमन ने उससे आश्चर्य से पूछा — "तुम कौन हो?"

राजकुमारी ने जवाब दिया — "राजा की बेटी और तुम्हारी होने वाली पत्नी।"

बार शौमन ने कहा — "अच्छा। तुम यह सब कैसे जानती हो?"

"तुमने मेरे पिता राजा से किया गया वायदा तोड़ा है कि तुम इस कमरे में नहीं घुसोगे। पर क्योंकि तुम घुसे इसलिये तुमको मरना ही पड़ेगा जब तक... ।

बार शौमन बोला — "जल्दी कहो कि मेरी ज़िन्दगी अब कैसे बच सकती है।"

राजकुमारी बोली — "तुम्हें मेरे पिता राजा से मेरा हाथ मॉगना चाहिये। मेरा पति बनने के बाद ही तुम अपनी ज़िन्दगी बचा सकते हो।"

बार शौमन ने दुखी होते हुए कहा — "पर मेरे अपने देश में मेरी एक पत्नी है एक बच्चा है।"

राजकुमारी बोली — "पर अब तुम अपने देश नहीं जा सकते। तुमने एक बार फिर से अपना वायदा तोड़ दिया है। ऐसा लगता है कि अब वायदा तोड़ना तुम्हारे लिये बहुत आसान हो गया है।"

बार शौमन की अभी मरने की कोई इच्छा नहीं थी सो उसने कॉपते हुए राजा के वापस लौटने का इन्तजार किया। जैसे ही उसने

सुना कि राजा अशमेदाई वापस आ गया है वह उससे मिलने के लिये जल्दी जल्दी चल दिया और मैजेस्टी के पैरों में जा कर गिर गया।

वह बोला — "ओ राजा। मैंने आपकी बेटी राजकुमारी को देखा है। मैं उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।"

राजा बोला — "मैं मना नहीं कर सकता। क्योंकि यही हमारे राज्य का नियम है कि जो कोई भी राजकुमारी को पहले देख ले वही उसका पति होता है वरना उसे मर जाना होता है। पर बार शौमन ज़रा ख्याल रखना कि तुम उसे हमेशा प्यार करना और उसके वफादार रहना।"

बार शौमन बोला — "मैं कसम खाता हूँ।"

बहुत सारी रस्मों के साथ उनकी शादी हो गयी। बार शौमन ने यह कसम खायी, कह कर भी और लिख कर भी, कि वह राजकुमारी को हमेशा प्यार करेगा और कभी उसे अकेला नहीं छोड़ेगा।

शादी के बाद उसको रहने के लिये एक बहुत सुन्दर महल दे दिया गया जो कीमती रत्नों से भरा हुआ था। उसकी शादी का उत्सव छह महीनों तक मनाया गया।

सारे राक्षसों और परियों ने उन्हें बारी बारी से उन्हें अपनी अपनी गुफाओं में परियों के रहने वाले फव्वारों में खाने और नाचने

के लिये बुलाया। ऐसा उत्सव अरगीट्ज़ में पहले कभी नहीं मना था।

X X X X X X X

कुछ साल बीत गये पर बार शौमन के दिमाग से अपने घर जाने की बात गयी नहीं। एक दिन राजकुमारी ने उसे चुपचाप रोते हुए देखा।

तो उसने पूछा — "प्रिय। तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या तुम मुझे अब प्यार नहीं करते? क्या मैं अब सुन्दर नहीं हूँ?"

उसने कहा — "नहीं यह बात नहीं है।" पर उसके काफी देर बाद तक वह कुछ नहीं बोला। बहुत देर बाद उसने माना कि उसे अपना घर देखने की बहुत इच्छा थी। राजकुमारी ने कहा कि पर वह उससे कसम से बँधा हुआ था।

बार शौमन बोला — "मैं जानता हूँ और मैं उसे तोड़ूँगा भी नहीं पर मेहरबानी कर के मुझे कुछ समय के लिये अपने घर जाने की इजाज़त दे दो। मैं वापस लौट आऊँगा और फिर मैं तुम्हारा पहले से भी अधिक वफादार रहूँगा।"

राजकुमारी इन शर्तों पर राजी हो गयी कि वह पूरे एक साल तक के लिये जा सकता था पर एक बड़ा काला राक्षस उसके साथ उसके घर तक उड़ कर जायेगा।

जैसे ही बार शौमन ने अपने देश की जमीन पर पॉव रखे उसने तय किया कि वह अब अरगीट्ज़ कभी नहीं लौटेगा। उसने राक्षस से कहा — "जा कर अपनी शाही मालकिन से कह देना कि मैं अब अरगीट्ज़ कभी नहीं लौटने वाला।"

उसने अपने आपको गरीब दिखाने के लिये अपने कपड़े फाड़ लिये पर उसकी पत्नी उसे देख कर बहुत खुश हुई क्योंकि वह तो यह सोच चुकी थी कि वह मर गया है। बार शौमन ने भी उसे अपनी यात्रा के बारे में कुछ नहीं बताया।

उसने उससे केवल इतना कहा कि रास्ते में उसका जहाज़ टूट गया था पर बस किसी तरह वह एक गरीब नाविक की तरह से यहॉ तक आ पाया है। वह अपने लोगों के बीच आ कर बहुत खुश था। अपनी भाषा सुन कर और ठोस इमारतें देख कर बहुत खुश था जो अचानक से ही प्रगट और गायब नहीं होती थीं।

जैसे जैसे समय बीतता गया उसे वह परियों का देश एक सपना सा लगता गया।

पर इस बीच जब तक साल बीता राजकुमारी अपने पति का इन्तजार करती रही। उसके बाद उसने बड़े काले राक्षस को बार शौमन को वापस लाने के लिये भेजा।

बार शौमन को वह दूत एक दिन रात को उसी के बागीचे में अकेले घूमते हुए मिल गया। उसने कहा कि वह उसे वापस ले जाने

के लिये आया है। बार शौमन यह सुन कर चोंक गया। वह तो यह भूल ही गया था कि उसके वायदे का एक साल खत्म हो चुका है।

उसको लगा कि वह खो गया है पर क्योंकि राक्षस ने उसे बलपूर्वक नहीं पकड़ा था तो उसे लगा कि अभी वहाँ से उसके बच निकालने की सम्भावना है। उसने उससे कहा कि वह अपनी मालकिन से जा कर कह दे कि वह अब वापस नहीं आ रहा।

राक्षस बोला — "अगर तुम अपने आप नहीं चलोगे तो मैं तुम्हें बलपूर्वक पकड़ कर ले जाऊँगा।"

बार शौमन बोला — "नहीं तुम मुझे बलपूर्वक नहीं ले जा सकते क्योंकि मैं राजा का दामाद हूँ।"

यह सुन कर राक्षस मजबूर हो गया और अरगीट्ज़ वापस लौट गया। उसकी बात सुन कर राजा अशमेदाई बहुत गुस्सा हुआ पर राजकुमारी ने उसे तसल्ली दी कि वह अपने पति को वापस लाने का कोई दूसरा साधन ढूँढेगी। वह कोई दूसरे दूत भेजेगी। सो अगले दिन रात को उसने परियों का एक झुंड अपने बागीचे में देखा।

उन्होंने बहुत कोशिश की कि वह उनके साथ वापस लौट चले पर वह सुन ही नहीं रहा था। अब रोज रोज अलग अलग लोग उसको वहाँ से ले जाने के लिये आने लगे – बड़े बदसूरत राक्षस जो उसे धमकी देते थे, सुन्दर परियाँ जो उसे लुभाती थीं, दुख देने वाली आत्माऐं और भूत जो उसे गुस्सा दिलाते थे।

पर बार शौमन इन सबकी कोशिशों के बावजूद अपने इरादे से हिल कर नहीं दिया। मजे की बात तो यह थी कि कोई और उनको देख नहीं पाता था। अगर कोई उसे देखता भी तो उसको यही लगता कि वह किसी अदृश्य से ही बात कर रहा था। उसके दोस्तों को लगता कि वह अब अपने व्यवहार में कुछ अजीब हो गया है।

उधर राजा अशमेदाई का गुस्सा रोज ही बढ़ता जाता तो उसने सोचा कि इस बार शौमन को लेने वह खुद जायेगा। राजकुमारी ने कहा "नहीं पिता जी उनको लाने के लिये मैं जाऊँगी। मेरे पति को मुझे न कहना कठिन हो जायेगा।"

उसने बहुत सारे दास दासियाँ इकट्ठे किये और उन सबको साथ ले कर तेज़ी से उड़ चली। इतने सारे लोगों के एक साथ उड़ने से जमीन पर तूफान आ रहा था। एक बहुत बड़े काले बादल के रूप में वे सब बार शौमन के घर में उतरे।

उनके चिल्लाने की जंगली आवाजों की आवाज ऐसी लग रही थी जैसे समुद्र में कोई तूफान आ रहा हो। शहर के लोगों ने ऐसा तूफान पहले कभी नहीं देखा था। जैसे ही वह आया वैसे ही वह रुक भी गया। जितनी जल्दी लोग अपने अपने घरों में घुस गये थे वे फिर बाहर निकल आये।

बार शौमन का छोटा सा बेटा बाहर बागीचे में खेलने गया था पर तुरन्त ही वह घर में वापस भी आ गया।

वह अन्दर आ कर बोला — "पिता जी जरा बाहर आइये और देखिये। इस तूफान के साथ साथ तो बहुत सारे अजीब से दिखायी देने वाले प्राणी भी आये हैं।

बागीचे में सब तरह के रेंगने वाले जानवर मौजूद हैं – सॉप गिरगिट छिपकली मेंढक बहुत तरह के कीड़े मकोड़े। सारे पेड़ झाड़ियॉ और रास्ते उनसे ढके हुए हैं। और कुछ तो छोटी छोटी लालटैनों की तरह से रोशनी भी दे रहे हैं।"

बार शौमन बाहर निकल कर बागीचे में आया पर उसे तो छिपकली और मेंढक आदि कुछ दिखायी नहीं दिया। उसे दिखायी दिये राक्षस भूत आत्माऐं और गुलाब की एक झाड़ी में उसकी पत्नी राजकुमारी जो अपनी परी दासियों से घिरी हुई तारे की तरह चमक रही थी।

राजकुमारी ने अपनी बॉहें फैला कर उसका स्वागत किया।

उसने कहा — "प्रिय। मैं तुमसे यहॉ से अरगीट्ज़ लौटने के लिये प्रार्थना करने आयी हूॅ। मैं तुम्हें बहुत दिनों से याद कर रही थी। बहुत दिनों तक मैं तुम्हारे आने का इन्तजार भी करती रही।

मुझे अपने पिता का गुस्सा शान्त करना भी मुश्किल हो रहा था। चलो प्रिय मेरे साथ चलो। बहुत बड़ा स्वागत तुम्हारा इन्तजार कर रहा है।"

बार शौमन बोला — "नहीं मैं नहीं जाऊॅगा।"

राक्षस चिल्लाये — "मार दो इसे। इसे मार दो।" यह कहते हुए वे भयानक रूप से उसकी ओर देखते हुए आगे बढ़े पर राजकुमारी ने उन्हें रोक लिया।

"बार शौमन। दोबारा सोचो। दोबारा जवाब दो। सूरज डूब चुका है और रात होने वाली है। सुबह के सूरज निकलने तक सोच लो। मेरे साथ वापस चलो और सब कुछ ठीक हो जायेगा। और तुम मना करो तो फिर जैसा तुमने किया है उसके अनुसार भुगतने के लिये तैयार हो जाओ। सूरज निकलने से पहले ठीक से सोच लेना।"

बार शौमन बोला — "मैंने तुम्हें जवाब दे दिया है।अब तुम्हें जो करना हो कर लो।" कह कर वह अन्दर सोने चला गया।

बागीचे में रात भर दुखी चिल्लाहटें सुनायी पड़ती रहीं। सुबह को सूरज अपनी पूरी शान के साथ निकला और अपनी सुनहरी किरनें सारे शहर पर बिखेरीं। इस रोशनी के आने के साथ साथ लोगों ने और भी अजीब अजीब किस्म की आवाजें सुनीं। बाजार में उन्हें एक आश्चर्यजनक दृश्य दिखायी दिया।

पूरा बाजार इतने अजीब जानवरों से भरा हुआ था जो पहले उन्होंने कभी देखे ही नहीं थे – भूत प्रेत राक्षस परियाँ। छोटे छोटे बौने बाजार में इधर उधर भाग रहे थे। बच्चे उन्हें देख देख कर

आनन्द ले रहे थे। छोटी छोटी आत्माऐं रोशनी के खम्भों से चिपकी हुई थीं।

सरकारी इमारतों पर भी बहुत सारे जानवर बैठे हुए थे। उनकी सीढ़ियों पर जिन्न और चमकीली परियॉ बैठी हुई थीं। और उन सबके बीच में खड़ी थी राजकुमारी अपनी पूरी शान के साथ।

शहर के मेयर को नहीं पता था कि वह क्या करे। उसने अपनी सरकारी पोशाक पहनी और एक लम्बे भाषण के साथ राजकुमारी का स्वागत किया।

राजकुमारी ने जवाब में कहा — "आपके इस प्यारे से स्वागत के लिये आपका बहुत बहुत धन्यवाद। और अब आप इस शहर के मेयर और शहर के लोगों आप सब मेरी बात सुनें।

मैं परियों के देश अरगीट्ज़ की राजकुमारी हूँ जहॉ मेरे पिता अशमेदाई एक राजा की हैसियत से राज करते हैं। यहॉ तुम लोगों में से एक आदमी ऐसा है जो मेरा पति है।"

भीड़ ने आश्चर्य से पूछा — "वह कौन है?"

राजकुमारी बोली — "उसका नाम बार शौमन है। मैं उससे कसम के साथ बॅधी हुई हूँ जिसे वह तोड़ नहीं सकता।"

बार शौमन चिल्लाया — "यह गलत है। झूठ है।"

राजकुमारी बोली — "यह सच है। देखो यह हमारा बेटा है।"

यह कहते के साथ ही उसने परी के एक बहुत छोटे बच्चे को आगे कर दिया जिसकी शक्ल हूबहू बार शौमन से मिलती थी।

राजकुमारी आगे बोली — "ओ शहर के लोगों। मैं आपसे न्याय माँगती हूँ। वही न्याय जो हमारे देश अरगीट्ज़ में होता है और हमने बार शौमन को दिया था जब वह अपने पिता के सामने की गयी प्रतिज्ञा को तोड़ कर विदेश की यात्रा के लिये निकल गया था और हमारे हाथों में पड़ गया था।

हमने उसको ज़िन्दगी दे दी थी। हमने एक नयी जाँच के लिये उसकी प्रार्थना स्वीकार की थी। मेरी इच्छा है कि मुझे भी इस देश में उसी प्रार्थना को करने का मौका दिया जाना चाहिये जैसा हमने बार शौमन को दिया था। मुझे अपनी न्याय की अदालत में प्रस्तुत होने का मौका दो।"

मेयर बोला — "राजकुमारी जी। आपकी प्रार्थना बिल्कुल ठीक है। यहाँ यह नहीं कहा जायेगा कि यहाँ अजनबियों को न्याय नहीं मिलता। बार शौमन आओ मेरे पीछे आओ।"

मेयर उन्हें न्याय की अदालत मे ले कर गया।

वहाँ मजिस्ट्रेट ने उन लोगों की बातें सुनीं। इनमें रैबाई भी था। बार शौमन को भी जो कुछ कहना था वह उन्होंने सुना।

मेयर बोला — "यह मामला तो आसान है। हर रौयल हाइनैस यानी अरगीट्ज़ के परियों के देश की राजकुमारी ने सच बोला

लेकिन बार शौमन की पत्नी और बच्चा पहले से ही यहाँ हैं जिनसे वह पहले से ही बँधा है और उसे भी तोड़ा नहीं जा सकता। इसलिये बार शौमन को राजकुमारी को तलाक दे कर यहाँ अपनी पत्नी के पास वापस आ जाना चाहिये।"

राजकुमारी बोली — "अगर आपके देश का यही कानून है तो मुझे यह स्वीकार है।"

मेयर ने बार शौमन से पूछा — "बार शौमन तुम्हारा क्या कहना है।"

बार शौमन रूखेपन से बोला — "मैं सन्तुष्ट हूँ। मैं हर उस चीज़ से सन्तुष्ट हूँ जो मुझे इस राक्षस राजकुमारी से दूर रखेगी।"

बार शौमन के ये निर्दयी शब्द सुन कर राजकुमारी शर्म से लाल पड़ गयी। फिर भी वह गर्व से बोली — "मैं ऐसे शब्दों की अधिकारिणी नहीं हूँ। मैंने तुम्हें प्यार किया है और हमेशा तुम्हारी वफादार रही हूँ बार शौमन।

मैं तुम्हारे कानून को स्वीकार करती हूँ और अपने अरगीट्ज़ देश एक विधवा की तरह से लौटती हूँ। मुझे तुम्हारी दया की जरूरत नहीं है। मुझे तो बस एक चीज़ की जरूरत है जो मेरा अधिकार है – एक आखिरी चुम्बन।"

बार शौमन ने और अधिक रुखाई से कहा "ठीक है। मैं तुम्हें वह कुछ भी दूँगा जिसके बाद मैं तुमसे छुट्टी पा जाऊँ।"

राजकुमारी गर्व के साथ आगे बढ़ी और उसके होठों को चूमा। बार शौमन तो एकदम से ही एक मरे हुए की तरह से पीला पड़ गया। अगर उसके दोस्तों ने उसे न सँभाल लिया होता तो वह तो नीचे ही गिर पड़ता।

राजकुमारी चिल्ला कर बोली — "अपने पापों का फल भोगो क्योंकि तुमने अपनी कसमें तोड़ी हैं – तुम्हारे झूठे वायदे भगवान के सामने अपने पिता के सामने मेरे पिता के सामने मेरे साथ।"

जब वह यह सब कह रही थी तब तक बार शौमन मर कर नीचे गिर पड़ा। उसने तुरन्त ही अपने लोगों को इशारा किया और उसके इशारे पर सारे भूत राक्षस और परियाँ वहाँ से उसको अपने बीच में सुरक्षित कर के अपने देश भाग गये।

4 गड़बड़ महल[22]

पैट्रियार्क अब्राहम की पत्नी और सब ज्यू लोगों की माँ सैरा उन सब स्त्रियों में सबसे ज़्यादा सुन्दर स्त्री थी जो कभी धरती पर रही होंगी। जो भी उसे देखता था उसकी आश्चर्यजनक चमक को सराहता था। वे उसकी शोभा और उसके साफ रंग को देख कर खड़े के खड़े देखते रह जाते।

जब अब्राहम कैनान से मिस्र भाग कर आया तो इससे उसे बहुत परेशानी होती। सारी भीड़ उसे देखने के लिये खड़ी हो जाती जैसे वह कोई इन्सान न हो। इसके लिये उसे यह भी डर लगता कि कहीं मिस्र के लोग उसे राजा के हरम के लिये पकड़ कर न ले जायें।

बहुत सोच विचार के बाद उसने अपनी पत्नी को एक बहुत बड़े बक्से में छिपा दिया। जब वह मिस्र की सीमा पर आया तो वहाँ के अधिकारियों ने उससे पूछा कि उस बक्से में क्या था। उसने जवाब दिया "जौ।"

उन्होंने कहा — "क्या तुम यह इसलिये कह रहे हो क्योंकि जौ पर कर सबसे कम है? हमको लगता है कि इस बक्से में गेहूँ है।"

[22] The Higgledy Piggledy Palace. (Tale No 4)

अब्राहम इस बात पर अधिक परेशान था कि वे उसका बक्सा न खोलें सो वह बोला — “ठीक है। मैं गेहूँ पर कर दे दूँगा।”

कर लेने वाले अधिकारियों को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा — “जब तुम इतना अधिक कर देने के लिये तैयार हो तो इसका मतलब यह है कि तुम्हारे बक्से में इससे भी अधिक कीमती चीज़ होनी चाहिये। हो सकता है कि इसमें मसाले हों।”

यह सुन कर अब्राहम मसालों के ऊपर कर देने के लिये भी राजी हो गया। अब यह सुन कर तो अधिकारी लोग तो हँस पड़े — “अरे यह तो बड़ा अजीब आदमी है जो इतना भारी कर देने के भी लिये तैयार है। लगता है कि यह कुछ और मँहगी चीज़ छिपाने की कोशिश कर रहा है जैसे सोना।”

अब्राहम शान्ति से बोला — “तो आप सोने पर कर ले लें।”

अब तो अधिकारी लोग और परेशान हो गये। उनके सरदार ने कहा — “हमारा सबसे ऊँचा कर तो कीमती पत्थरों पर है। और क्योंकि तुम बक्सा खोलने के लिये मना कर रहे हो इसलिये हमें तुमसे सबसे ऊँची चीज़ पर कर लेना पड़ेगा।”

अब्राहम बोला — “मैं दूँगा।”

अब तो अधिकारी लोग बहुत ही ज़्यादा परेशान हो गये। आपस में सलाह कर के उन लोगों ने यह निश्चय किया कि बक्सा

खोलना ही चाहिये। उन्होंने कहा — "इस सबसे ऐसा लगता है कि इस बक्से में कोई खतरनाक चीज़ है इसको तो खोलना ही पड़ेगा।"

अब्राहम ने बक्सा खोलने के लिये फिर मना किया तो उन्होंने उसे गिरफ्तार कर लिया और बक्से को जबरदस्ती खोल लिया। जब उन्होंने उसमें सैरा को देखा तो उनके मुँह से निकला — "यह तो सचमुच में ही बहुत ही कीमती रत्न है।"

उन्होंने उसे तुरन्त ही राजा के पास भेजने का सोचा। फैरो ने जैसे ही उसे देखा वह तो उसे देखता ही रह गया।

सैरा एक किसान स्त्री की सादी सी पोशाक पहने हुए थी। उसके शरीर पर कोई गहना नहीं था कोई रत्न नहीं था फिर भी फैरो को लगा कि इतनी जादू डालने वाली सुन्दर स्त्री उसने पहले कभी नहीं देखी थी।

जब उसने अब्राहम को देखा तो अपनी भौंहें सिकोड़ कर सैरा से पूछा — "यह आदमी कौन है?"

इस डर से कि अगर उसने उसे अपना पति बता दिया तो कहीं वह बन्दी न बना लिया जाये या फिर उसे मार न दिया जाये सैरा ने कहा कि वह उसका भाई था।

यह सुन कर फैरो को बहुत शान्ति मिली। वह अब्राहम की ओर देख कर मुस्कुराया और उसे नमस्ते की। फिर उसने उससे कहा — "तुम्हारी बहिन देखने में बहुत सुन्दर है और बहुत अच्छी

शक्ल की है। उसकी अद्वितीय सुन्दरता ने मेरा मन मोह लिया है। अब यह मेरे हरम में मेरी प्यारी बन कर रहेगी। इस नुकसान के बदले में मैं तुम्हें बहुत कुछ दूँगा। मैं तुम्हें बहुत सारी भेंटें दूँगा।"

यह सुन कर अब्राहम के दिल में बहुत गुस्सा आया पर वह अपने इस गुस्से को छिपाने के लिये काफी अक्लमन्द था। वह सैरा के कान में फुसफुसाया — "हिम्मत रखो। भगवान हमें ऐसे ही नहीं छोड़ेंगे।"

उसने ऊपर से दिखाया कि उसने फैरो का कहा मान लिया है और फैरो के नौकरों के सरदार ने उसे सैरा के बदले में बहुत सारा सोना चाँदी और रत्न दिये। साथ में भेड़ बैल और ऊँट भी दिये।

अब्राहम को एक दूसरे महल में ले जाया गया जहाँ उसको बहुत सारे दास दिये गये जो हमेशा उसके सामने सिर झुकाये खड़े रहते थे। क्योंकि उनमें से एक जिसके ऊपर फैरो ने दया की थी वह तो फैरो के देश में एक बहुत बड़ा आदमी था।

जब अब्राहम अकेला रह गया तो उसने बड़ी लगन से और भक्ति से भगवान की प्रार्थना करनी शुरू कर दी।

इस बीच सैरा को भी एक बहुत ही शानदार कमरे में ले जाया गया जहाँ रानी की निजी दासियों को यह हुक्म था कि वे उसे सबसे अच्छे कपड़े पहिनायें और उसे अच्छी तरह से सजायें।

उसके बाद उसे फैरो के सामने लाया गया जहॉ से फैरो ने सब दासियों को बाहर भेज दिया। फिर फैरो ने सैरा से कहा — "मैं तुम्हारे साथ कुछ देर के लिये अकेला रहना चाहता हूँ। मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है। मैं तुम्हारी सुन्दरता को ठीक से देखना चाहता हूँ।"

पर सैरा उससे कुछ सिकुड़ सी गयी। सैरा को वह बदसूरत और कुछ आलसी सा लगा। उसकी मुस्कान भी बहुत ही बुरी थी। उसकी आवाज भी बहुत कठोर और मेंढक की आवाज जैसी थी।

फैरो ने बड़ी कोमलता से बोलने की कोशिश करते हुए कहा — "डरो मत। मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। और न मैं तुम्हारे ऊपर बहुत सारे सम्मान थोपूँगा। तुम जो कुछ भी मुझसे कहोगी मैं तुम्हें वही दूँगा।"

यह सुन कर सैरा तुरन्त ही बोली — "तब आप मुझे जाने दें। मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये सिवाय इसके कि आप मुझे मेरे भाई के साथ यहॉ से जाने दें।"

फैरो उसकी ओर बढ़ते हुए प्रेम से बोला — "तुम मजाक कर रही हो। यह नहीं हो सकता। मैं तुम्हें रानी बनाऊँगा।"

सैरा चिल्लायी — "रुक जाइये। अगर आपने एक कदम भी आगे बढ़ाया तो... ।

यह सुन कर फैरो बीच में ही हॅस पड़ा।

राजा को धमकी देना तो एक इतनी अजीब सी बात थी कि वह अपनी मोटी आवाज में हँसे बिना न रह सका। पर सैरा अचानक से चुप हो गयी। अब वह उसको सामने की ओर से नहीं देख रही थी बल्कि उसके पीछे की ओर देख रही थी।

फैरो ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसे कुछ दिखायी नहीं दिया। वह वह नहीं देख सका जो सैरा देख रही थी – डंडी लिये हुए एक शक्ल एक आत्मा।

फैरो बोला — "आओ। बेवकूफ मत बनो। मैं किसी ऐसे प्राणी से गुस्सा नहीं हो सकता जो तुम जैसा सुन्दर हो। पर जो ताज पहनता हो उसको धमकी देना कोई अक्लमन्दी की बात नहीं है।"

सैरा ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह अब डरी हुई नहीं थी। उसको मालूम था कि उसकी और अब्राहम की प्रार्थनाओं का जवाब उनको मिल गया था और अब उनके ऊपर कोई मुसीबत नहीं आयेगी।

फैरो ने सैरा की चुप्पी का गलत मतलब लगा लिया और उसकी ओर बढ़ता रहा। जैसे ही वह उसके पास पहुँचने वाला था कि उसे अपने सिर पर एक डंडे की मार महसूस हुई। इससे वह एक पल के लिये भौंचक्का रह गया।

जब उसे कुछ होश सा आया तो उसने कमरे में चारों ओर देखा पर उसे वहाँ कोई दिखायी नहीं दिया। सैरा चुपचाप खड़ी थी।

फैरो बोला — "अजीब बात है। मुझे लगा कि कमरे में कोई घुसा है।" कह कर उसने फिर से सैरा की ओर बढ़ना शुरू कर दिया तो उसे फिर एक बार डंडे की मार महसूस हुई पर इस बार अपने कन्धे पर।

इस बार वह अपनी चिल्लाहट को बड़ी मुश्किल से रोक सका। उसको लगा कि शायद उसे अचानक ही कोई बीमारी लग गयी है पर फिर पल भर बाद ही वह अच्छा महसूस करने लगा।

अपने गन्दे तरीके से गिर पड़ने की शर्म को छिपाने के लिये वह सैरा की ओर देख कर मुस्कुराया और कहा "मुझे कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण याद आ गया। वह सैरा के और पास चला गया और उसको छूने की कोशिश की।

सैरा बोली — "अगर आपने मुझे एक उँगली भी लगाने की कोशिश की तो आप बर्बाद हो जायेंगे।" उसकी ऑखों में गुस्सा चमक रहा था।

फैरो चिल्लाया "चुप।" और अपना धीरज खोते हुए फिर से अपना हाथ बढ़ाया।

इस बार उस अदृश्य आत्मा की गदा फैरो के ऊपर नहीं पड़ी बल्कि वह धीरे से आ कर उसकी आगे बढ़ी हुई बॉह पर गिर पड़ी और फैरो अपनी उस बॉह को हिला भी नहीं सका। वह तो पीला पड़ गया और कॉपने लगा।

जब उसे साँस आयी तो वह बोला — “क्या तुम जादूगरनी हो?”

सैरा उसके किये गये इस अपमान से इतनी गुस्सा हुई कि उसने आत्मा को अपनी आँखों से इशारा किया तो उसने फैरो के सिर और कन्धे पर फिर से अपनी गदा मारी जिससे फैरो बहुत ज़ोर के दर्द से चीख पड़ा।

वह फिर चीखा — “मुझे क्षमा करो। मुझे क्षमा करो। मैंने जो कुछ कहा उसका वह मतलब नहीं था। मेरी तबियत ठीक नहीं है। मेरा शरीर दर्द कर रहा है। मेरी बाँह तो हिल भी नहीं पा रही।”

गदा मारना रुक गया और फैरो अब अपनी बाँह हिला सकता था। वह दर्द से ऐंठा जा रहा था क्योंकि उसका सारा शरीर घायल था। वह यह कह कर वहाँ से तुरन्त ही भाग गया कि अब वह कल वापस आयेगा। सैरा कमरे में बन्द थी पर वह अब परेशान नहीं थी।

फैरो के साथ और भी कुछ कारनामे हुए। आत्मा बहुत खुश थी क्योंकि उसने फैरो की कीमत पर एक रात आनन्द से बितायी थी। अब जैसे ही फैरो अपने पलंग पर लेटा तो आत्मा ने उसे टेढ़ा कर दिया इससे वह फर्श पर लुढ़क गया।

जब कभी फैरो उस पलंग पर लेटने की कोशिश करता वही होता। वह एक कमरे से दूसरे कमरे में गया भी पर जब भी वह

किसी भी पलंग पर लेटा वैसा ही हुआ। उसके महल के हर पलंग ने उसे अपने ऊपर लिटाने से मना कर दिया।

यही हाल उसका महल की हर कुर्सी और सोफे के साथ भी हुआ पर जब उसने दूसरों को उन पर लिटाया और बिठाया तो वे आसानी से बैठ गये और लेट गये।

उसने अपने नौकर के साथ लेटने की कोशिश की पर नौकर तो ठीक से लेटा रहा पर वह उठ गया अपने सिर पर खड़ा हो गया अपने सिर पर घूम गया और फिर फर्श पर लुढ़क गया।

उसके शाही डाक्टर उसकी इस बीमारी की कोई दवा नहीं बता सके। उसने अपने जादूगरों को बुलवाया पर वे भी इसकी कोई सफाई नहीं दे सके।

इस तरह से फैरो ने वह रात एक कमरे से दूसरे कमरे में जा कर बरामदों में चक्कर काट कर जहाँ उसकी टक्कर भी हो जाती थी जब वह सीढ़ियों से नीचे जाना चाहता था तो वह ऊपर पहुँच जाता था या फिर जब वह ऊपर जाना चाहता तो सीढ़ियाँ उसे नीचे ले जाती थीं। इससे अधिक गड़बड़ महल पहले कभी नहीं देखा गया था।

इससे भी बुरा उसके साथ तब हुआ जब सुबह होने को हुई तो उसने देखा कि उसे तो कोढ़ हो गया है।

जल्दी ही उसने अब्राहम को बुला भेजा और उससे कहा — “तुम कौन हो या तुम क्या हो मुझे नहीं पता पर तुम और तुम्हारी बहिन दोनों मेरे लिये एक बीमारी ले कर आये हो।

मैं तो उसे रानी बनाना चाहता था पर अब मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ कि तुम यह अपना कोढ़ वापस ले लो और साथ में अपनी यह बहिन भी ले जाओ।”

अब्राहम के गले में एक जादुई रत्न पड़ा हुआ था। उससे उसने फ़ैरो का कोढ़ का रोग ठीक किया और अपनी सैरा को ले कर वहाँ से चला गया।

अन्त में वह फ़ैरो से कहता गया — “सैरा मेरी बहिन नहीं है वह मेरी पत्नी है। मैं आपको यह चेतावनी देता हूँ कि अगर आपकी कोई भी सन्तान किसी भी समय हमारी किसी भी सन्तान को मारने की कोशिश करेगी तो हमारा भगवान जो सारे ब्रह्मांड का भगवान है वह राजा को ऐसे रोग का दंड अवश्य देगा।”

जब तुमने बाइबिल पढ़ी होगी तो उसमें यह भी पढ़ा होगा कि बहुत सालों बाद यह भविष्यवाणी सत्य हुई।

5 लाल जूते[23]

रोज़ीरैड एक बहुत ही प्यारी बच्ची थी। उसकी ऑखें नीली थीं। गाल हल्के गुलाबी थे और बहुत शानदार सुनहरे बाल थे जैसे कि चित्रकार अपने चित्रों में रंगना पसन्द करते हैं।

उसकी मॉ उसी दिन मर गयी थी जिस दिन वह पैदा हुई थी। उसका पालन पोषण उसकी दादी ने बड़े प्यार से किया है। रोज़ीरैड उसी को अपनी मॉ समझती थी। वह बहुत खुश थी।

सारे दिन वह घर में और घर के चारों तरफ के जंगल में कूदती फॉदती रहती और गाती रहती। उसकी आवाज इतनी मीठी थी कि जब वह गाती तो चिड़ियें उसका गाना सुनने के लिये पेड़ों पर इकट्ठी हो जातीं। कभी जब उसका गाना रुक जाता तो चिड़ियें बोल बोल कर उसे फिर से गाने के लिये कहतीं।

रोज़ीरैड हर वह काम खुशी से करती जो उसकी दादी उसे करने के लिये कहती। हर त्यौहार पर उसे अपने प्रिय लाल जूते पहनने की इजाज़त मिलती जो उसके पिता ने उसे उसकी पहली सालगिरह पर दिये थे।

[23] The Red Slipper. (Tale No 5)

अब न तो उसका पिता जानता था और न ही वह जानती थी कि उसके वे जूते जादू के जूते थे जो उसके पैरों के साथ साथ बढ़ते जाते थे। रोज़ीरैड तो अभी बच्ची ही थी तो उसको तो यही पता नहीं था कि जूते नहीं बढ़ते पर उसकी दादी उसके जूतों का भेद जानती थी पर उसने कभी उसे बताया नहीं।

उसका पिता अपने काम में इतना अधिक व्यस्त रहता था कि उसने कभी इन बातों पर ध्यान ही नहीं दिया।

एक दिन रोज़ीरैड को अचानक कुछ याद आया तो वह जंगल से लौट कर घर आयी तो देखा कि उसकी दादी तो घर में ही नहीं है। उसकी जगह तीन अजनबी स्त्रियाँ घर में बैठी हुई थीं।

वह गाना गाती हुई आ रही थी कि अचानक वह उनको देख कर रुक गयी। उसके गुलाबी गाल पीले पड़ गये क्योंकि उसे उन अजनबियों की शक्ल कुछ अच्छी नहीं लग रही थी।

उसने पूछा — “आप लोग कौन हैं?”

उन तीनों जो सबसे बड़ी स्त्री थी उसने जवाब दिया — “मैं तुम्हारी नयी माँ हूँ। और ये दोनों मेरी बेटियाँ हैं – तुम्हारी दो नयी बहिनें।”

रोज़ीरैड तो डर के मारे काँपने लगी। वे सब तीनों बहुत ही बदसूरत थीं कि वह तो रोने ही लगी। उसकी नयी बहिनों ने इस बात पर उसे बहुत डाँटा होता और मारा होता अगर उनका पिता

वहॉ न आ गया होता। उसने रोज़ीरैड को बताया कि उसने दूसरी शादी कर ली है क्योंकि वह बहुत अकेला पड़ गया था। उसकी नयी मॉ उसकी दोनों नयी बहिनें उसके लिये बहुत ठीक रहेंगी।

पर रोज़ीरैड जानती थी कि अब सब अलग होगा। वह तुरन्त ही अपने कमरे में भाग गयी। वहॉ जा कर उसने अपने जूते छिपा कर रख दिये जिनके ऊपर उसे बड़ा गर्व था।

वह सिसकियॉ लेते हुए कहने लगी "इन्होंने मेरी दादी को घर से बाहर निकाल दिया। ये लोग मुझसे मेरे जूते भी ले लेंगे।"

इसके बाद रोज़ीरैड का गाना बन्द हो गया। अब वह एक गम्भीर लड़की हो गयी थी। चिड़ियों को कुछ समझ ही नहीं आया कि ऐसा क्यों हो गया था। वह जब जंगल जाती तो वे उसका पीछा करती पर वह तो अब ऐसे शान्त हो गयी थी जैसे वह एकदम से गूँगी हो गयी हो।

उसकी ऑखों से हमेशा ऑसू टपकने को तैयार रहते। वह अब इतनी व्यस्त रहती कि अब उसे अपने पंखों वाले दोस्तों की तरफ देखने तक का समय ही नहीं था।

उसको घर के लिये लकड़ियॉ इकट्ठी करनी होतीं कुँए से पानी भर कर लाना होता। उसको हमेश ही भारी भारी बालटियों के बोझ से लड़ना पड़ता जिनसे उसकी बॉहें और कमर दुख जाती। कभी

कभी उसकी गोरी बॉहें घायल भी हो जातीं क्योंकि उसकी निर्दयी और स्वार्थी सौतेली बहिनें उसको मारने से नहीं चूकतीं।

वे अक्सर दावतों और नाच में जातीं तो ऐसे समय में उसे उनकी दासी का काम करना पड़ता। उन्हें तैयार होने में उनकी सहायता करनी पड़ती।

रोज़ीरैड को यह सब करने में कोई ऐतराज नहीं होता बल्कि वह तो और खुश होती क्योंकि वे फिर घर के बाहर चली जातीं। तभी वह कुछ कुछ धीमा धीमा गाती। चिड़ियें भी उसे सुनने के लिये आ जातीं।

इस तरह से दुख के कई साल गुजर गये।

एक बार उसके पिता बाहर गये हुए थे उसकी सौतेली बहिनें किसी शादी की दावत में गयी हुई थीं। वे उससे कहती गयीं कि वह कुँए से पानी लाना न भूलें और उसे चेतावनी दी कि अगर वह यह काम करना भूल गयी जैसे कि उसने पिछली बार किया था तो वे बिना कुछ सोचे समझे उसे पीटेंगी।

सो रोज़ीरैड हालॉकि बहुत थकी हुई थी पर उनकी कही हुई बात सोच कर ॲधेरे में ही लेने चली गयी। उसने पानी खींचने के लिये बालटी नीचे की पर उसकी रस्सी टूट गयी और उसकी बालटी कुँए की तली में गिर गयी।

वह एक लम्बा डंडा लाने के लिये घर दौड़ी जिसमें एक कॉटा लगा था जिससे वह अपनी बालटी निकाल सकती थी। जब वह डंडा उसने कुँए में डाला तो उसने गाया —

इधर उधर हिल और सब कुछ समेट ले और उसे ऊपर सुरक्षित ले आ

अब ऐसा हुआ कि उस कुँए की तली में एक जिन्न रहता था। वह किसी जादू से ही जगाया जा सकता था। हालाँकि रोज़ीरैड को पता नहीं था पर वे शब्द जो रोज़ीरैड ने बोले थे जो उसने अपनी दादी के मुँह से सुने थे वे वही शब्द थे।

इन शब्दों को सुनते ही वह जिन्न जाग गया। रोज़ीरैड की मीठी आवाज से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने तुरन्त ही उस लड़की की सहायता करने का फैसला कर लिया जो ऊपर से खड़ी कुँए में झाँक रही थी।

उसने तुरन्त ही बालटी को डंडे के कॉटे से बाँध दिया और अपने इकट्ठे किये खजाने से कुछ कीमती रत्न ले कर उन्हें उस बालटी में रख दिये।

जब रोज़ीरैड ने वे चमकते रत्न देखे तो वह तो बहुत खुश हो गयी। उसने सोचा कि ये रत्न तो उन रत्नों से कहीं ज़्यादा अच्छे हैं जो उसकी दोनों सौतेली बहिनें पहन कर नाच में जाती हैं।

वह कुछ देर तो सोचती रही फिर एक शानदार विचार उसके दिमाग में आया “मैं इनमें से कुछ रत्न अपनी बहिनों को दे दूँगी हो सकता है कि वे मेरे ऊपर कुछ दया कर दें।

उस दिन पहली बार उसने अपनी सौतेली बहिनों के लौटने का बेचैनी से इन्तजार किया। उनके आते ही उसने उन्हें बताया। जब उन्होंने वे चमकदार रत्न देखे तो एक पल को तो उनके मुँह से कोई बात ही नहीं निकली। फिर दोनों बहिनों ने एक दूसरे को अर्थभरी दृष्टि से देखा और ऑखों ही ऑखों में पूछा “ये इसके पास आये कहाँ से।”

रोज़ीरैड ने उन्हें वे शब्द बता दिये। बहिनों ने कहा “हमें ऐसा ही लगा। ये रत्न तो हमारे हैं हमने ही इन्हें सुरक्षित रखने के लिये कुँए में रख दिये थे। अब तुमने उन्हें चुरा लिया।”

रोज़ीरैड ने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की कि उसने उन्हें नहीं चुराया है पर वे तो सुनने वाली कहाँ थीं। उन्होंने उसे बहुत बुरी तरह मारा उसकी बालटी छीनी और कहा कि वह जा कर सोये। फिर वह बालटी ले कर कुँए की तरफ चल दी।

कुँए पर पहुँच कर उन्होंने भी अपनी बालटी कुँए में डाल दी और फिर वे शब्द गाये जो रोज़ीरैड ने उनको बताये थे। कम से कम उन्हें लगा कि उन्होंने गाया। पर उनकी आवाज बहुत कठोर थी।

वे शब्द जिन्न ने सुने तो वह जाग तो गया पर उसे उन बहिनों की कठोर आवाज अच्छी नहीं लगी। वह हँसा — "हा हा। मैं तुम्हें ऐसी कठोर आवाजों से अपने सोने में दखल देने की और इस तरह के मजाक की सजा जरूर दूँगा।" उसने उनकी बालटी कई प्रकार के चिकने मेंढकों से भर दी।

दोनों बहिनों को इस बात पर इतना गुस्सा आया कि वे तुरन्त ही घर भागी गयीं और जा कर रोज़ीरैड को उसके बिस्तर से खींच लिया।

एक चिल्लायी — "ओ चुहिया ओ चोर।"

दूसरी चिल्लायी — "ओ धोखेबाज। घर से निकल जा। अब तू एक पल भी इस घर में नहीं रह सकती।"

रोज़ीरैड तो यह सुन कर दंग रह गयी वह कुछ बोल ही न सकी। यह तो बड़ी गलत बात थी कि जब उसका पिता कहीं बाहर हो तो उसे घर से बाहर निकाला जाये। पर अब वह क्या करे।

तभी उसे ध्यान आया कि जंगल में अकेली में वह ज़्यादा खुश रहेगी। उसने अपने लाल जूते उठाये और फिर बाहर निकल गयी। जैसे ही वह घर से कुछ दूर निकल गयी उसने अपने जूते पहन लिये। जूते पहन कर उसे अब चलने में कम तकलीफ हो रही थी।

सूरज ऊपर उठता जा रहा था। जब उसकी किरनें उसके ऊपर पड़ीं तो उसने गाना शुरू कर दिया। उसकी पुरानी दोस्त चिड़ियें उसके पास आ गयीं इससे उसे बहुत अच्छा लगा।

वह चलती रही चलती रही। वह जंगल में पहले से कहीं आगे निकल गयी। जब वह थक जाती तो उसे हमेशा ही कोई न कोई छायादार जगह मिल जाती जहाँ वह सुस्ता लेती। जब उसे भूख लगती तो वहाँ बहुत सारे फलों के पेड़ थे।

और जब उसे प्यास लगती तो हमेशा ही उसे पानी का कोई न कोई झरना मिल ही जाता। वे जादू के जूते उसे रास्ता दिखा रहे थे। वह सारा दिन घूमती रही। शाम हुई तो उसने देखा कि उसके जूते तो गन्दे हो गये हैं तो उसने उन्हें साफ करने के लिये उतार लिया।

फिर रात हो गयी। बारिश भी पड़ने लगी तो वह डर गयी। वह एक पेड़ के नीचे सिकुड़ कर बैठ गयी। कुछ देर में ही उसने दूर एक रोशनी चमकती देखी। वह उठी और उस रोशनी की तरफ चल दी।

जब वह रोशनी के काफी पास आ गयी तो उसने देखा कि वह रोशनी तो एक गुफा में से आ रही थी। वह उसके दरवाजे तक पहुँची तो एक बुढ़िया उससे मिलने के लिये बाहर आयी।

वह उसकी दादी थी। उसे देखे हुए रोज़ीरैड को बहुत साल हो गये थे सो वह उसे पहचान नहीं सकी। पर दादी उसे तुरन्त ही पहचान गयी। वह बोली — "आओ बेटी आओ। बारिश से बचने के लिये अन्दर आ जाओ।"

रोज़ीरैड को यह सुन कर बहुत खुशी हुई। वह गुफा के अन्दर चली गयी। गुफा अन्दर से सूखी थी और गर्म थी। रोज़ीरैड बिल्कुल थक चुकी थी बहुत जल्दी ही सो गयी। पर कुछ ही देर बाद वह अचानक चौंक कर उठ गयी थी।

वह बोली — "अरे मेरे लाल जूते। कहाँ हैं वे।"

उसने अपनी फटी हुई पोशाक की जेब में हाथ डाला तो वहाँ उसको केवल एक ही जूता मिला।

वह रोती हुई बोली — "लगता है मेरा दूसरा जूता खो गया है। मुझे उसे ढूँढना चाहिये।"

दादी बोली — "नहीं नहीं। तुम ऐसा नहीं कर सकतीं। बाहर तूफान आने वाला है।"

रोज़ीरैड ने गुफा के दरवाजे से बाहर की तरफ झाँका तो वह बाहर बिजली चमकती हुई देख कर डर गयी और अन्दर भाग गयी। वह बेचारी सुबकते हुए सोने चली गयी।

इस बार वह कुछ आवाजें सुन कर जाग गयी। वह तो यही सोच कर डर गयी कि शायद उसकी बहिनें यहाँ भी आ गयीं हैं।

उनको मेरे छिपने की जगह का पता चल गया लगता है और अब वह उसको जबरदस्ती घर ले जाने के लिये यहाँ आयी हैं। सो वह गुफा के एक कोने में दुबक गयी और वह आवाजें सुनने लगी।

एक आदमी बोल रहा था — "क्या तुम्हें मालूम है कि ये लाल जूते किसके हैं। मैंने इन्हें जंगल में पाया था।"

यह सुन कर रोज़ीरैड तुरन्त ही उठ कर उसके पास जा कर उससे अपने जूते को लेने वाली थी कि दादी ने उसे यह कह कर वहीं रोक दिया कि पहले उसे आगे सुनना चाहिये।

फिर एक आवाज थी जो बार बार यही कह रही थी — "नहीं नहीं मैं नहीं जानता।" आखिर वह आदमी वहाँ से चला गया।

दादी गुफा में अन्दर आयी और बोली — "अफसोस रोज़ीरैड। पर मैं जानती थी कि वह तुम्हारी निर्दयी बहिनों का भेजा हुआ आदमी था और मैं तुम्हें अब उनको नहीं सौंपना नही चाहती।

अगले दिन वह आदमी फिर आया पर अबकी बार उसके साथ और कई लोग थे। इस बार भी रोज़ीरैड उनसे छिप गयी।

आदमी बोला — "मैं यहाँ के सरदार का बेटा हूँ अमीर हूँ। मुझे इस जूते को पहनने वाले को ढूँढना ही है। कोई बहुत ही सुन्दर और कोमल लड़की इस जूते को पहनने वाली हो सकती है।"

जब रोज़ींरैड की दादी ने उससे कहा कि लड़का सुन्दर है और किसी कुलीन परिवार का लगता है तो उसको नहीं मालूम था कि अब उसे और ज़्यादा डरने की जरूरत है या ख़ुश होने की।

वह हर दिन आता रहा और रोज ही उसके साथ पहले दिन से ज़्यादा लोग होते। और फिर एक दिन वह एक बहुत ही सजे हुए ऊँट पर बैठ कर आया। उसके साथ एक सौ एक लोग थे और वे भी सब वैसे ही ऊँटों पर सवार थे।

आ कर वह बोला — "अब तुम मुझसे और ज़्यादा मत छिपो। जिस लड़की को मैं ढूँढ रहा हूँ वह यहीं है। मेरे नौकरों ने सारा जंगल छान मारा है। उनमें से एक यह कसम खाने को तैयार है कि कल उसने किसी लड़की को यहाँ गाते हुए सुना है।"

रोज़ींरैड को पता चल गया कि अब इस लड़के से छिपना बेकार है। उसको लड़के की आवाज बहुत पसन्द आयी। वह अपना एक जूता पहने हुए बहादुरी से गुफा के बाहर निकल आयी।

अजनबी ने काफी नीचे तक झुक कर उसे सिर झुकाया और फिर दूसरा जूता उसके आगे कर दिया। रोज़ींरैड ने उससे वह जूता ले लिया और अपने दूसरे पैर में पहन लिया। वह उसके पैर में बिल्कुल फिट आ गया। और आता भी क्यों नहीं, वह था भी तो उसी का।

लड़का बोला — "कितनी लड़कियों ने इसे पहन कर देखा पर यह उनमें से किसी के नहीं आया। फिर मैंने कसम खायी कि जिसके पैर में यह जूता आ जायेगा मैं उसी को अपनी पत्नी बनाऊँगा। मैं एक सरदार का बेटा हूँ तुम राजकुमारी बन जाओगी।"

सो रोज़ीरैड अपनी दादी के साथ गुफा से बाहर निकली और एक ऊँट पर बैठ कर जंगल में से हो कर अपने नये घर की तरफ चल दी जहाँ उसे नहीं मालूम था कि वह अपने पुराने दुख के दिन भूल भी पायेगी या नहीं।

वह हमेशा ही अपने लाल जूते पहने रही।

6 सितारे वाला बच्चा[24]

जब अब्राहम[25] पैदा हुआ था तो उसके पिता टैरा[26] ने, जो राजा निमरौड[27] का एक बड़ा सरदार था एक बहुत बड़ी दावत दी जिसमें उसने अपने बहुत सारे दोस्तों को बुलाया। उसने सबका बहुत अच्छे तरीके से स्वागत किया।

इस सबसे जो आदमी सबसे ज़्यादा खुश हुआ वह था राजा के जादूगरों का सरदार। वह एक बड़ी उम्रका आदमी था और उसे वाइन बहुत अच्छी लगती थी। वह एक बार में ही काफी वाइन पी जाता था।

उसकी यह दावत रात भर चलती रही और मेज पर से उठने से पहले सबने देखा कि अब सॉवली सुबह आने को थी। कि अचानक वह बूढ़ा जादूगर कूद कर उठ गया और खुले हुए दरवाजे की तरफ से आसमान की तरफ इशारा करते हुए बड़ी खुशी के साथ बोला —

"देखो पूर्व की ओर वह चमकीला योन तारा[28]। यह सारे आसमान में अपनी चमक फैला रहा है।"

---

[24] The Star Child. (Tale No 6)

[25] Abraham is the common Hebrew Patriarch of Abrahmic Religions including Judaism, Christianity and Islaam. Terah was the ninth in descent from Noah and his son was Abraham.

[26] Teruh – name of Abraham's father

[27] King Nimrod

[28] Yon Star

दूसरे लोगों ने उधर देखा पर उन्हें तो वहाँ कुछ दिखायी नहीं दिया।

बूढ़ा जादूगर चिल्लाया — "अरे बवकूफों तुम लोग तो नहीं देख पा रहे पर मैं राजा का सबसे अक्लमन्द जादूगर और ज्योतिषी देख सकता हूँ और यह कहता हूँ कि यह एक बहुत ही शुभ लक्षण है। देखो यह चमकीला तारा किस तरह आसमान के उस पार तक तीर की तरह से चमक रहा है।

इसने अपने से एक छोटे तारे को दबा लिया है और दूसरे को भी बल्कि तीसरे और चौथे को भी। यह शुभ लक्षण है टैरा के एक बेटा पैदा होने का।"

टैरा तुरन्त ही बोला — "यह तुम क्या बेकार की बातें कर रहे हो।"

जादूगर भी थोड़ा गुस्से में बोला — "मुझसे तो आप "बेकार की बात" के बारे में बात न ही करें तो अच्छा है। मुझे यह खबर जा कर राजा को देनी चाहिये।"

तुरन्त ही वह टैरा का घर छोड़ कर चला गया। कुछ और जादूगर भी उसके पीछे पीछे चले गये। उनमें से कुछ यह कह रहे थे कि उन्होंने भी एक चमकीले तारे को चार तारों को दबाते देखा है। उन्होंने सोचा कि अपने सरदार के खिलाफ बोलना कोई अक्लमन्दी

नहीं है। हालाँकि उसने इतनी पी रखी थी कि उससे ठीक से चला भी नहीं जा रहा था।

राजा निमरौड अपनी नींद से जाग गये थे और अब अपने जादूगरों से बात करने के लिये तैयार थे।

जादूगरों के सरदार ने उन्हें सलाम किया और बोला — "राजा अमर रहे। यह खबर इतनी गम्भीर है कि इसने हमें मजबूर कर दिया कि आपकी नींद में खलल डालें।

इस रात आपके एक सरदार टैरा के घर एक बेटा हुआ है। आज सुबह ही उसकी चेतावनी हमें आसमान के द्वारा मिली है। मैंने यानी आपके जादूगरों के सरदार ने आसमान में पूर्व में एक चमकीला तारा उगता हुआ देखा और वह आसमान के चार तारों को खाता हुआ आसमान के उस पार चला गया।"

दूसरे जादूगरों ने भी उसकी हॉ में हॉ मिलायी — "जी सरकार हमने भी देखा।"

राजा ने पूछा — "तो इसका क्या मतलब हुआ।"

सरदार जादूगर बोला — "इसका मतलब यह है सरकार कि यह बच्चा दूसरे बच्चों को मार देगा। उसके वंशज आपके वंशजों को मार देंगे। इसलिये आप उसे किसी भी कीमत पर टैरा से खरीद लीजिये और उसे मार दीजिये ताकि वह आपके लिये खतरा न बन सके।"

निर्दयी राजा ने कहा — "हमें तुम्हारी यह सलाह पसन्द आयी।"

टैरा ने इसका बहुत विरोध किया पर सब बेकार। राजा निमरोड ने जादूगरों की बात को टाला नहीं पर उसने टैरा को तीन दिन का समय दिया जिसमें उसे अपने बच्चे को राजा को दे देना था।

टैरा बहुत दुखी हो कर राजा के पास से घर लौटा और अगले दिन उसने अपनी पत्नी को यह बुरी खबर सुनायी। पत्नी ने कहा — "हमको राजा को अपने इस नन्हे से बच्चे को मारने के लिये नहीं दे देना चाहिये। अगर उसे इतना बड़ा होना है तो उसे ज़िन्दा रहना ही होगा।

मेरे दिमाग में एक विचार आया है। क्योंकि राजा निमरोड तो तब तक सन्तुष्ट होगा नहीं जब तक वह एक बच्चे को न मार ले सो तुम किसी दास के बच्चे को उसके पास ले जाओ और उससे कहो कि यह अब्राहम है।

उसे तो बच्चे का कुछ पता नहीं चलेगा इसलिये यह चाल भी उस पर खुलेगी नहीं। फिर हम इस बच्चे को कहीं और ले जा कर पाल पोस लेंगे।"

टैरा को यह विचार बहुत अच्छा लगा और उसने इसे काम में लाने का इरादा कर लिया।

एक दास का एक बीमार बच्चा जो अब्राहम से कुछ घंटे पहले ही पैदा हुआ था राजा निमरोड के पास ले जाया गया और राजा ने उसे अपने ही हाथों से मार दिया। और टैरा के छोटा से बच्चे को उसकी आया एक जंगल में एक गुफा में ले गयी। वहाँ उसकी बड़ी सावधानी से देखभाल की गयी।

समय समय पर अब्राहम के माता पिता उसे देखने के लिये गुफा में जाते रहे। जब वह दस साल का हो गया तब उनको लगा कि अब उनका बच्चा सुरक्षित है तब वे उसे गुफा से बाहर अपने घर ले आये। फिर भी उन्होंने उसके लिये बहुत सावधानी बरती।

टैरा का बड़ा बेटा हैरन[29] मूर्तियाँ बनाता था। सो उन्होंने अब्राहम को उसकी सहायता के लिये रख दिया पर उन्होंने हैरन को यह नहीं मालूम होने दिया कि अब्राहम उसका भाई है।

छोटा तारे का बच्चा अब्राहम एक बड़ा आश्चर्यजनक बच्चा था। उसका मूर्तियों में कोई विश्वास नहीं था। उसने हैरन से कहा — "मेरा मूर्तियों में कोई विश्वास नहीं है। मैं दिन में सूरज की पूजा करता हूँ और रात में चाँद सितारों की पूजा करता हूँ।"

हैरन बोला — "ऐसा कई बार होता है जब सूरज नहीं निकलता और तुम सूरज को नहीं देख सकते और न ही तुम रात को चाँद

[29] Haran – Name of Terah's elder son

और सितारों को देख सकते हो पर यह मूर्ति तो तुम्हारे पास हमेशा ही रहती है।"

छोटा अब्राहम यह सुन कर घबरा गया पर एक दिन वह भागा हुआ हैरन के पास आया और बोला — "मुझे एक बात पता चली है। अब मैं सूरज की पूजा नहीं करूँगा न चाँद की पूजा करूँगा और न ही तारों की।

इन सबके पीछे कोई महाशक्ति तो है जो इन्हें चमकने के लिये कहती है। वह महाशक्ति ही मेरा भगवान होगी।"

अब्राहम ने अपने पिता से कई प्रकार के सवाल पूछे — "पिता जी ये सूरज चाँद और तारे किसने बनाये।"

टैरा ने जवाब दिया — "मुझे नहीं मालूम बेटा।"

अब्राहम बोला — "पिता जी मैंने आपकी सब मूर्तियों से भी पूछ कर देखा लिया पर मुझे किसी से भी कोई जवाब नहीं मिला।"

टैरा बोला — "बेटा वे बोल नहीं सकतीं।"

अब्राहम ने पूछा — "तो फिर हम उन्हें पूजते क्यों हैं उनकी प्रार्थना क्यों करते हैं।"

टैरा ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। अब्राहम ने अपनी माँ से पूछा तो वह उसके जवाब में केवल इतना ही कह सकी — "बेटा जब देवताओं ने इन्हें बनाया तब वे हमारे साथ थे।"

अब्राहम ने कहा — “पर हैरन ने वे बेवकूफी की चीज़ें लकड़ी और मिट्टी से बनायीं।” पर अब्राहम के इस सवाल का भी वे कोई जवाब नहीं दे सके।”

अक्सर वह दरवाजे पर खड़ा हो कर सूरज चाँद और तारों के रहस्य का पता करने के लिये आसमान को घूरा करता।

एक दिन हैरन ने कहा — “तुझे तो हम किसी ज्योतिषी के पास भेज देते हैं। तू तो तारों का बच्चा है।”

टैरा ने यह सुन लिया तो वह हैरन से बहुत नाराज हो गया क्योंकि उसे लगा कि अब्राहम के जन्म का भेद कहीं खुल न जाये।

हैरन ने बाद में अब्राहम से कहा — “मुझे नहीं मालूम कि पिता जी ने तुझे यहाँ क्यों रखा हुआ है। तू तो बहुत ही आलसी होता जा रहा है।

मैंने अपना आज का काम खत्म कर लिया है और अब मैं शिकार करने के लिये जंगल जाऊँगा। तू यहीं ठहर। क्या पता मेरे पीछे कोई खरीदार आ जाये। ध्यान रखना और हर मूर्ति के पैसे ठीक से लेना।”

हैरन के वहाँ से जाने के कुछ देर बाद ही वहाँ एक बूढ़ा आया और उसने कहा कि वह एक मूर्ति खरीदना चाहता है। वह बोला — “कल मुझसे मेरी मूर्ति नीचे गिर गयी और टूट गयी तो मैं अब कोई ज़्यादा मजबूत सी मूर्ति खरीदना चाहता हूँ।”

अब्राहम बोला — "आप ठीक कहते है। अब आपको कोई ऐसी मूर्ति चाहिये जिसे कोई न तोड़ सके। ज़रा आप मुझे यह बताइये कि आपकी उम्र क्या है।"

"साठ साल।"

"और तभी भी आपको बुद्धि नहीं आयी। देखिये आपके देवताओं को तोड़ना कितना आसान है।" कह कर अब्राहम ने एक डंडी ली और उसे ज़ोर से एक मूर्ति पर मारा तो वह मूर्ति एक ही बार में टूट गयी। यह देख कर बूढ़ा डर कर वहाँ से भाग गया।

उसके बाद वहाँ एक स्त्री आयी और बोली — "मैं बहुत गरीब हूँ और मैं अपने लिये एक मूर्ति नहीं खरीद सकती इसलिये मैं यह कुछ खाना ले कर आयी हूँ ताकि मैं यहाँ रखे हुए देवताओं में से एक को यह अर्पण कर सकूँ।"

अब्राहम हँसा और बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। ये सब देवता यहाँ रखे हैं तुम्हें इनमें से जो पसन्द हो उस देवता को इसे अर्पण कर दो।"

स्त्री ने एक सबसे छोटी मूर्ति के सामने अपना लाया खाना रख दिया। अब्राहम बोला — "यह मूर्ति बहुत छोटी है और मुझे पूरा विश्वास है कि इसने तुम्हारा दिया हुआ खाना स्वीकर नहीं किया है।"

कह कर उसने फिर एक डंडी मूर्ति में मारी जिससे वह मूर्ति वहीं की वहीं टूट कर बिखर गयी। वह बोला — "अबकी बार तुम किसी बड़ी मूर्ति को यह खाना अर्पण कर के देखो।"

स्त्री ने वैसा ही किया। पर जब उसने भी वह खाना नहीं खाया तो वह बोला — "तुमको भी तमीज नहीं है। चलो खाओ इसे। नहीं खाओगे तो मैं तुम्हें मार मार कर तोड़ दूँगा।"

अब वह तो मूर्ति थी कैसे खाती सो अब्राहम ने उसे भी डंडा मार कर तोड़ दिया। स्त्री यह देख कर डर के मारे गली में भाग गयी।

उसके जाने के बाद अब्राहम ने हर मूर्ति के सामने वह खाना रख कर उसे खिलाने की कोशिश की पर किसी भी मूर्ति ने खाना नहीं खाया सो उसने भी वहाँ रखी सारी मूर्तियों को तोड़ दिया। बस एक सबसे बड़ी वाली मूर्ति बच रही।

यह मूर्ति आदमी जितनी बड़ी थी। इस मूर्ति के सामने जा कर वह रुका और ज़ोर से हँसते हुए वह डंडी जो उसके हाथ में थी उसे उसने उसके हाथ में रखने की कोशिश की।

अब तक बूढ़े और स्त्री द्वारा इकट्ठी की गयी भीड़ अब्राहम की दूकान के आगे इकट्ठी हो गयी थी।

उन्होंने अब्राहम से गुस्से से पूछा — "यह तुमने क्या किया?"

अब्राहम बोला — "मैंने? मैंने क्या किया? मैंने कुछ नहीं किया। देखिये इस बड़ी मूर्ति के हाथ में अभी भी यह डंडी रखी है। मुझे लग रहा है कि ये बहुत गुस्से में हैं और इन्होंने ही सबको मारा है। इनसे पूछिये कि इन्होंने ऐसा क्यों किया?"

जब तक टैरा और हैरन वापस आये तब तक सारी भीड़ यह सुन कर वहीं सन्न खड़ी रही। उन्होंने टूटी हुई मूर्तियाँ देख कर कहा — "यह सब क्या है?"

अब्राहम बोला — "यहाँ तो बड़ा मजा आया। यहाँ एक लड़ाई हो गयी। एक स्त्री देवताओं के लिये खाना ले कर आयी तो सब देवताओं में लड़ाई हो गयी क्योंकि हर देवता वह खाना खाना चाहता था।

यह देख कर बड़े देवता जी गुस्सा हो गये और उन्होंने एक डंडी ले कर सबको मारा और उनके टुकड़े टुकड़े कर दिये। वह डंडी आप अभी भी उनके हाथों में देख सकते हैं।"

हैरन चिल्लाया — "यह तुम क्या बेकार की बात कर रहे हो मूर्तियाँ यह काम नहीं कर सकतीं।"

अब्राहम बोला — "तो इस बड़ी मूर्ति से मुझे मारने के लिये कहिये अगर मैं झूठ बोल रहा होऊँ।"

उसके पिता ने कहा — "यह सब बेकार की बातें करना बन्द करो।"

अब्राहम ने उस बड़ी मूर्ति के सामने खड़े हो कर आनन्द लेते हुए कहा — "ये आपके कैसे अजीब देवता हैं। आप क्या सोचते हैं कि अगर मैं इनका मुँह तोड़ दूँ तो क्या यह मुझे मारेंगे।"

इससे पहले कोई उसे रोकता उसने उस मूर्ति का चेहरा तोड़ दिया और फिर उसके सिर में डंडी मार कर उसे तोड़ दिया।

उनमें से कुछ लोग महल भागे गये और जल्दी ही राजा निमरोड से एक आज्ञापत्र आ गया कि मूर्तियों के तोड़ने वाले को उसके सामने लाया जाये। अब्राहम टैरा और हैरन तीनों को पकड़ कर राजा के पास ले जाया गया।

राजा निमरोड ने गुस्से से पूछा — "तुम लोगों में से किसने ये मूर्तियाँ तोड़ीं।"

अब्राहम बोला — "मैंने तोड़ीं क्योंकि ये ठीक से बर्ताव नहीं कर रही थीं। यह एक स्त्री का लाया खाना स्वीकार नहीं कर रही थीं। वे देवता कैसे हो सकते हैं जिन्हें ज़रा सा भी तमीज नहीं है।"

यह सुन कर राजा निमरोड को हँसी आ गयी वह बोला — "तुम कुल मिला कर कोई बेवकूफी की बात भी नहीं कर रहे। अगर तुम्हें मूर्ति पूजा पसन्द नहीं है तो आग की पूजा करो जो सबको जला डालती है।"

"पर आग को तो पानी बुझा सकता है।"

राजा निमरोड बोला — "तो पानी की पूजा करो।"

"पर पानी को तो बादल सोख सकता है।"

राजा निमरोड ने कहा — "और बादल को हवा उड़ा कर ले जा सकती है।"

अब्राहम बोला — "आदमी हवा को रोक सकता है।"

हैरन बोला — "यह तो इस तरह सारा दिन बोल सकता है यह तो तारों का बच्चा है।"

यह सुन कर जादूगरों का सरदार बोला — "तारों का बच्चा? अब मैं समझा। ओ राजा। यह बच्चा और कोई नहीं हो सकता सिवाय टैरा के बच्चे के। इसी के लिये इसके जन्म पर हमने आपको चेतावनी दी थी।

अब तारों का सन्देश मेरी समझ में आया। इसी लिये इसने हमारे देवता तोड़ डालने की हिम्मत की। अभी तो इसने हमारे देवताओं को नष्ट किया है वह दिन दूर नहीं जब यह हमें भी नष्ट कर देगा।"

राजा निमरोड ने टैरा से पूछा — "क्या सचमुच में ही यह तारों का बच्चा है?"

टैरा ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया।

पर हैरन बोला — "यह सच है राजा साहब। मुझे तो इसका शक बहुत पहले ही हो गया था।"

राजा निमरोड गुस्से से बोला — "तो फिर तुमने मुझे बताया क्यों नहीं। मैं इस तारों के बच्चे को अपने आग देवता की शक्ति से जॉचता। क्योंकि तुमने यह बात मुझसे छिपायी इसलिये तुम्हें भी इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।

पहरेदारों ले जाओ इन्हें और इन्हें बॉध कर उस भट्टी में फेंक दो जिसकी मैं रोज पूजा करता हॅू। टैरा। तू इनका पिता है। मैं तुझे माफ कर सकता हॅू। तेरे लिये इतनी ही सजा काफी है कि तेरे दोनों बेटे मेरे देवता को अर्पण हो जायेंगे।

जब उनके जलाने के लिये आग जलायी गयी तो वह आग इतनी ज़ोर से जली कि उसको जलाने वाले खुद ही उसमें जल कर भस्म हो गये। टैरा के दोनों बेटों को आग में जलाने से पहले बारह आदमी उसमें जल कर भस्म हो चुके थे।

हैरन तो आग में डालते ही भस्म हो गया पर भीड़ जो उनके आस पास खड़ी और यह सब देख रही थी उनके आश्चर्य की सीमा न रही जब अब्राहम उस आग में बिल्कुल सुरक्षित चला गया। उसे कुछ नहीं हुआ बल्कि उसे जिस रस्सी से बॉधा गया केवल वही जली।

राजा निमरोड ने यह देखा तो वह तो कॉप गया। उसने अब्राहम से कहा — "आओ बेटा। मैं तुम्हें माफ करता हॅू।"

अब्राहम बोला — "पहले अपने आदमियों से कहो कि वे मुझे यहाँ से बाहर निकालें।"

अब जितने भी लोग उसे आग में से बाहर निकालने गये वे सभी आग में जल कर भस्म हो गये। अन्त में जब राजा निमरोड ने यह कहा कि वह अब्राहम के भगवान के सामने अपना सिर झुकायेगा तभी लड़का आग में से सुरक्षित बाहर निकल कर आया।

सब लोगों ने अब्राहम के सामने सिर झुकाया तो अब्राहम बोला "उठो। मेरी पूजा मत करो। उस सच्चे भगवान की पूजा करो जो सूरज चाँद और तारों के भी उस पार स्वर्ग में रहता और जिसकी शान हर जगह फैल रही है।"

राजा निमरोड ने लड़के को बहुत कुछ दिया और उसे फिर शान्ति से घर भेज दिया।
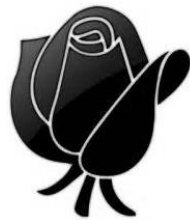
7 अबी फ़ैसा की दावत[30]

पूरे बगदाद में अबी फ़ैसा से ज़्यादा लालची और कोई आदमी नहीं था और विश्वास रखो वह कोई बहुत ज़्यादा लोकप्रिय भी नहीं था। ऐसा भी नहीं था कि वह कोई बहुत अमीर हो और गरीबों की सहायता न करता हो।

वास्तव में वह एक व्यापारी था जो मध्यवर्गीय परिवारों से थोड़ा सा ज़्यादा ही अमीर था। वह जिसको जरूरत होती थी उसको कुछ देने से अपना हाथ रोकता भी नहीं था।

पर उसकी भूख बहुत थी तो वह अपनी चालाकियों से किसी न किसी से अपने खाने के निमंत्रण का इन्तजाम करा ही लेता था। अब वह इतना चालाक हो गया था कि वह ऐसा मौका अपने दोस्तों से ही नहीं बल्कि अपने व्यापारी साथियों से भी ढूँढ लेता था।

इसमें होता यह था कि दिन का एक बहुत बड़ा हिस्सा उसका इसी मौका निकालने में निकल जाता और दूसरे कामों को लिये उसके पास बहुत कम समय बचता। जल्दी ही वह बहुत मोटा हो गया। उसका चेहरा बहुत लाल और खूब सारी वाइन पीने से फूल गया।

---

[30] Abi Fressah's Feast. (Tale No 7)

वह अब देखने में अच्छा भी नहीं लगता था जो उसके पुराने दोस्त और साथ में बैठने वाले थे उनको भी अब लगने लगा था कि समय आ गया था जब उसे पाठ पढ़ना चाहिये।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि अबी फ़ैसा दिन के दोपहर के समय खाने के लिये बाजार में खड़ा हुआ था और भीड़ को देख रहा था कि शायद कहीं उसे कोई ऐसा आदमी मिल जाये जो उसे खाना खिला दे। उसे बैन मसलिया[31] दिखायी दे गया जो बगदाद का एक बहुत ही अमीर और दयालु आदमी था।

अबी उसे देखते ही चिल्लाया — "हलो मेरे अच्छे दोस्त।" और उसे प्रेम से सलाम किया। "ऐसा लगता है कि हम लोग आपस में न जाने कबसे नहीं मिले हैं। अल्लाह तुमको ज़िन्दगी भर शान्ति से रखे।"

बैन मसलिया बोला — "और तुम्हें भी।"

"तुम कहॉ से आ रहे हो और कहॉ जा रहे हो?"

अबी फ़ैसा ने ये सवाल उससे जल्दी जल्दी पूछ लिये। उसकी भूखी ऑखें बैन मसलिया के चेहरे पर इस बात का संकेत ढूँढ रही थीं कि कब वह उसे खाने के लिये कहेगा।

"यह तो दोपहर को खाना खाने का समय है। क्या तुम घर जा रहे हो?"

---

[31] Ben Maslia – name of a person.

बैन मसलिया बोला — "हॉ मैं वहीं जा रहा हूँ।"

अबी फ़ैसा बोला — "मैं भी उसी रास्ते से जा रहा हूँ। यह तो अच्छा है साथ साथ चलेंगे तो और अच्छा रहेगा। चलो।" कह कर उसने बैन मसलिया का हाथ पकड़ा और आगे चल दिया।

बैन मसलिया बोला — "यह तुम्हारी बड़ी मेहरबानी है पर अब मैंने अपना घर एक दूसरी जगह बना लिया है – शहर के दूसरी तरफ।"

एक पल को अबी फ़ैसा गिरते गिरते बचा पर फिर भी वह इस खबर को झेलने के लिये काफी होशियार था। यह दिखाते हुए कि जैसे उसे इस बात की बड़ी ख़ुशी हुई हो वह बोला — "जब अमीर बैन मसालिया ने एक नया घर बनवाया है तो वह तो बहुत शानदार घर होगा। देखने लायक होगा।"

बैन मसलिया भी बड़े उत्साह से बोला — "हॉ यह तो है। जो तुम कह रहे हो वह सच है।" और उसने अपने नये घर का वर्णन बढ़ा चढ़ा कर करना शुरू कर दिया।

जब बैन मसलिया अपने हर कमरे का विस्तार में वर्णन कर रहा था तो अबी फ़ैसा का धीरज छूटता जा रहा था। जब उसने उससे अपने खाने के कमरे का विस्तार से वर्णन किया तब तो उसकी भूख और बढ़ गयी थी। और जब उसने बताया कि उसके तहखाने में

वाइन की एक हजार बोतलें रखी हैं तब तो उसके मुँह में पानी ही आ गया।

अबी फ़ैसा बड़बड़ाया "खुदा भला करे तुम्हारा और तुम्हारे वाइन वाले कमरे का।" फिर बोला — "मेरा कोई मतलब नहीं बैठता कि मैं अपनी इस दोपहर को किसी और से बदलूँ। इससे बढ़ कर मैं तुम्हारी शान में इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कह सकता कि मैं तुम्हारी इस शान को खुद देखूँ।"

बैन मसलिया खुशी से चमकते हुए बोला — "निश्चित रूप से तुम इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कह सकते।"

अबी फ़ैसा बोला — "तो चलो चलते हैं।"

और वे चल दिये। बैन मसलिया अभी भी अपने घर का वर्णन करता ही जा रहा था।

अबी फ़ैसा बोला — "तो तुम्हारा घर तो महल जैसा होगा।"

बैन मसलिया बोला — "तुम ठीक कह रहे हो। मैं तुम्हें अपना यह बड़ा सा घर अवश्य दिखाऊँगा।"

कह कर वह रास्ते में रुक गया और फिर सौ कदम आगे चला और अबी फ़ैसा को बताया कि इतना लम्बा तो उसका आँगन ही है। अबी फ़ैसा तो यह सुन कर चकित हो गया पर उसकी भूख बढ़ती ही जा रही थी। बड़ी मुश्किल से वह अपने धीरज को काबू कर पा रहा था।

वह बोला — "मैं तुम्हारे घर के बाहर के दरवाजे पर जरूर नजर डालूँगा।"

बैन मसलिया बोला — "तुमने बाहर का ऐसा दरवाजा पहले कभी नहीं देखा होगा। उसकी चौड़ाई तो... ।" कह कर वह फिर से अपने कदमों से उसकी चौड़ाई नाप कर बखानने लगा।

उसके बाद या तो बैन मसलिया ने उसकी तरफ ज़्यादा अच्छी तरह से देखा नहीं और या फिर जनबूझ कर बड़ी शान्ति से अबी फ़ैसा की तरफ देखता हुआ बोला — "उसकी शक्ल और डिजाइन" और यह कहते कहते उसने उसे गलियों में घुमाते घुमाते एक दरवाजे के पास रोक दिया।

वह दरवाजा तो उसी के घर जैसा लग रहा था।

वह बोला — "पर मैंने तुम्हें थका दिया।" जैसे उसने इतना सारा समय बेकार ही गॅवा दिया हो।

हालॉकि अबी फ़ैसा अन्दर ही अन्दर बहुत गुस्सा था पर वह बहुत नरमी से बोला — "नहीं नहीं बिल्कुल नहीं। तुम्हारे घर का वर्णन सुन कर तो मुझे बहुत अच्छा लगा। तुमने अभी तक मुझे अपने खाने के कमरे के आश्चर्य तो बताये ही नहीं।"

यह सुन कर बैन मसलिया ने फिर अपने खाने के कमरे और उसके फर्नीचर की कहानी शुरू कर दी।

यह कहानी सुनाते सुनाते वह अपने साथी को वहॉ से आधा मील दूर एक फर्नीचर की दूकान पर ले गया जहॉ से उसने अपना फर्नीचर खरीदा था।

उसके बाद वह उसे एक और जगह ले गया जहॉ से उसने अपने मकान के डिजाइन के नमूने लिये थे।

अब अबी फैसा का मोटा शरीर इतनी थकान का आदी नहीं था। उसे बहुत पसीना आ रहा था। उसकी टॉगें जवाब दे रही थीं। उसकी जबान सूख कर चमड़ा हो गयी थी। वह सचमुच में बहुत परेशान था।

उसकी भूख की आग तब भी कुछ कम नहीं हो पायी थी जब बैन मसलिया एक रैस्टौरैन्ट के सामने जा कर अपने दोस्त से बातें करने लगा जो उसके अन्दर घुस ही रहा था।

बात काफी देर तक चलती रही और इस सारे समय में अबी फैसा की नाक को वहॉ के खाने की खुशबू गुदगुदाती रही।

उसे उस समय बहुत गुस्सा आया जब उस दोस्त ने बैन मसलिया को अपने साथ खाने का निमंत्रण दिया और बैन मसलिया ने कुछ संकोच के बाद पक्का मना कर दिया।

जब काफी समय के बाद बैन मसलिया ने अपने दोस्त को छोड़ा तो वह अबी फैसा से बोला — "मुझे तुम्हें इतनी देर तक इन्तजार

कराने के लिये बड़ा अफसोस है पर मामला ज़रा ज्ल्दी का था। मैं इस देर को तुम्हें एक शानदार दावत खिला कर पूरा करूँगा।"

अबी फ़ैसा ने उसे उसकी इस दया के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया पर उसका दर्द तो और बढ़ गया था जब बैन मसलिया ने उसे मजबूर किया कि वह खाने की उन सारी चीज़ों का वर्णन करेगा जो वह उसे खिलाने वाला था।

अबी बार बार "हॉ हॉ" करता रहा और बैन भी उसकी बीच में टोकने की आदत को सहता रहा। अबी बोला — "ऐसा लगता है कि तुम्हारा घर शहर के बीच से दूर है।"

"हॉ। इसमें बस यही तो एक अच्छी बात है।" बैन मसलिया ने बताया कि उसने एक बड़े डाक्टर की सलाह मान कर ऐसा किया था। डाक्टर ने कहा था कि "घर वही अच्छा होता है जो अकेला खड़ा हो। लोगों की भीड़भाड़ से बिल्कुल दूर हो।"

यह भी और बहुत कुछ और भी अबी फ़ैसा को सुनना ही पड़ा। उसका सारा मोटा शरीर थकान से चूर चूर हुआ जा रहा था। उसे बहुत ज़ोर से प्यास भी लग आयी थी। उसको लगा कि वह भूख के मारे पतला हुआ जा रहा है – इतना भूखा था वह।

जब वे घर पहुँचे तो उस समय सूरज डूब रहा था। अबी फ़ैसा तो एक पल के लिये डर ही गया कि अब उसका दोस्त अब उसके

डिजाइन को विस्तार से वर्णन करेगा। पर उसे बहुत चैन मिला जब वे सीधे उसमें घुस गये।

बैन मसलिया बोला — "तुम इतनी दूर चलने से बहुत थक गये होगे सो पहले थोड़ी देर के लिये आराम कर लो।"

अबी फ़ैसा सचमुच में उसका बहुत कृतज्ञ था। उसने अपने जूते उतार दिये और एक आरामदेह काउच पर लेट गया। कुछ देर के लिये वह सो भी गया।

कुछ देर बाद तश्तरियों के खड़कने और नमकीन खाने की खुशबू से उसकी ऑख खुली। वह स्वादिष्ट खाने के आने की आशा में अपना पुराना समय भूल गया पर बैन मसलिया नहीं आया।

अब अबी फ़ैसा को गुस्सा आने लगा। उसने नौकर को बुलाने के लिये जल्दी ही पीतल की एक बड़ी तश्तरी बजानी शुरू कर दी। पर हालॉकि उसने उसे कई बार बजाया पर किसी नौकर ने भी जवाब नहीं दिया। यह देख कर अबी फ़ैसा तो करीब करीब रो ही पड़ा।

अचानक बैन मसलिया उसके सामने आया और भोलेपन से बोला — "शायद मैंने तुम्हें अच्छे से आराम करने दिया। चलो अब अपनी पूजा कर लें।"

अबी फ़ैसा इस रस्म को छोड़ देता पर वह अपने मेजबान को इस रस्म को न कर के गुस्सा नहीं करने देना चाहता था। बैन मसलिया उसे नहाने की जगह ले गया जहाँ उन्होंने पूरा एक घंटा खर्च किया। जब वे बिल्कुल ताजादम हो गये तो बैन मसलिया ने कहा चलो अब मैं तुम्हें अपने मकान की सुन्दरता दिखाता हूँ।

अबी फ़ैसा से भूख बिल्कुल सहन नहीं हो रही थी पर उसे बैन मसलिया के पीछे पीछे जाना ही पड़ा। बैन मसलिया ने उसे अपना हर कमरा दिखाया और उसकी प्रशंसा की भी और सुनी भी जो वह सारी दोपहर करता चला आ रहा था।

अबी तो केवल खाने की खुशबू पर ही ज़िन्दा था। उसकी आँख तो तब खुली जब उसने सुना "यह दावत वाला कमरा है।

अबी फ़ैसा की आँखों के सामने एक शानदार दृश्य दौड़ गया। उसने खुशी के मारे अपने हाथ मले और इन बीते हुए कुछ घंटों की परेशानी को उसे भूलने और माफ करने के लिये तैयार हो गया।

खाने का कमरा बहुत अच्छा सजा हुआ था। उसमें बहुत मँहगी और सुन्दर चीज़ें लटकी हुई थीं। उसमें बहुत सारे लैम्प थे और संगमरमर के फर्श थे।

लेकिन अबी फ़ैसा का मन इन चीज़ों को देखने में नहीं लग रहा था। उसकी निगाह तो बस मेज पर जमी हुई थी। उस पर बहुत स्वादिष्ट खाने लगे हुए थे जो उसने पहले कभी नहीं देखे थे।

कई प्रकार की मिठाई थीं। बड़ी बड़ी थालियों में फल रखे थे। वाइन की कई बोतलें थीं। कुछ ढके हुए कटोरे थे जिनमें से खुशबू उड़ रही थी। यह सब देख कर अबी फ़ैसा के मुँह में खुजली उठने लगी और उसकी ऑखें चमक गयीं। वह एक सीट पर बैठने के लिये आगे बढ़ा।

उसके मेजबान ने कहा — "पहले मैं तुम्हारा अपने यहाँ काम करने वालों से परिचय तो करवा दूँ।"

उसने ताली बजायी और उसके यहाँ जो परदे लटके हुए थे उनके पीछे से एक दर्जन लोग निकल आये। बाहर निकल कर उन्होंने अपने मालिक के आगे सिर झुकाया। बारह नौकरों की उपस्थिति में अबी फ़ैसा ने देखा कि वह खाना उस मौके के खाने लायक है। वह नौकरों से बहुत सन्तुष्ट था।

बैन मसलिया बोला — "देखो मेरे दोस्त अबी फ़ैसा। ये कोई मामूली नौकर नहीं हैं। इनमें से हर एक दुनियाँ के अलग अलग हिस्से से आया है। यह जो बड़ा आदमी खड़ा है यह इन सब का सरदार है। इसका नाम रोश[32] है और केवल यही एक बगदाद का रहने वाला है।

[32] Rosh – servant from Baghdad

इसकी कहानी भी मजेदार है। यह जन्म से ही मेरी सेवा में है। इसका पिता मेरे पिता की सेवा में था और उसका पिता मेरे बाबा की सेवा में था। इतना काफी है।

अब मैं तुम्हारी भूख और अधिक कैद में नहीं रखूँगा। यह जो दूसरा नौकर खड़ा है शेनी[33] है और वह बड़ा काला आदमी नूबिया[34] का है। तुम पहला खाना ले कर आओ।

शेनी ने मेज पर रखे खानों में से एक खाना उठाया और खुद मालिक के बराबर में जा कर रख दिया।

बैन मसलिया ने प्रशंसा भरी आवाज में पूछा — "क्या यह ठीक से खड़ा नहीं हो सकता?"

"यह तो राजाओं का वंशज है। पुराने समय में इसके पूर्वज तो राजगद्दी पर बैठते थे और अफ्रीका के रेगिस्तान के उस पार तक इनका राज्य था। मैं जब इस देश की यात्रा के लिये गया था तब में इसे वहाँ से ले कर आया था। और उसी मौके पर मैंने यह सुन्दर कालीन भी कैरो[35] की एक सुन्दर दूकान में पाया था।"

यह कह कर बैन मसलिया अपनी सीट पर से उठ गया और अपने कमरे की एक सुन्दर लटकने वाली चीज़ में अपनी उँगलियाँ फिराने लगा। अबी फैसा नहीं उठा। वह अपने गुस्से पर काबू रखे

[33] Sheni – the second servant
[34] Nubia – modern Ethiopia
[35] Cairo – modern capital of Egypt

था। जो खाना शेनी ने परोसा था वह इतना स्वादिष्ट और खुशबू वाला था कि उससे उसकी भूख बढ़ रही थी।

पर बैन मसलिया इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था। उसने अपने कमरे की एक और पेन्टिंग की पशंसा पर ध्यान देना शुरू किया। "यह मैंने दमिश्क[36] के एक बड़े प्रसिद्ध बाजार से खरीदी थी। यह सैंकड़ों साल पुरानी है।

और उसी शहर से मैंने अपना तीसरा नौकर पकड़ा – शैलिशी।[37] यह पवित्र भूमि का सच्चा बेटा है और यह मेरे ऊँट देखता है। हमारा मिलना भी एक घटना थी।

अबी फैसी को कुछ सुनायी नहीं पड़ रहा था। अब उससे सहन भी नहीं हो रहा था। उसे लग रहा थ कि वह कभी भी बेहोश हो कर नीचे फर्श पर गिर पड़ेगा। पर बैन मसलिया फिर भी अपनी बात कहे जा रहा था।

मेरे पास एक नौकर जो चीन का था और साथ में एक पुराना सा फूलदान भी। एक साँवला सा लड़का भारत से जो लाल पगड़ी बाँधता था। वहाँ से मैं एक लैम्प लाया जो मेज के बीच में रखा है और कुछ फूल भी जो मेरे कमरे को सजा रहे हैं।

वह अभी भी बोल रहा था — "तुम अन्दाजा नहीं लगा पाओगे कि इनमें से बहुत सारे फूल असली नहीं हैं। वे नकली हैं पर वे

---

[36] Used for Damascus – the Capital of Syria.

[37] Shelishi – the third servant

असली के साथ मिला कर ऐसे सजाये गये हैं कि कोई भी देखने वाला धोखा खा जाये।"

अब तो अबी फ़ैसा का कोई बोल ही नहीं निकल रहा था। दो तीन बार उसने बीच में बोलने की कोशिश की पर बोल ही नहीं सका। वह अपने आपको बहुत कमजोर महसूस कर रहा था। अपनी पूरी ज़िन्दगी में वह कभी इतना भूखा नहीं हुआ कभी इतना परेशान नहीं हुआ जितना आज हो रहा था।

बैन मसलिया को यह देखने में थोड़ी देर लगी। उसने अबी फ़ैसा से पूछा — "क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है? मुझे अफसोस है। पर खुशकिस्मती से हमारे घर में एक डाक्टर है जो तुम्हारे शरीर पर कीड़े लगा कर तुम्हारे गन्दे खून से तुम्हें छुटकारा दिला सकता है।"

किसी तरह से दुखी अबी फ़ैसा बोला — "नहीं नहीं। उसकी जरूरत नहीं है।"

बैन मसलिया ने मेज पर से एक बोतल उठाते हुए कहा — "शायद यह बढ़िया वाइन तुम्हारी मदद कर सके।"

अबी फ़ैसा किसी तरह से बोल पाया "हॉ।"

रोश ने एक प्याला बढ़ाया और बैन मसलिया ने एक गाढ़े लाल रंग का पेय उसमें डाला। उसको मेहमान के होठों से छुआता हुआ वह बोला — "लो इसे पियो।"

अबी फ़ैसा ने अपना मुँह खोलते हुए सोचा "चलो आखिर मिल ही गया।"

लेकिन यह क्या। अगले ही पल वह तो अपनी सीट पर से उछल कर खड़ा हो गया। उसका स्वाद तो बहुत ही तेज़ और कड़वा था। उसने उसके मुँह में जो स्वाद छोड़ा वह तो और भी भयानक था।

"अब मुझे पता चला कि मुझे तो धोखा दिया गया है।" कह कर अबी फ़ैसा बाहर के दरवाजे की तरफ भागा।

बैन मसलिया ज़ोर से चिल्लाया — "अरे क्या हुआ। तुम्हें क्या तकलीफ है।"

नौकर भी चिल्लाये "रुकिये रुकिये।"

यह चिल्लाना गली तक में सुना गया। लोगों ने देखा कि अँधेरे में एक मोटा आदमी हॉफता सा भागा जा रहा है और कई नौकर उसके पीछे पीछे भाग रहे हैं। एक नौकर तो बल्कि यहाँ तक कहता जा रहा था कि "ओ चोर रुक जाओ।"

शहर के पहरेदारों ने भी यह सुना तो उन्होंने तुरन्त ही अबी फ़ैसा को पकड़ लिया और उसे पकड़ कर जेल ले गये। वह बेचारा अपने आपको छोड़ने की विनती करता रहा और छूटने की बेकार कोशिश करता रहा।

पहरेदार बोले — "अगर तुम ठीक से नहीं रहोगे तो फिर हमें अपने बल का सहारा लेना पड़ेगा।" और उन्होंने उसे डंडों से पीटना शुरू कर दिया।

जेल में अबी फ़ैसा को एक कोठरी में डाल दिया गया। वहाँ जमीन पर भूसे का एक गद्दा था जहाँ उसने सारी रात जाग कर ही बितायी। उसके सारे शरीर की हड्डी हड्डी दर्द कर रही थी। उसका सारे शरीर पर पिटायी के घाव भी थे।

उसकी भूख इतनी ज़्यादा थी कि उसे लगता था जैसे उसने ज़िन्दगी में कभी खाना खाया ही नहीं था। यह तुम अच्छी तरह सोच सकते हो कि अब उसे कुछ ठीक से समझ में भी नहीं आ रहा था।

इस सबसे उसने कसम खायी कि वह अब कभी भी अपने खाने के लिये अपने दोस्तों की सहायता नहीं लेगा। अब उसे लगा कि जैसा उसने अपने आपको बना लिया था उसके लिये यह सजा काफी थी।

पर अभी भी उसका दुख खत्म होने पर नहीं था। अगले दिन जब वह जेल से छूटा तो उसे दिखाने के लिये एक डाक्टर को बुलाया गया तो उसने एक हफ्ते तक के लिये अबी फ़ैसा को खाने के लिये दलिया और पीने के लिये जौ का पानी बता दिया।

8 भिखारी राजा[38]

गर्व भरा राजा हगाग[39] अपनी राजगद्दी पर बैठता था और उसके पास खड़ा हुआ एक बड़ा पुजारी उसके लिये "पवित्र पुस्तक" में से कुछ कुछ पढ़ता था। यही उन लोगों को रोज का नियम था।

एक बार पुजारी जी ने पढ़ा "जैसे धन हमेशा नहीं रहता ताज भी क्या हर पीढ़ी में रहता है?"

राजा बोला "रुक जाओ। ये शब्द किसने लिखे?"

बड़े पुजारी जी बोले — "यह तो अपनी पवित्र पुस्तक में लिखा है सरकार।"

राजा बोला — "यह किताब मुझे दो।"

कॉपते हाथों से पुजारी जी ने वह किताब हिज़ मैजेस्टी के हाथों में दे दी। राजा हगाग ने उन शब्दों की तरफ घूरा जिन्हें अभी पुजारी जी ने पढ़ा था और गुस्सा हो गया। उसने उस पन्ने को फाड़ दिया और जमीन पर फेंक दिया।

वह बोला — "मैं राजा हगाग हूँ और ऐसे सब पन्ने जो इस किताब में मेरा अपमान करते हों फाड़ दिये जायें।"

---

[38] The Beggar King. (Tale No 8)

[39] King Hagag

कह कर उसने वह किताब फेंक दी। यह देख कर वहाँ खड़े बड़े पुजारी जी और सब दरबारी तो हक्का बक्का रह गये।

राजा फिर बोला — "बस आज मैंने काफी सुन लिया। मुझे अपने शिकार पर जाने के लिये देर हो रही है। पहले ही मुझे काफी देर हो चुकी हे। हमारे घोड़े तैयार किये जायें।"

वह अपनी गद्दी से नीचे उतरा और काँपते हुए पुजारी जी को काँपता हुआ छोड़ कर शिकार के लिये चला गया। जल्दी ही वह अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ एक मैदान में निकल आया। वहाँ उसे एक जंगली हिरन दिखायी दे गया।

एक बिगुल बजाया गया कि हिरन अपने छिपे हुए स्थान से बाहर निकाल दिया गया है। बिगुल सुनते ही राजा उसके पीछे सबसे पहले भाग लिया। देश भर में हिज़ मैजेस्टी का घोड़ा सबसे अधिक तेज़ था सो बहुत जल्दी वह राजा को बहुत आगे ले गया और राजा के साथी सब पीछे छूट गये।

पर यह हिरन भी बहुत तेज़ भागता था सो राजा इसे जल्दी ही नहीं पकड़ सका। बीच में एक नदी पड़ी तो हिरन तो उसे तेज़ी से पार कर गया पर राजा का घोड़ा वहीं रुक गया।

पर नदी पार करते ही हिरन के सींग एक पेड़ की शाख में अटक गये यह देख कर राजा बहुत खुश हुआ। अब मैं तुझे पकड़ लूँगा कह कर उसने अपने कपड़े उतारे और नदी में कूद गया।

उसके पास बस एक तलवार थी। पर जैसे ही वह दूसरे किनारे पर पहुँचा तब तक हिरन ने अपने सींग शाख में से निकाल लिये थे और वहाँ से भाग गया था।

राजा ने हाथ में तलवार लिये लिये ही उसका पीछा किया पर फिर उसे कोई हिरन दिखायी नहीं दिया। बजाय किसी हिरन के उसने झाड़ी के उस पार हिरन की खाल पहने एक नौजवान लेटा देखा।

राजा बहुत हाँफ रहा था जैसे मानो कहीं दूर से भागा चला आ रहा हो। राजा अभी भी आश्चर्य में खड़ा था और नौजवान खड़ा हो गया था।

वह बोला — "मैं ही वह हिरन हूँ जिसके पीछे तुम भागते चले आ रहे हो। मैं एक जिनी हूँ। ओ घमंडी राजा मैं ही तुम्हें उन शब्दों की सीख देने के लिये जो आज सुबह तुमने पुजारी जी से कहे थे तुम्हें बहला कर यहाँ इस जगह ले कर आया हूँ।"

इससे पहले कि राजा हगाग अपने आश्चर्य से उभरता वह नौजवान नदी में कूद पड़ा और नदी पार कर उसके दूसरे किनारे पर पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर उसने राजा के कपड़े पहने और राजा के घोड़े पर सवार हुआ। तभी राजा के नौकर आ गये। उन्हें लगा कि वह राजा है सो वे उसके सामने खड़े हो गये।

जिनी बोला — "चलो चलते हैं। हिरन भाग गया है।"

राजा हगाग अभी भी नदी की दूसरी तरफ झाड़ी के पीछे खड़ा हुआ था। वह वहॉ खड़ा खड़ा यह सब देखता रहा। फिर वह नीचे गिर पड़ा और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

वह वहॉ तब तक पड़ा रहा जब तक कि वहॉ एक लकड़हारा नहीं आ गया। उसने पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

राजा बोला — "मैं राजा हगाग हूँ।"

लकड़हारा बोला — "तुम बेवकूफ हो। तुम तो एक आलसी आदमी हो जिससे बात भी करना बेकार है। तुम मेरा यह लकड़ी का गट्ठर उठाओ तो मैं तुहें खाना और कपड़ा दे दूँगा।"

राजा ने उसकी इस बात का बहुत विरोध किया पर सब बेकार। बल्कि लकड़हारा उसकी इस बात और भी अधिक हॅसता रहा। अन्त में उसका धीरज छूट गया और उसने राजा को बहुत पीटा और भगा दिया।

अब राजा हगाग थका हुआ था भूखा था और बस नाम के कपड़े पहने हुए था जो लकड़हारे ने उसे पहनने के लिये दिये थे। किसी तरह से वह रात को महल पहुॅचा।

जब वह महल में घुस रहा था तो पहरेदारों ने एक ऐसे आदमी को अन्दर जाते देख कर रोक लिया और उससे पूचा कि वह कौन था और कहॉ जा रहा था। तब राजा हगाग ने कहा कि वह राजा हगाग था और अपने महल जा रहा था।

पर पहरेदारों ने उसका हुलिया देख कर उसे वहाँ से भगा दिया। अब हिज़ मैजेस्टी के पास और कोई चारा नहीं रह गया था सिवाय अपनी रात सड़क पर गुजारने के।

अगले दिन एक गरीब स्त्री को हिज़ मैजेस्टी पर दया आ गयी तो उसने उसको पीने के लिये कुछ दूध और खाने के लिये कुछ रोटी दी। खा पी कर वह सड़क के एक कोने पर खड़ा हुआ था। नहीं जानता था कि वह क्या करे।

छोटे बच्चे उसे चिढ़ा रहे थे। कुछ उसे भिखारी समझ रहे थे तो वे उसे पैसे दे रहे थे। उसी दिन बाद में उसने जिनी को अपने घोड़े पर सवार हो कर सड़कों पर से जाते देखा। बहुत सारे लोग उसके पीछे पीछे चिल्लाते चले जा रहे थे "हमारा राजा अमर रहे।"

हगाग बोला — "उफ़। यह सब मेरे उस पाप की सजा है जो मैंने "पवित्र पुस्तक" के शब्दों का अपमान कर के किया है।"

उसकी समझ में आ गया कि अब महल जाना बेकार था सो वह खेतों में चला गया और वहाँ एक मजदूर की हैसियत से काम कर के अपनी रोटी कमाने लगा।

पर वह तो राजा था। उसको तो काम करने की आदत नहीं थी और न उसे कोई काम आता था पर अगर उस गरीब किसान की कृपा नहीं होती तो वह तो भूखा ही मर जाता। वह बेचारा एक जगह से दूसरी जगह मारा मारा फिरता रहा।

आखिर वह एक अन्धे भिखारियों के झुंड के साथ हो लिया। उन लोगों को रास्ता दिखाने वाला खो गया था सो उनको एक रास्ता दिखाने वाला चाहिये था। राजा खुशी से उनका रास्ता दिखाने वाला बन गया।

महीनों गुजर गये। एक दिन शाही ढिंढोरा पीटने वालों ने बताया कि राजा हगाग देश के सब भिखारियों को उस दिन से सात दिन तक खाना खिलायेगा।

सो राजा की इस दावत में हिस्सा लेने के लिये दूर से पास से सब जगह से सैंकड़ों भिखारी वहाँ खाना खाने आये। हगाग भी अपने अन्धे साथियों के साथ उनके बीच महल के आँगन में खड़ा हुआ था और राजा हगाग के वहाँ आने का इन्तजार कर रहा था।

वह तो उसका अपना महल था। वह उसका चप्पा चप्पा जानता था सो वह उसे देख देख कर ही रो रहा था। आज वह अपने ही महल में एक भिखारी की तरह से खाना खाने के लिये खड़ा हुआ था।

एक आदमी चिल्लाया — "हिज़ मैजेस्टी आप सब लोगों से अलग अलग मिलेंगे जो आज उनके मेहमान हैं।"

सारे भिखारी एक एक कर के राजा के सिंहासन के सामने से जाने लगे। जब हगाग की बारी आयी तो वह तो इतनी ज़ोर से काँप गया कि पहरेदारों को उसे सहारा देना पड़ा।

राजगद्दी पर बैठे जिनी और राजा हगाग दोनों एक दूसरे को बहुत देर तक घूरते रहे।

जिनी ने पूछा — "क्या तुम भी भिखारी हो?"

हगाग ने सिर झुकाते हुए कहा — "नहीं हिज़ मैजेस्टी। मैंने बहुत बड़ा पाप किया है और उसके लिये मुझे सजा मिल चुकी है। अब मैं अन्धे भिखारियों के एक झुंड को रास्ता दिखाने वाला हूँ।"

जिनी ने अपने दरबारियों को इशारा किया कि वे उसे हगाग के साथ अकेला छोड़ दें। तब उसने हगाग से कहा — "हगाग मैं तुम्हें जानता हूँ। तुमने अपना पश्चाताप पूरा कर लिया है। अब सब ठीक है। अब तुम अपनी सही जगह पर आ सकते हो।"

हगाग बोला — "सर मैजेस्टी। मैंने विनम्रता और बद्धिमत्ता दोनों सीख ली हैं। यह राजगद्दी मेरे लिये नहीं है। उन अन्धे भिखारियों को मेरी ज़्यादा जरूरत है। मुझे आप उन्हीं की सेवा में रहने दीजिये।"

जिनी बोला — "यह नहीं हो सकता। मैंने देखा कि तुमने सचमुच में पश्चाताप कर लिया है। तुमने अपना पाठ सीख लिया है। अब मेरा भी काम यहाँ खत्म हो गया। मैं देखता हूँ कि इन अन्धे भिखारियों को किसी चीज़ की कमी न रहे।"

कह कर अपने हाथों से उसने हगाग को राजा की शाही पोशाक पहनायी और खुद उन भिखारियों की पोशाक पहनी। जब दरबारी

लोग लौटे तो उन्हें कोई अन्तर नजर नहीं आया। राजा हगाग अपनी राजगद्दी पर बैठे हुए थे और भिखारी खाने जा रहे थे।

इस बार राजा हगाग ने इतना अच्छा राज किया जैसा दुनियॉ भर में किसी ने न किया होगा।

9 बिल्ली और कुत्ते की लड़ाई[40]

जब धरती बनी ही बनी थी तब ऐडम ने जानवरों के नाम रखे और उन पर राज किया। उस समय कुत्ता और बिल्ली दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे।

वे अपना मनोरंजन साथ साथ करते वफादारी के साथ एक दूसरे को चीज़ें बॉटते और लेते देते और एक दूसरे के प्रति प्यार से घूमते फिरते एक दूसरे की खुशियॉ और गम बॉटते।

वे एक साथ रहते थे अपना खाना बॉट कर खाते थे और अपनी गुप्त बातें भी एक दूसरे से छिपाते नहीं थे। इस तरह से ऐसा कोई कारण दिखायी नहीं देता था जिसकी वजह से उनमें कभी कोई झगड़ा होता।

तब जाड़ा आया। यह उनके लिये नया अनुभव था कि वह काटने वाली तेज़ ठंडी हवाओं का अनुभव कर रहे थे। इससे वे बराबर कॉपे जा रहे थे। उन्हें पत्तों के बिना पेड़ देख कर बहुत उदास महसूस हो रहा था। सख्त ठंडी जमीन भी उनके दिलों को भारी कर रही थी।

इससे भी खराब बात यह थी कि खाना भी कम था।

---

[40] The Quarrel of the Cat and Dog. (Tale No 9)

खाने की कमी बढ़ती गयी और भूख के मारे वे दोनों बहुत दुखी और निराश होते जा रहे थे। कुत्ता अचानक बहुत उदास हो गया था। बिल्ली भी बहुत आलसी हो गयी थी और बाद में तो उसे बात बात पर गुस्सा भी आने लगा था।

एक दिन बिल्ली ने रोते हुए कहा — "हम लोग इस तरह से नहीं रह सकते। हमें अपनी साझेदारी खत्म करनी पड़ेगी। हम लोग जब साथ साथ होते हैं तब हमें दोनों में बॉटने के लिये खाना काफी नहीं मिलता। पर हो सकता है कि अगर हम अलग अलग खाना ढूँढें तो शायद काफी खाना मिल जाये।"

कुत्ता बोला — "मुझे लगता है कि इस मामले में मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूँ क्योंकि मैं तुमसे ज़्यादा ताकतवर हूँ।"

बिल्ली ने इसका कोई विरोध नहीं किया पर उसने सोचा कि कुत्ता थोड़ा बेवकूफ है और कुछ ज़्यादा ही अच्छे स्वभाव का है। वह जानती थी कि वह उससे ज़्यादा चालाक है और वह अपने इस गुण पर अपने ज़िन्दा रहने के लिये बहुत भरोसा करती थी।

कुत्ता बिल्ली के इस फैसले पर कि वह अब अपनी साझेदारी खत्म करना चाहती थी बहुत दुखी था पर उसने शान्ति से कहा — "ठीक है बिल्ली। अगर तुम ऐसा ही चाहती हो तो फिर यही सही।"

बिल्ली बोली — "तो फिर यही तय रहा।"

कुत्ते ने पूछा — "बिल्ली तुम कहाँ जाओगी।"

बिल्ली ने तुरन्त ही जवाब दिया जैसे उसने यह पहले से ही तय कर लिया हो — "ऐडम के घर। वहाँ चूहे हैं। ऐडम मेरा धन्यवाद करेगा अगर मैं उसके घर के कुछ चूहे साफ कर दूँगी तो। और मुझे भी कुछ खाना मिल जायेगा।"

कुत्ता हाँ में सिर हिला कर बोला — "ठीक है। मैं इधर उधर मैदान में घूमूँगा।"

तब बिल्ली ने कुछ गम्भीरता से कहा — "हम लोगों को आपस में यह कसम खानी चाहिये कि हम एक दूसरे का रास्ता न काटें। किसी समझौते को खत्म करने का यही सबसे अच्छा तरीका है। ऐसा साँप कहता है और वह तो सबसे ज़्यादा अक्लमन्द जानवर है।"

कह कर दोनों ने अपने अपने आगे के दाँये पंजे जमीन पर मारे और यह कसम दोहरायी कि वे दोनों एक ही जगह जा कर अब कभी भी एक दूसरे के रास्ते में नहीं आयेंगे। उसके बाद वे अलग हो गये।

कुत्ता बेचारा अपना मुँह लटका कर दुखी सा एक तरफ चला गया। उसने तो एक बार पीछे मुड़ कर देखा भी पर बिल्ली ने तो वह भी नहीं किया। वह तो बस बहुत तेज़ी से ऐडम के घर भागी चली गयी।

ऐडम के घर पहुँचते ही वह चिल्लायी — "पिता ऐडम। मैं तुम्हारे यहाँ काम करने आयी हूँ। तुम अपने घर में चूहों से परेशान हो न। मैं तुम्हें उनसे बचा सकती हूँ। मुझे इस सेवा के बदले में कुछ चाहिये भी नहीं।"

पिता ऐडम ने बिल्ली के गर्म बाल सहलाते हुए कहा — "आओ बिल्ली तुम्हारा स्वागत है।"

बिल्ली ने भी अपना सिर ऐडम के पैरों पर मला सन्तुष्टि से आवाज की और फिर तुरन्त ही वह चूहे ढूँढने चली गयी। उसको वहाँ बहुत सारे चूहे मिल गये। चूहे खा खा कर जल्दी ही वह खूब मोटी हो गयी। अब वह वहाँ बहुत आराम से थी।

कुत्ता बेचारा इतनी अच्छी तरह से नहीं रह पाया। उसके दिन बहुत मुश्किल से गुजर रहे थे। वह बिना किसी मतलब के जमी हुई धरती पर इधर उधर घूमता रहा मगर उसको खाने का एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं मिला।

तीन दिन बाद थका हुआ दर्द भरे पंजों से चलता हुआ वह एक भेड़िये की माँद में आ पहुँचा। भेड़िये को उस पर दया आ गयी तो उसने उसे खाने के कुछ टुकड़े दिये और अपने घर में सोने की इजाज़त भी दे दी।

कुत्ते ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने कान खड़े कर के सो गया।

रात को उसने कुछ भारी कदमों की आवाज सुनी तो उसने भेड़िये को इस बारे में बताया तो भेड़िया बोला — "तुम आने वाले को भगा दो।"

कुत्ता बेचारा आज्ञाकारी की तरह आने वाले को भगाने वाले के लिये बाहर गया पर आने वाले तो जंगली जानवर थे उन्होंने तो उसे मार ही दिया था। पर उसकी किस्मत अच्छी थी कि वह बच गया।

सुबह उठ कर उसने एक तालाब पर जा कर अपने घाव धोये और फिर सारे दिन घूमता रहा। फिर भी उसे कुछ नहीं मिला। रात को जब वह अपना घायल शरीर घसीटता सा लिये चला आ रहा था तो उसे एक पेड़ पर एक बन्दर दिखायी दिया।

उसने बन्दर से विनती की — "बन्दर भाई मेहरबानी कर के मुझे पेड़ पर रात को सोने की जगह दे दो। मैं बहुत थक गया हूॅ और भूखा हूॅ।"

बन्दर अपने होठ हिलाते हुए ऑखों को मिचकाते हुए एक डाल पर से दूसरी डाल पर उछलते कूदते बोला — "चले जाओ यहॉ से चले जाओ।" कुत्ता कुछ हिचकिचाया तो बन्दर ने उसे डराने के लिये कुछ नारियल तोड़ कर उसके ऊपर फेंके।

बेचारा कुत्ता वहॉ से रेंगता हुआ सा चला गया। वह रोते हुए बोला "अब मैं क्या करूॅ।"

तभी उसे किसी भेड़ की आवाज सुनायी पड़ी।

कुत्ता उन भेड़ों के पास गया और उनसे अपने ऊपर दया करने के लिये कहा। वे बोलीं — "ठीक है अगर तुम हमारी पहरेदारी करो तो। जब भी भेड़िया यहाँ आये तो तुम हमें उसके आने की खबर दे देना।"

कुत्ता तुरन्त ही राजी हो गया। पहले उसने कुछ खाना खाया और फिर वफादार पहरेदार कुत्ते की तरह एक तरफ को एक आँख बन्द कर के लेट गया।

आधी रात में उसने भेड़ियों के आने की आवाजें सुनीं तो भेड़ों की सेवा करने के लिये उत्सुक जिन्होंने उसे शरण दी थी वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया और ज़ोर ज़ोर से भौंकने लगा।

इससे भेड़ें जाग गयीं और इधर उधर भागने लगीं। कुछ भेड़ें तो सीधी भेड़ियों के झुंड की तरफ ही भाग गयीं। भेड़ियों ने उन्हें मार कर खा लिया। यह देख कर बेचारे कुत्ते का तो दिल ही टूट गया।

वह बोला "यह मेरी ही गलती है यह मेरी ही गलती है। मैं जल्दी भौंक पड़ा। मैं कितना नाखुश जानवर हूँ। अब मैं किसी भी जानवर के पास नहीं जाऊँगा।

यह सोच कर एक बार फिर वह अपनी यात्रा पर निकला। रास्ते में जब भी कोई जानवर उसे मिलता तो वह उससे दूर भाग जाता। इसलिये उसे सारे रास्ते अकेले ही जाना पड़ा।

कई बार तो उसे ऐसे रास्तों से भी जाना पड़ा जहॉ से कोई आता जाता नहीं था। इसलिये उसको खाना मिलने की सम्भावना और भी कम थी।

आखिर वह इतना कमजोर और पतला हो गया कि अब उसे धीरे धीरे चलने में भी परेशानी होने लगी। कई बार तो वह भयानक जंगली जानवरों के पंजे में पड़ने से बचा।

एक रात वह ऐडम के घर आ पहुॅचा और वहॉ उससे खाना मॉगा। ऐडम ने उसे खाना दे दिया। एक बार रात में वह जागा और ऐडम से कहा कि जंगली जानवर उसके घर पर हमला करने आ रहे हैं। तो ऐडम ने तुरन्त ही अपना तीर कमान उठाया और जानवरों को भगा दिया।

ऐडम ने उसकी प्रशंसा की सहलाया और कहा "बहुत अच्छे। तुम तो एक बहुत ही अक्लमन्द जानवर हो। अब तुम हमेशा मेरे पास ही रहोगे। पिता ऐडम हमेशा तुम्हारे ऊपर दया करेंगे।"

कुत्ता डर के मारे चिल्लाया — "पिता ऐडम। मैं यहॉ नहीं ठहर सकता।"

ऐडम बोला — "बेकार की बात। तुम यहॉ क्यों नहीं ठहर सकते। मैं कहता हूॅ कि तुम्हें यहीं ठहरना चाहिये।"

कुत्ते को ऐडम की बात माननी पड़ी। सुबह जब बिल्ली को पता चला तो उसने ऐडम से इस बात की शिकायत की।

उसने ऐडम से कहा कि कुत्ते ने उसके साथ किये गये समझौते की शर्त को तोड़ा है। उसकी यह शर्त थी कि जहाँ मैं होऊँगी वह वहाँ नहीं आयेगा।

ऐडम ने शान्ति बनाये रखने के विचार से बिल्ली से कहा — "वह नहीं जानता था कि तुम यहाँ हो। वह बहुत काम का है। मैं चाहता हूँ कि वह यहाँ रहे। वह तुम्हें कोई तकलीफ नहीं पहुँचायेगा। मेरे पास तुम दोनों के लिये बहुत जगह है।"

बिल्ली कुछ परेशान होते हुए और अपनी कमर को बीच में से उठाते हुए बोली — "नहीं। ऐसा नहीं है। उसने अपनी कसम तोड़ी है। वह बहुत ही नीच प्राणी है। आपको उसके अपराधों को ऐसे ही अनदेखा नहीं छोड़ देना चाहिये।"

बेचारा कुत्ता एक तरफ को अकेला सा खड़ा हुआ था। उसकी पूँछ उसकी टाँगों के बीच में दबी हुई थी। वह बोला — "मुझे नहीं मालूम था कि यह ऐडम का घर था। मैं बहुत ही थका हुआ परेशान और दुखी था।"

पर बिल्ली उसके इस तर्क से सन्तुष्ट नहीं थी। उसने अपने पुराने साथी को अपने भद्दे पंजों से खुरचने और मारने की कोशिश की पर कुत्ता उससे जितनी दूरी पर रह सका रहा। फिर भी जब भी उसे मौका मिलता तो वह उसके साथ लड़ने झगड़ने से नहीं चूकती। आखिर कुत्ता उसका यह व्यवहार और नहीं सह सका।

उसने पिता ऐडम से कहा — “पिता ऐडम। अब मुझे यहाँ से जाना ही चाहिये। इस बिल्ली ने तो मेरा जीना हराम कर रखा है।”

ऐडम बोला — “पर मैं तुम्हें चाहता हूँ।”

कुत्ता बोला — “मुझे अफसोस है पिता ऐडम पर सचमुच में मेरे लिये आपकी सेवा करना असम्भव है। मुझे सैथ[41] के घर में काम मिल गया है। वह मुझे रखना चाहते हैं।”

ऐडम ने पूछा — “तो क्या तुम बिल्ली से दोस्ती नहीं करोगे?”

कुत्ता बोला — “खुशी से अगर वह मुझे दोस्ती करने दे तब न। पर वह तो यह चाहती ही नहीं है।”

ऐडम बोला — “तुम लोग आपस में झगड़ रहे हो एक दूसरे को इलजाम दे रहे हो। मैं तुम्हारा फैसला नहीं कर सकता। ऐसा लग रहा है जैसे तुम लोग हमेशा लड़ते ही रहोगे।”

ऐडम का कहा हुआ सच निकला। उसी समय से बिल्ली और कुत्ता लड़ते चले आ रहे हैं। बिल्ली कभी भी कुत्ते के आगे दोस्ती का हाथ नहीं बढ़ायेगी।

[41] See “Glossary of Jews” at the back of the book

10 पानी का बच्चा[42]

मिस्र के राजा फैरो[43] की बेटी राजकुमारी बाथिया[44] ने नील नदी में एक टोकरी देखी जिसमें एक बच्चा बह रहा था। राजकुमारी बाथिया विधवा थी। वह उस बच्चे को देख कर बहुत खुश हुई कि वह उस बच्चे को अपने घर अपने महल ले गयी और उसे अपने बच्चे की तरह पालने लगी। उसने बच्चे को मोज़ेज़[45] नाम दिया।

वह एक बहुत ही प्यारा सा और खुश बच्चा था। जैसे जैसे वह बड़ा होता गया तो वह सबका प्यारा और दुलारा होता गया। यहाँ तक कि वह निर्दयी फैरो जिसने यह हुक्म दिया था कि सारे हिब्रू[46] बच्चों को पानी डुबो देना चाहिये वह भी उसे साथ खूब खेलता था।

जैसे ही वह घुटनों चलने लगा और फिर बोलने लगा और राजा से दोस्ती बढ़ाने लगा तब उसके शाही मंत्री और जादूगरों ने उस

---

[42] The Water Babe.   (Tale No 10)

[43] Pharaoh – the title of the King of Egypt. Early Egyptian were called “Kings”, over time, the name “pharaoh” stuck. As the religious leader of the Egyptians, the pharaoh was considered the divine intermediary between the gods and Egyptians.This title was held by all kings of Egypt from circa 3150 BC until 30 BC.

[44] Princess Bathia – daughter of the Pharaoh of Egypt

[45] See “Glossary of Jews” at the end of the book

[46] Hebrew – The term Hebrew is first used in the scriptures to refer to Abraham (Genesis 14:13). Then it is used of Joseph (Genesis 39:14,17) and the other descendants of Abraham through Isaac and Jacob (Genesis 40:15; 43:32). It is uncertain why Abraham is called ~'the Hebrew." Hebrew and Jews and Israelite religions are same.

बच्चे मोज़ेज़ को देखा तो बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने फैरो से कहा कि इस तरह एक अनजान बच्चे को इतनी अधिक स्वतंत्रता देना उचित नहीं था। पर राजकुमारी बाथिया उन पर केवल हॅस देती थी।

उसकी मॉ यानी राजमाता और फैरो ने भी उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

जब मोज़ेज़ तीन साल का हुआ तो राजकुमारी बाथिया ने उसके जन्म दिन पर एक दावत रखी। यह दावत वास्तव में ही एक बहुत बड़ी दावत थी। इसमें राजा रानी और राज दरबारी भी आये थे। मोज़ेज़ को मेज के ऊपर की तरफ बिठाया गया था। उसकी ऑखें तो वहॉ जो कुछ उसके सामने रखा था उसे देख कर चकाचौंध हो गयीं।

उसे लगा कि यह उसके साथ कुछ मजाक सा हो रहा था। वह तो फर्श पर खेलना चाह रहा था या फिर मेज पर चढ़ना चाह रहा था पर ऐसा करने की उसे इजाज़त ही नहीं थी।

राजा उसके बराबर में ही बैठा हुआ था सो उसने राजा से पूछा कि "आप मुझे बतायें कि इस सबका क्या मतलब है।" और उसने खेल खेल में राजा की दाढ़ी खींच ली।

दरबारी यह देख कर डर गये। और बिलाम[47] जो फैरो का सबसे बड़ा जादूगर था बोला — "राजा साहब इससे बच कर रहिये यह कोई खेल नहीं है।"

राजकुमारी बाथिया बोली — "पिताजी इनकी बातों पर ध्यान मत दीजिये। बिलाम तो आपको हमेशा ही चेतावनी देता रहता है। अगर आप इन सब बातों के ऊपर ध्यान देंगे जो वह कहता है तो आपको तो कभी शान्ति नहीं मिलेगी। आप इस बच्चे को उठाइये इसे अपनी गोद में बिठाइये और इसके साथ खेलिये।"

राजकुमारी को खुश करने के लिये फैरो ने वैसा किया तो मोज़ेज़ को राजा की पोशाक पर लगे हुए चमकते रत्नों से खेलने में बहुत आनन्द आया। फिर मोज़ेज़ ने राजा के सिर की तरफ देखा तो उसे ही बहुत देर तक देखता रहा।

उसने उसके ताज की तरफ इशारा करते हुए पूछा — "यह क्या है?"

फैरो बोला — "बेटा यह शाही ताज है।"

मोज़ेज़ बोला — "नहीं यह तो मजेदार टोप है।"

बिलाम फिर बोला — "सरकार सॅभल कर रहिये।"

मोज़ेज़ ने अपने नन्हे नन्हे हाथ ऊपर उठाते हुए कहा — "मुझे यह टोप पहनना है।"

---

[47] Bilam – the chief magician of the Pharoah

इससे पहले कि वे सब उसे रोक सकते उसने फैरो का टोप उसके सिर से उतार कर अपने सिर पर रख लिया।

राजकुमारी बाथिया और रानी दोनों बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं पर जादूगर बिलाम को इस बात पर हँसी नहीं आयी। वह तो यह देख कर बहुत ही गम्भीर हो गया।

उसने फैरो से काँपते हुए कहा — "योर मैजेस्टी। यह कोई बच्चे का बेवकूफी भरा खेल नहीं है। याद रखिये कि यह बच्चा दूसरे बच्चों जैसा बच्चा नहीं है। क्या यह नदी में से नहीं आया है?

उसके इस काम में कोई मतलब छिपा है। यह तो अभी से आपकी शाही पोशाक और ताज छीनना चाहता है। यह बुराई की निशानी है।"

यह सुन कर फैरो सोच में पड़ गया और उसने अपनी दाढ़ी सहलायी। फिर उसने अपने दूसरे बड़े जादूगर रूअल[48] से पूछा — "रूअल तुम क्या कहते हो?"

रूअल बोला — "योर मैजेस्टी। यह बच्चा तो अभी बहुत छोटा बच्चा है। उसके इस काम का कोई मतलब नहीं है।"

रानी और राजकुमारी भी रूअल से राजी थे। वह उनका प्रिय जादूगर था पर बिलाम इस मामले को इतने हल्के तौर पर लेने वाला नहीं था।

[48] Reuel – another chief magician of Pharoah

वह बोला — "मैं बिलाम, आपका सबसे बड़ा जादूगर हूँ और सितारों की विद्या में पारंगत हूँ। कहता हूँ कि इस सब में कोई मतलब छिपा है। याद रखिये ओ फैरो, यह बच्चा हिब्रू है और आपके फैसले से बच गया है। इसके इस खेल का कोई मतलब है।

अगर इस बच्चे को बड़ा होने दिया गया तो यह आपके विरुद्ध विरोध खड़ा कर देगा और आपका राज नष्ट कर देगा। ओ राजा। मेहरबानी कर के इसके साथ न्याय कीजिये।"

फैरो जो खुद भी मोज़ेज़ से कुछ नाराज सा था बोला — "तुम ठीक कह रहे हो।" कह कर उसने मोज़ेज़ के अपराध के साथ न्याय करने के लिये तीन जज नियुक्त किये।

मोज़ेज़ को लगा कि यह कोई नया खेल शुरू हो गया सो जब वे उसे न्याय की अदालत में ले कर गये तो उसने खुशी से ताली बजाना शुरू कर दिया। अदालत में ल जा कर उसे जजों के सामने खड़ा कर दिया गया।

उसने सुना कि रूअल उसके लिये बहस कर रहा था पर वह समझ नहीं सका कि वह क्या कह रहा था।

रूअल बोला — "मैं कहता हूँ कि वह तो एक बच्चा है और बच्चों के कामों का तो कोई मतलब होता नहीं। आप उसका कोई इम्तिहान ले लीजिये अगर वह सोने और आग में भेद बता दे तो।

उसके सामने दो तश्तरियाँ रखिये जिनमें से एक में जलते हुए अंगारे हों और दूसरे में रत्न। अगर वह रत्न वाली तश्तरी छूता है तो यह साबित करेगा कि वह कोई साधारण बच्चा नहीं है और अगर वह आग छूता है तो हम समझेंगे कि वह तो एक बेवकूफ बच्चा है।"

बिलाम बोला — "ठीक है। ऐसा ही हो। पर अगर वह रत्न छूता है तो फिर उसकी सजा उसकी तुरन्त ही मौत होनी चाहिये।"

फैरो और तीनों जजों ने उसकी यह बात मान ली। दो तश्तरियों में, एक में जलते हुए कोयले और दूसरी तश्तरी में रत्न ला कर बच्चे के सामने रखे गये।

हर आदमी बड़े ध्यान से देख रहा था कि बच्चा किस तश्तरी को छुएगा। राजकुमारी बाथिया ने उसको इशारा किया पर बिलाम ने सख्ती से उसे ऐसा करने से रोक दिया। रूअल ने उसके आँसू पोंछे और उसे तसल्ली दी।

रूअल ने उसे अपना जादू का डंडा दिया जो एक अकेले कीमती पत्थर का बना हुआ लगता था और कहा — "लो मेरा यह जादू का डंडा लो। इसे भगवान ने मोज़ेज़ को दिया था जब वह ईडन के बागीचे को छोड़ कर जा रहा था।

मोज़ेज़ ने इसे ईनाक[49] को दिया और ईनाक और नोआ ने इसे अब्राहम और जेकब को दिया जिन्होंने जोसेफ को दिया फिर जोसेफ ने इसे मुझे दिया। सो इस डंडे को अब तुम लो और तुम जो कुछ कहोगी मोज़ेज़ वही करेगा।"

राजकुमारी ने वह डंडा ले लिया और उसे होठों से लगाया और अपनी इच्छा प्रगट की कि मेरा बच्चा आग के अंगारों को हाथ लगाये। मोज़ेज़ ने अपना हाथ जलते कोयलों में घुसा दिया और उनमें से एक जलता हुआ कोयला उठा लिया।

एक चीख मार कर उसने कोयला तो छोड़ दिया और अपना हाथ अपने मुँह में रख लिया। बाद में वह बहुत धीरे से बोला। राजकुमारी ने उसे खींच कर अपने सीने से लगा लिया।

उसने रूअल से कहा — "अपनी जादू की छड़ी मुझे दो ताकि मैं बच्चे की रक्षा कर सकूँ और उसे ठीक कर सकूँ।"

रूअल ने पूछा — "क्या तुम वह पढ़ सकती हो जो इस डंडे पर लिखा है?"

राजकुमारी बोली — "नहीं।"

रूअल बोला — "तब यह डंडा तुम्हारा नहीं हो सकता। जो भी यह नाम पढ़ सकता है वही सारी बातें समझ सकता है – यहाँ

[49] Enoch – see "Glossary of Jew Religion" at the end of this book

तक कि जानवरों और चिड़ियों के विचार भी। मोज़ेज़ के बारे में चिन्ता करनी छोड़ दो। भविष्य में यह डंडा उसी का होगा।”

इस तरह से समय निकलता चला गया। बरसों बाद जब मोज़ेज़ आदमी हो गया और मिस्र से भाग गया उसने रूअल की एक बेटी से शादी कर ली जो हिब्रू बन गयी थी और फिर जैथ्रो के नाम से जानी जाने लगी।

रूअल ने अपना वह डंडा अपने बागीचे में गाड़ दिया। मोज़ेज़ ने उसे देखा उसने वह जादुई शब्द पढ़ लिया। उसने उस जादुई डंडे को छुआ तो वह अपने आप ही निकल कर उसके हाथ में आ गया।

उस डंडे की सहायता से मोज़ेज़ ने मिस्र में बहुत सारे करतब किये जब उसने मिस्र से इज़रायल के लोगों को दासत्व से मुक्ति दिलायी। ऐसा बाइबिल में लिखा है।

11 तालमुड का सिनबाद[50]

"रब्बा रब्बा ओ बेवकूफ रब्बा। क्या तूने आज कोई दूसरी व्हेल पकड़ी?"

पूर्व में बहुत सारे बच्चे ऐसा चिल्लाते हुए शहर की एक सड़क पर एक बूढ़े के पीछे पीछे दौड़े जा रहे थे। उनके माता पिता उनको आनन्द से देख रहे थे। उनमें से कुछ उस बूढ़े को छोटे बच्चों जैसे पुकार रहे थे।

रब्बा उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा था वह तो बस सीधा देखते हुए आगे चलता चला जा रहा था जैसे वह कुछ और ही सोच रहा हो। तभी सड़क के मोड़ पर उसे सामने से आता एक अरब मिल गया। जैसे ही बच्चों ने अरब को देखा वे वहाँ से भाग लिये।

वे एक दूसरे से कहने लगे "अली रब्बा आ रहा है। अली रब्बा आ रहा है।" और यह कह कर वे वहाँ से जितनी जल्दी भाग सकते थे अपने घरों को भाग लिये।

अरब ने बच्चों को धमकाते हुए अपनी मुट्ठी उनकी तरफ हिलायी। उसके बाद वह उस आदमी से बात करने लगा जिसके पीछे बच्चे भाग रहे थे।

---

[50] Sinbad of the Talmud. (Tale No 11)

वह बोला — "यह बड़े शर्म की बात है कि शहर के ऐसे ऐसे लोगों को मेरे संत मालिक "रब्बा बर चना" को जो एक बहुत बड़ा विद्वान है और बहुत जगह घूमा हुआ है ऐसे अपमान भरे शब्द कहने की छूट मिल जाये।"

रब्बा बीच में ही बोला — "मेरे अच्छे अली। शान्त हो जाओ। वे अभी छोटे बच्चे हैं। अभी वह इतने समझदार नहीं हैं। और फिर वे किसी का आदर कर भी कैसे सकते हैं जब उनके माता पिता जिन्हें बुद्धि और विश्वास होना चाहिये वही हमारी कहानियों को और हमारी करामातों को जो हमने किये हैं उनमें विश्वास नहीं करते।

कल मैंने उनको बताया था कि हमारा जहाज़ पाँच हजार व्हेल मछलियों से घिर गया था और हर व्हेल एक मील लम्बी थी तो उन्होंने इसे मजाक समझा और हमारी हँसी उड़ायी और बोले "असम्भव।"

अली कुछ गुस्से से बोला — "असम्भव? क्या मैं आपके साथ नहीं था मेरे मालिक? क्या मैंने खुद ने उन सब व्हेलों को नहीं गिना था? इतनी किसकी हिम्मत है जो मेरे कहे पर शक करे? क्या मैं बरसों से आपकी आश्चर्यजनक यात्राओं पर आपका अच्छा गाइड नहीं रहा हूँ?

उँह। शहर के ये बेवकूफ जानते ही क्या हैं। ये लोग तो बस उसी शहर की तंग गलियों की चौड़ाई तक जानते हैं जिसमें ये रहते हैं। ये लोग समुद्र के उस पार की दुनियाँ के बारे में क्या जाने। बेवकूफ। गँवार बेवकूफ। इनमें से हर आदमी गँवार और बेवकूफ है मेरे अच्छे मालिक।

आप यहाँ क्यों ठहरे हुए हैं और यहाँ रह कर उनसे अपना अपमान और उनका मजाक सह रहे हैं। चलिये हम आज ही यहाँ से चलते हैं। बन्दरगाह पर एक बहुत ही अच्छा जहाज़ हमारा इन्तजार कर रहा है।"

अली की आवाज गुस्से में और भी ऊँची होती जा रही थी। सो उनके आस पास भीड़ भी इकट्ठी होती जा रही थी। रब्बा उसे जल्दी से वहाँ से ले गया और दोनों साथ साथ बन्दरगाह की तरफ चल दिये। वहाँ जा कर वे जल्दी ही जहाज़ के कप्तान से बातों में लग गये जो दूर देश से आया था।

कप्तान बोला — "मुझे तुम दोनों को ले जाने में बहुत खुशी होगी। मैंने तुम लोगों की साहसिक यात्राओं के बारे में सुना है। हमारे देश में ऐसा कहा जाता है कि उन्हीं को मिलता है जो खोजने का साहस रखते हैं और उनमें विश्वास करते हैं।

मुझे भी दुनियाँ के आश्चर्य देखने हैं इसलिये मैं तुम दोनों को अपने जहाज़ पर जरूर चढ़ाऊँगा।"

अगले दिन रब्बा और अली दोनों जहाज़ के डैक पर खड़े हुए थे। जहाज़ बन्दरगाह से लोगों की तालियों और किनारे पर खड़े लोगों की हॅसी के बीच धीरे धीरे चलना शुरू हुआ।

किनारे वाले लोग चिल्लाये — "बेवकूफ रब्बा और अली रब्बा। वापसी में चॉद लाना मत भूलना। और हॉ यह भी पता लगा कर लाना कि जब वह हमें दिखायी नहीं देता तो वह कहॉ होता है।"

धीरे धीरे जहाज़ आगे बढ़ गया और जल्दी ही ऑखों से ओझल भी हो गया। हवाऐं अनुकूल थीं सो जहाज़ आराम से आगे बढ़ता रहा। दस दिन में वह एक ऐसे सागर में पहॅुच गया जहॉ से पहले कभी कोई जहाज़ नहीं गुजरा था।

अली बोला कि वह यह बात इसलिये बता सकता था क्योंकि वहॉ की मछलियॉ कुछ अजीब ढंग से बर्ताव कर रही थीं। वे अपना सिर पानी से बाहर निकालतीं जहाज़ को देखतीं और फिर तुरन्त ही उसको देख कर वहॉ से दूर भाग जातीं।

इससे पता चलता था कि लगता है उन्होंने इससे पहले कभी कोई जहाज़ नहीं देखा था और उन्होंने उसे कोई समुद्री राक्षस समझ लिया था। रोज मछलियों की संख्या बढ़ती जाती पर कोई किनारा नजर नहीं आ रहा था। इसी तरह से पॉच दिन और बीत गये।

तब सामने ही एक सुनसान टापू नजर आया।

कप्तान उसी टापू की तरफ बढ़ लिया। उस टापू पर कहीं कहीं इक्का दुक्का घास उगी हुई थी। रब्बा ने विचार किया कि वह यहीं उतरेगा और टापू की छानबीन करेगा।

अपने वफादार साथ अली के साथ वह एक छोटी नाव ले कर वहीं उतर गया और उस टापू के किनारे की तरफ बढ़ा। उन्होंने वहाँ कुछ ऐसी सब्जियाँ उगी हुई देखीं जो उन्होंने पहली बार देखी थीं।

वहाँ उन्होंने कुछ सूखी टहनियाँ इकट्ठी कीं और उनसे आग जलायी जिसमें उन्होंने वे सब्जियाँ पकायीं। जब वे सब्जियाँ पक रही थीं तो वे इधर उधर देखने चले गये।

रब्बा बोला — "यह तो तो कोई बड़ी जमीन दिखायी देती है और तीन चार मील दूर तो मुझे पानी भी दिखायी दे रहा है।"

अली बोला — "मुझे भी ऐसा ही लग रहा है। लगता है यह टापू की चौड़ाई होगी। पर इसके दूसरे छोरों पर मुझे कुछ दिखायी नहीं देता। पर यहाँ यह आवाज कैसी है।"

रब्बा बोला — "यह तो भूचाल की सी आवाज है और मुझे विश्वास है कि मैंने जमीन हिलती हुई भी महसूस की। मुझे ऐसा लगा कि जैसे यह कुछ ऊपर नीचे हो रही है जैसे कोई ज़िन्दा चीज़ होती है।"

तभी नाव से एक चिल्लाने की आवाज ने उनका ध्यान खींच लिया सो वे उधर देखने लगे। उन्होंने देखा कि उनके साथी लोग पागलों की तरह से चिल्ला रहे थे और उनको वापस आने का इशारा कर रहे थे।

जिस दिशा में वे इशारा कर रहे थे उस दिशा में देखने से पता चला कि उधर तो सागर में से जमीन का एक बड़ा सा टुकड़ा ऊपर आ रहा था और उसके ऊपर आने से बहुत सारा पानी उस टापू पर आ रहा था जिस पर वे खड़े थे।

डर के मारे रब्बा चिल्लाया — "यह कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है यह तो व्हेल है। हमने जो आग जलायी है उसने इसे सोते से जगा दिया है। जल्दी से हमें किनारे की तरफ भागना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि यह डुबकी मारे और हमें डुबो दे।

सो इससे पहले कि वह व्हेल समुद्र में डुबकी मारे वे जल्दी जल्दी वहाँ से भाग लिये और समय के अन्दर अन्दर अपनी नाव में चढ़ गये क्योंकि उसके बाद ही व्हेल अपने ऊपर जलती हुई आग बुझाने के लिये समुद्र में डुबकी मार गयी।

पर वह फिर उठी तो उसका अबकी बार का उठना जहाज़ के लिये बहुत ही बड़ा खतरा बन गया क्योंकि अब वह जहाज़ मछली के शरीर और उसके एक पंख के बीच में था।

अली बोला — “अब इस जहाज़ को मैं खेता हूँ। मैं जानता हूँ कि ऐसे खतरे के समय में जहाज़ को कैसे खेना है और उसमें से कैसे निकालना है। हमको अपने जहाज़ को मछली के पंख से टकराने से बचाना है नहीं तो हम तो आज गये।

हमको पहले यह पता लगाना है कि यह मछली किस दिशा में जा रही है तो हमें उसकी दूसरी दिशा में जाना चाहिये नहीं तो जब हमारा जहाज़ उस जगह पर आयेगा जहाँ मछली का पंख उसके शरीर से जुड़ा होता है तब हमारा जहाज़ नष्ट हो जायेगा।

उस रात जहाज़ की टीम सारी रात नहीं सो पायी। हर आदमी इस बात पर ध्यान रखे था कि कहीं कोई एक छोटी सी चाल भी गलत न खिल जाये ताकि वे सभी नष्ट न हो जायें।

भाग्य से मछली अब समुद्र की सतह पर हवा की प्रतिकूल दिशा की ओर तैर रही थी इसलिये जहाज़ को जो उसके विरोधी दिशा में जा रहा था अनुकूल हवा मिल रही थी सो जहाज़ जल्दी जल्दी हवा की तरफ बढ़ने लगा। हालाँकि मछली भी बहुत तेज़ तैर रही थी पर ऐसा लग रहा था जैसे मछली के पंख का कोई अन्त ही न हो।

तीन दिन तीन रात जहाज़ ऐसी दशा में चलता रहा तब कहीं जा कर मछली के पंख का अन्तिम छोर आया। और तब ली सबने चैन की साँस। कप्तान ने रब्बा से कहा — “बस हम तो आज बाल बाल बच गये।

रब्बा बोला — “अभी इतनी जल्दी नहीं। मुझे अभी भी डर है। हमको यहाँ से जल्दी से ज्ल्दी यहाँ बाहर निकलने की कोशिश करनी चाहिये। पर यह हवा हमको यहाँ से बाहर निकलने ही नहीं दे रही।”

जब वह यह बात कह रहा था कि पानी में एक ज़ोर की हलचल मची और इसके साथ ही लोगों ने देखा कि वह व्हेल फिर से वापस लौटने लगी और अबकी बार तो उसकी गति इतनी अधिक थी कि वे उसे देख भी नहीं पा रहे थे।

पानी में हलचल बहुत ज़्यादा थी जिससे जहाज़ भी बहुत ज़ोर ज़ोर से हिल रहा था। वह पानी की लहरों पर ऐसे उछल रहा था जैसे कोई कौर्क उछल रही हो। यह दशा एक दिन और रही। फिर पानी की हलचल कुछ कम हो गयी और जहाज़ मछली के सिर के पास आ गया।

अली खुशी से चिल्लाया — “देखो। एक छोटी मछली बड़ी मछली की नाक से टकरा गयी। अब तो यह बड़ी मछली जरूर ही मर जायेगी।” समुद्र में पानी का हिलना अब बन्द हो गया था और लोगों ने देखा कि मछली उलट पलट हो गयी।

रब्बा बोला — “अब तो यह मछली मर गयी। अब तो यह समुद्र के ऊपर एक बहुत बड़े रेगिस्तान की भूमि की तरह घूमेगी। यह तो जहाज़ों के लिये एक खतरा बन जायेगी।”

कई दिनों तक जहाज़ को मरी हुई मछली के साथ साथ घूमना पड़ा। जब भी वे उससे अलग होने की कोशिश करते हवा की दिशा बदल जाती और। मछली शरीर जहाज़ के पीछे पीछे चलने लगता।

कप्तान को यह अच्छा नहीं लगता क्योंकि यह जहाज़ के लिये बहुत खतरनाक होता। क्योंकि उसे लगता कि इस तरह से मछली का शरीर जहाज़ से कभी भी टकरा सकता था और वह स्थिति बहुत खराब हो सकती थी।

आखिर जमीन दिखायी पड़ी। केवल रब्बा ही नहीं बल्कि अली भी उस जमीन को नहीं पहचान सका। वे बोले कि उन्होंने यह जमीन पहले कभी नहीं देखी थी। उसके किनारे पर सुन्दर शहर बसे हुए थे।

पर लोगों का डर बढ़ गया जब उन्होंने देखा कि जहाज़ के साथ साथ मछली का शरीर भी किनारे की तरफ जाने लगा। मामला और खराब हो गया जब तूफान भी आने को था। तूफान की वजह से मछली का शरीर समुद्र की हर लहर के साथ ऊपर नीचे होने लगा।

रब्बा बोला — "अगर यह मछली शहरों से टकरा गयी तो शहर नष्ट हो जायेंगे। और हमारे लिये तो इस बात की चेतावनी उनको देना असम्भव है। अब क्या करें।"

व्हेल किनारे के पास और और पास तक पहुँचती जा रही थी और जहाज़ का कप्तान अपने जहाज़ को उससे अलग रखने की कोशिश कर रहा था ताकि वह व्हेल के पीछे उछलने वाले पानी से बचा रहे।"

आखिर लहरों से टकरा कर व्हेल बहुत ज़ोर से ऊँची उछली और किनारे की तरफ जा कर टकरायी। हवा के शोर के साथ साथ किनारे पर बनी हुई बिल्डिंगों के टूटने और लोगों के चिल्लाने की भी आवाज आयी।

तभी एक बहुत बड़ी लहर उठी जिसने जहाज़ को वहॉ से एक मील दूर फेंक दिया और घुमा कर फिर उसी जगह ले आया जिसे देख कर सब लोगों ने आश्चर्य से दॉतों में उॅगली दबा ली।

ऐसा लग रहा था जैसे जहाज़ के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे तो डर के मारे सब लोगों ने जहाज़ के मस्तूल पकड़ लिये। जो शक्तिशाली लहरें थी जमीन तक चली गयी थीं। नष्ट हुए शहरों को पार कर गयी थीं। साथ में वहॉ से जहाज़ को भी ले गयी थीं।

जहाज़ को उन्होंने किनारे से एक मील दूर अन्दर किसी घने जंगल के बीच फेंक दिया था।

जब रब्बा इस धक्के और आश्चर्य से उभरा तब वह बोले — "आखिर हम लोग सुरक्षित हैं। हम उन गरीब लोगों से बहुत अच्छे हैं जो ऐसी स्थिति से गुजरे हैं।"

कप्तान बोला — “अब मुझे यह बताइये कि अब मैं अपने जहाज़ को वापस समुद्र में कैसे ले कर जाऊँ। मैंने इस तरह की घटना कभी सुनी नहीं।”

रब्बा ने बस अपने कन्धे उचकाये और अली को साथ ले कर समुद्र के किनारे चले गये। वहाँ पहुँच कर इन्हें एक असाधारण दृश्य दिखायी दिया। हजारों लोग पागलों की तरह से जंगलों की तरफ दौड़े जा रहे थे।

चारों तरफ बर्बादी और सूनापन था। उन्हें बाद में पता चला कि किनारे के लगभग साठ शहर मछली और ज्वार की वजह से नष्ट हो गये थे। और जो शहर नष्ट नहीं हुए थे पानी की लहर उन्हें बहा कर जंगलों की तरफ ले गयी थी।

किनारे पर जहाँ तक नजर जाती थी व्हेल का शरीर ही शरीर नजर आता था। ऐसा लगता था जैसे कोई पर्वत श्रेणी पड़ी हो। सैंकड़ों लोग हाथ मलते हुए और रोते हुए इधर से उधर घूम रहे थे।

रब्बा ने उनमें से जितने लोगों को हो सकता था इकट्ठा किया और उनसे कहा — “ओ भले लागों। तुम सब लोग एक बड़ी परेशानी का शिकार हो जिसने तुम्हारे घर छीन लिये हैं तुम्हारे परिवार छीन लिये हैं। पर तुम लोग जो ज़िन्दा बच गये हो तो तुम्हारा तुम्हारे अपने भविष्य के प्रति कुछ कर्तव्य बनता है।

इस दुख के समय में निराश न हो। वहाँ वह डरावना बड़ा जीव पड़ा है जो तुम्हारे इस दुख का कारण है। वही तुम्हारी मुक्ति का साधन बनेगा।

उसका शरीर तुम्हारे खाने के काम आयेगा। जो उसमें से बच जाये और तुम उसे खत्म न कर सको तो उसे तुम नमक लगा कर आने वाले दिनों के लिये सुरक्षित कर सकते हो।

उससे तुम्हें हजारों बोतल तेल मिल जायेगा जिसका तुम व्यापार भी कर सकते हो। इसके अलावा उसकी हड्डियाँ भी बहुत काम की चीज़ होती हैं।"

लोगों ने रब्बा को उसकी इस अच्छी सलाह देने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और तुरन्त ही वह सब करने पर लग गये जो रब्बा ने उनसे करने के लिये कहा था।

उन्होंने रब्बा से कहा कि वह जादुई देश था – किशैफ़ का देश।[51] इसमें जमीन पर भी और पानी में भी बहुत सारे बड़े साइज़ के लोग[52] रहते थे। वे सब एक जिन्न के आधीन थे जिसका नाम था होरमुज़।[53] और वह उन्हें शान्ति से रहने नहीं देता था।

उन्होंने कहा कि होरमुज़ का कहना है कि उनके टापू पर आया हुआ कोई अजनबी ही उसे नुकसान पहुँचा सकता है इसलिये

---

[51] Country of Kishef

[52] Translated for the word "Monsters"

[53] Hormuz – name of the Jinn

आपकी बड़ी कृपा होगी अगर आप हमें उससे छुटकारा दिलवा दें। सो रब्बा और अली घोड़ों पर चढ़े और उस जिन्न की तरफ चल दिये।

अली बोला — "मुझे लगता है कि मैं इस देश को जानता हूँ। मुझे कुछ ऐसा याद पड़ता है कि मैं इस देश के दूसरे किनारे पर उतरा था। हम उस जंगली जगह से ज़्यादा दूर नहीं है जहाँ इज़रायल के लोग घूमते फिरे थे।"

कई दिनों तक वे जंगल और मैदानों में चलते रहे पर कुछ नहीं हुआ। अन्त में वे एक चौड़ी सी ऊँची दीवार के पास आ गये जिसने उनका आगे जाना रोक दिया। उस दीवार में कोई ऐसा रास्ता नहीं था जहाँ से वे उसके उस पार जा सकते।

जब वे यह सोच ही रहे थे कि अब वे क्या करें कि दीवार पर एक अजीब सी शक्ल उनके सामने प्रगट हुई। उसकी एक टाँग दूसरी टाँग से अधिक लम्बी थी। उसकी बाँहों में भी ऐसे ही अन्तर था। उसके दोनों कान और दोनों आँखें भी एक समान नहीं थीं।

और वह दीवार के ऊपर बड़ी आश्चर्यजनक गति से कूद रहा था।

वह चिल्लाया — "मेरा नाम होरमुज़ है तुम्हारा नाम क्या है?"

रब्बा बोले — "हमारा नाम अजनबी है।"

जैसे ही होरमुज़ ने यह शब्द सुना वह तो दीवार के ऊपर ज़ोर से तीर की तरह से दौड़ा चला गया। हालाँकि घोड़े अपनी पूरी गति से दौड़े पर उसके पास तक नहीं पहुँच सके। वह बहुत जल्दी ही गायब हो गया।

जहाँ वह दीवार में गायब हो गया रब्बा ने देखा कि वहाँ दीवार में एक छेद था। रब्बा और अली दोनों अपने घोड़ों को उसमें से अन्दर ले जाने में कामयाब हो गये। दीवार के उस पार एक बहुत बड़ी सुनसान जगह फैली पड़ी थी।

अली ने दो टुकड़े मिट्टी के उठाये और उन्हें सूँघ कर देखा तो बोला — "जैसा मैंने अन्दाज लगाया था। यह जगह तो वही है जहाँ इज़रायल के लोग घूमते रहे थे। आइये मैं आपको यहाँ की कुछ अजीब अजीब जगहें दिखाता हूँ।"

रात होने से पहले पहले अली एक जगह आया जहाँ बहुत सारे आदमियों के शरीर बिखरे पड़े थे। अली अपना भाला लिये हुए एक शरीर की उठी हुई टाँग के नीचे से निकला।

तो रब्बा बोले — "ये आदमी वे बड़े साइज़ के लोग[54] होंगे जो इज़रायल के बच्चों के मारे जाने से पहले मिस्र से भागे होंगे।"

रब्बा ने एक शरीर के कपड़ों का एक हिस्सा काट लिया जो अभी भी उसके शरीर पर पड़ा था। फिर उसने वहाँ से चलने की

---

[54] Translated for the word "Giant"

कोशिश की तो उससे तो हिला भी नहीं गया। ऐसा लग रहा था जैसे वह वहीं उसी जगह पर जम गया हो। और न ही उसका घोड़ा हिल सका।

अली चिल्लाया — "अरे मेरा तो घोड़ा भी नहीं हिल पा रहा। लगता है आपने किसी लाश का कुछ ले लिया है। मेरे अच्छे मालिक उसे वापस कर दीजिये नहीं तो हम लोग यहीं खड़े खड़े मर जायेंगे।"

रब्बा ने तुरन्त ही वह कपड़ा छोड़ दिया। तब कहीं जा कर वे वहाँ से हिल सके। वे वहाँ से जल्दी जल्दी चल कर एक ऐसी जगह आये जहाँ से धुँआ उठ रहा था। वह एक गड्ढा था।

अली बोला — "यह वह जगह है जहाँ कोरा[55] और उसके बच्चे दफ़ना दिये गये थे।"

रब्बा बोले — "यह तो बहुत ही बढ़िया जगह होगी। मैंने सुना था कि यह गड्ढा उस समय एक फ़नल बन गया था और उसके चारों तरफ की हवा ने उसमें जो कुछ भी कोरा का था वह सब कुछ अन्दर खींच लिया था। यहाँ तक कि लोगों ने जो चीज़ें उससे उधार ली थीं जैसे बर्तन आदि वे सब भी दूर से लुढ़कते हुए इस गड्ढे में आ गिरे थे। आओ जल्दी चलते हैं।"

[55] Korah – see the "Glossary of Jew Religion

वे कई दिनों तक चलते रहे। पर फिर उन्हें वह राक्षस नहीं मिला। एक दिन रेगिस्तान खत्म हो गया और वे समुद्र के पास आ पहुँचे।

वे वहाँ रात के लिये ठहर गये पर जब सुबह हुई तो रब्बा तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गये कि वह टोकरी जिसमें उनके खाने का सामान था वह तो गायब थी।

अली बोला — "मैं बताता हूँ कि क्या हुआ होगा। यहाँ कोई चोर तो है नहीं जो चोरी करेगा पर यह दुनियाँ का अन्त है यानी जमीन का किनारा। यहाँ हर चौबीस घंटे में घूमते हुए आसमान और धरती एक दूसरे को छू लेते हैं तो उसी में वह टोकरी आसमान उठा कर ले गया होगा। कल सुबह को वह टोकरी वापस कर देगा।"

रब्बा जब अगली सुबह सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि उनकी टोकरी तो एक बादल पर बैठी नीचे आ रही थी। जब उन्होंने टोकरी को इस तरह से आते देखा तो दोनों बहुत खुश हुए क्योंकि वे बहुत भूखे थे।

जब वे खा रहे थे तो आसमान काला हो गया तो उन्होंने ऊपर देखा तो क्या देखा कि एक बहुत बड़ा बादल उनके सिर पर था। समुद्र में से एक बहुत ही बड़ा और मजबूत पेड़ निकल रहा था।

वे लोग इस बात की जानकारी लेने के लिये सावधानी से आगे बढ़े। बिजली की सी आवाज आयी — "सावधान। मैं पानी में

खड़ी एक चिड़िया हूँ। यह बहुत गहरा है और इसमें बहुत तेज़ बहाव है कि सात साल पहले इसमें एक कुल्हाड़ी गिर पड़ी थी और अभी तक तली में नहीं पहुँची है।"

रब्बा और अली दोनों ही यह सुन कर धरती पर खड़े खड़े काँपने लगे। आखिर रब्बा बोले — "ओ ताकतवर चिड़िया हमें तुम्हारी सहायता चाहिये। हम लोग नीच जिन्न होरमुज़ को पाने के लिये उत्सुक हैं ताकि हम उसे मार कर यहाँ के लोगों को आजाद कर सकें।"

चिड़िया बोली "मेरे पीछे पीछे आओ।" कह कर चिड़िया बादल की तरह से किनारे किनारे उड़ चली। रब्बा और अली उसके पीछे पीछे अपने अपने घोड़ों पर चले।

अचानक अली समुद्र की तरफ इशारा करते हुए बोला "वह देखिये।"

एक बहुत बड़ा साँप और एक ड्रैगन आपस में लड़ रहे थे। आखीर में वह समुद्री साँप ने जो उस व्हेल के जैसा ही बड़ा था जिसने समुद्र के किनारे के साठ शहर बर्बाद कर दिये थे ड्रैगन को निगल लिया। जैसे ही उसने यह किया तो चिड़िया ने नीचे की तरफ एक कूद लगायी और साँप को निगल लिया।

चिड़िया बोली — "अरे मेरे नाश्ते के लिये यह तो बड़ा अच्छा कीड़ा था।"

उसके बाद वह एक बड़े से पेड़ की तरफ उड़ी जो अभी प्रगट हुआ था। वह पेड़ इतना ऊँचा था कि उसकी ऊपर वाली शाखाऐं बादलों में जा कर छिप गयी थीं। वह चिड़िया उस पेड़ की एक शाख पर जा कर बैठ गयी।

चिड़िया बोली — "तुम लोग किनारे किनारे आगे बढ़ते रहो जब तक कि तुम दो पुलों तक न आ जाओ। वहॉ तुम्हें होरमुज़ मिल जायेगा। उसे दो प्याले वाइन पीने को देना तब तुम उसे मार सकते हो। पर ध्यान रखना कि उसकी टोपी से हीरा निकाल लेना। मैं ज़िज़[56] तुम्हें यह चेतावनी देती हूॅ।"

रब्बा ने चिड़िया को उसकी सहायता के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अली के साथ आगे अपने रास्ते पर चल दिये। तीन दिन बाद वे एक नदी के पास आये जिसके ऊपर दो पुल बने हुए थे। वहॉ होरमुज़ दोनों पुलों पर एक एक पैर रखे खड़ा था।

जैसे ही उसने इन दोनों को देखा तो वह तो भागने लगा पर रब्बा उसके पीछे से चिल्लाये — "हम तुम्हारे लिये एक बहुत बढ़िया वाइन ले कर आये हैं।" यह सुन कर वह लौटने लगा।

रब्बा ने दो प्याले लिये और उनमें वाइन भरी तो होरमुज़ ने अपने होठों पर अपनी जबान फेरते हुए दोनों हाथों में दोनों प्याले

[56] Ziz – the large bird

पकड़ लिये। रब्बा के दॉये हाथ का प्याला अपने बॉये हाथ में और उनके बॉये हाथ का प्याला अपने दॉये हाथ में।

वह बोला "देखो।" कह कर उसने वह वाइन हवा में उछाल दी तो उसके दॉये हाथ के प्याले की वाइन बॉये हाथ के प्याले में और बॉये हाथ के प्याले की वाइन दॉये हाथ के प्याले में गिर गयी। एक बूँद भी इधर उधर नहीं गिरी। उसके बाद वह दोनों प्याले वाइन एक साथ पी गया।

उसी समय वह तो बेहोश सा नीचे गिर पड़ा। और रब्बा ने कई बार अपना भाला मार कर उसे मार दिया। उस समय तो वह मरा हुआ सा लग रहा था पर वह तो फिर उठ गया।

रब्बा चिल्लाये "हीरा।" तो अली ने तुरन्त ही उसकी टोपी से हीरा निकाल लिया। तब जा कर वह राक्षस मरा।

रब्बा बोले — "अब हम लोग वापस जा सकते हैं।" और वे वहॉ से उसके शरीर को ले कर तुरन्त ही चल दिये।

वे बीच में केवल खाना खाने के लिये ही रुके। उन्होंने ऐसा काम पहली बार ही किया था। अली ने एक जानवर मारा और रब्बा ने कुछ मछलियॉ पकड़ ली थीं। जब वे पक रही थीं तो रब्बा ने अपनी जेब से जिन्न का हीरा निकाला और देखने लगा।

जैसे ही उन्होंने हीरा बाहर निकाला तो वह मरा हुआ जानवर और मछलियाँ ज़िन्दा हो गयीं और पकाने वाले बर्तन से बाहर कूद पड़ीं।

रब्बा बोले — "यह तो जादुई हीरा लगता है जिससे मरे हुए को ज़िन्दा किया जा सकता है। जब हम खाना खायेंगे तो हम इसे ढक कर रखेंगे।"[57]

उन्होंने ऐसा ही किया। फिर से कई दिनों की यात्रा के बाद वह उसी दीवार के पास आ गये जहाँ से अन्दर गये थे। और अन्त में वे वहाँ उन लोगों के पास आ गये जहाँ से उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की थी।

सब लोग उन्हें देख कर बहुत खुश हुए। कुल मिला कर वे वहाँ से एक साल तक दूर रहे। यह जान कर तो लोग बहुत ही खुश थे कि होरमुज़ मारा गया। उन्होंने उसका मरा हुआ शरीर भी देखा।

अब तक वे उस बड़ी व्हेल के शरीर पर बहुत मेहनत से काम कर रहे थे। साथ में वे साठ शहर भी दोबारा बनाने की कोशिश कर रहे थे जो व्हेल की वजह से नष्ट हो गये थे। व्हेल की हड्डियों और खालों से अपने लिये तम्बू खड़े कर रहे थे।

---

[57] Why? Because it had the power to bring a dead to life. If they kept it open it might bring the dead animal to life again.

जादुई हीरे की सहायता से रब्बा ने ज़िज़ को बुलाया तो उसने उनके जहाज़ को जो जंगल में आ पड़ा था अपनी चोंच में उठाया और समुद्र के पानी पर रख दिया। रब्बा और अली ने अपने साथियों को फिर से इकट्ठा किया और अपने देश की तरफ लौट पड़े।

वहॉ के सब रहने वाले किनारे पर खड़े हो कर तब तक हाथ हिलाते रहे जब तक जहाज़ ऑखों से ओझल नहीं हो गया। उनको रब्बा के जाने का बहुत दुख था पर वे इस बात से बहुत खुश थे कि होरमुज़ मर गया था तो अब वे उसके नियन्त्रण से मुक्त थे।

12 निर्वासित राजकुमार[58]

एक बार एक राजा थे जिनके केवल एक ही बेटा था। राजा को उससे बहुत आशाऐं थीं। किसी को भी उस राजकुमार को, यहाँ तक कि उसके सबसे बड़े टीचर को भी, उसकी गलतियों पर किसी तरह भी नहीं डाँट सकते थे। सो वह जब बड़ा हुआ तब तक बिल्कुल बिगड़ चुका था।

उसके अन्दर बहुत दोष थे। पर जो सबसे बड़ी खराबी उसके अन्दर थी वह थी उसका घमंडी निर्दयी और जिद्दी होना। स्वाभाविक है कि वह स्वार्थी भी था और किसी का कहा नहीं मानता था।

जब उससे कभी पढ़ने के लिये कहा जाता तो वह कहता — "मैं तो राजकुमार हूँ। कुछ ही साल की तो बात है फिर मैं तुम्हारा राजा होने वाला हूँ। मुझे वह सब जानने की जरूरत ही नहीं है जो साधारण लोग जानते हैं।

मेरे लिये इतना ही काफी है कि मैं राजगद्दी पर बैठूँ और राज करूँ। सब लोग मेरा कहा मानें। जो मैं कहूँ वह देश का नियम हो और लोग कहें कि "बस राजा कुछ गलत नहीं कह सकता।"

---

[58] The Outcast Prince. (Tale No 12)

वह बहुत सुन्दर और अच्छा तन्दुरुस्त नौजवान था। इस समय में भी उसने अपने ढंग चाल से राजा की जनता को डरा कर रखा हुआ था। जब वह राज्य में सड़क पर निकलता तो लोग अपने अपने घरों में भाग जाते। दरवाजे बन्द कर लेते और फिर झिरियों में से डर से देखते।

वह एक लापरवाह सवार था। वह कोई अभागा ही होता जो कोई उसके रास्ते में आता। चाहे कोई आदमी हो स्त्री हो बच्चा हो वह किसी को नहीं छोड़ता। उसी के ऊपर अपना घोड़ा चढ़ा देता या फिर अपने चाबुक से उन्हें मार देता जो वह हमेशा अपने साथ रखता था। वह उनके ऊपर हँसता जबकि वे बेचारे रो रहे होते।

उसका जनता के साथ इतना बुरा व्यवहार था कि लोगों ने निश्चय किया कि अब वे और चुप नहीं बैठेंगे। उन्होंने खुले में राजकुमार को बुरा कहना शुरू कर दिया। उन्होंने राजा से भी प्रार्थना की कि वह अपने बेटे को रोके।

राजा जनता की प्रार्थना को टाल नहीं सका। पहले तो वह कुछ गुस्सा सा हुआ पर जब उसने देखा कि उसकी जनता इस बारे में उसका विद्रोह करने जा रही है तो उसने यही उचित समझा कि वह अपने बेटे के ऊपर लगाये गये इलजामों की छानबीन करे।

तीन जजों की एक टोली बिठायी गयी। उन्होंने पूरी तरह से जॉच की और फिर अपनी रिपोर्ट राजा को दी। वे इस बात को

कहने से ज़रा भी नहीं हिचके कि राजकुमार का व्यवहार जनता के प्रति ठीक नहीं था। राजा के न्याय के स्वभाव ने तुरन्त ही जान लिया कि यह उसके बेटे के बेवकूफी भरे घमंड के कारण है।

उसने कहा — "मेरी जनता ठीक ही कहती है और उसका विचार भी ठीक है। पहले मैं सोचता था कि जनता शायद शाही का अपमान कर रही है पर ऐसा नहीं है।

मुझे उनसे माफी मॉगनी चाहिये और उनका नुकसान भरना चाहिये। मुझे इसका प्रायश्चित भी करना चाहिये। वह इसकी सजा से बच नहीं पायेगा।"

यह सोच कर राजा ने अपने बेटे को बुलाया और राजकुमार बड़े घमंड के साथ अपना चाबुक अपने हाथ में लिये जजों पर कुटिलता से हॅसते हुए शाही न्याय के कमरे में घुसा। जज हिज़ मैजेस्टी के दॉये और बॉये बैठे हुए थे।

राजा ने पूछा — "क्या तुमको मालूम है कि इस समय तुम्हें यहॉ देश के जजों के सामने क्यों बुलाया गया है।"

राजकुमार का अकड़ भरा जवाब था — "मैं नहीं जानता और न ही मुझे उसकी कोई परवाह है। जनता की बेवकूफी भरी बातों में मेरी कोई रुचि नहीं है।"

यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हुआ। राजा ने राजकुमार का ऐसा व्यवहार पहले कभी नहीं देखा था। अपने पिता के सामने तो

वह हमेशा ही बहुत आदरपूर्वक व्यवहार करता था। फिर आज उसे क्या हो गया।

राजा ने गुस्से में भर कर कहा — "तुमने अपना नाम बदनाम किया है और अपनी माँ की याद भी ओ बेवकूफ राजकुमार। तुमने जनता के सामने अपने आपको और मुझे दोनों को शर्मिन्दा किया है।"

इसके बाद भी राजकुमार ने यह मामला एक हँसी बात समझ कर हँसी में उड़ा दिया। पर फिर वह जल्दी ही समझ गया कि राजा मजाक के मूड में नहीं है गम्भीर है।

गम्भीरता से सीधे खड़े हो कर हिज़ मैजेस्टी ने अपनी तेज़ और गम्भीर आवाज में उसको सजा सुना दी।

जब सारे जज सलाहकार राज्य के औफीसर और जनता के प्रतिनिधि शान्ति से यह सजा सुनने के लिये खड़े हुए थे वह बोला — "आप सबको यह पता हो कि इन बातों को एकमत से साबित किया जा चुका है कि राजकुमार मेरे बेटे ने इस देश की जनता के प्रति इस देश के नियमों का पालन नहीं किया है। उनका उसने अपमान किया है।

तो मैं अपने सलाहकारों की सलाह पर अपनी शाही इच्छा से उसे दंड देता हूँ। इस सजा के अनुसार मैं यह घोषणा करता हूँ कि राजकुमार को बिना किसी पैसे के दुनियाँ में भेज दिया जाये और

वह तब तक इस राज्य में न घुसे जब तक वह पॉच तक गिनती गिनना न सीख ले।

और साथ में यह भी पता रहे कि अगर वह मेरा बेटा या राजकुमार होने के नाते कोई इच्छा प्रगट करे भी तो भी कोई उसकी जरूरतों की परवाह न करे।"

यह सुन कर राजकुमार तो वहीं का वहीं खड़ा रह गया। वह तो सोचता ही रह गया कि इस भेद भरे वाक्य का क्या मतलब हो सकता है। कोई भी उसे उसका मतलब नहीं बता सका। किसी से पूछा भी तो उसने बस अपने कन्धे उचका दिये। कोई उससे बोलना नहीं चाहता था।

ऍधेरी रात में जब केवल तारे ही इस घटना के गवाह थे देश निकाला दिये जाने वाले को जैसे कपड़े पहनाये जाते हैं वैसे कपड़े पहन कर उसके सुनहरी घुॅघराले बालों को कटवा कर उसे महल से बाहर निकाल कर सड़क पर छोड़ दिया गया।

वह बेचारा इतना घबराया हुआ था कि रो भी नहीं पा रहा था। उसने अपने आपको समझाने की कोशिश की यह एक बुरा सपना था जिससे वह सुबह को जब जागेगा तो अपने सुन्दर कमरे में होगा अपने मुलायम बिछौने पर लेटा होगा अपनी कढ़ाई की गयी रेशमी रजाई ओढ़े होगा।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। जब वह सुबह जागा तो उसने अपने आपको एक हैज के नीचे लेटा हुआ थका हुआ उसका शरीर दर्द से अकड़ा हुआ और बहुत भूखा पाया। अब उसे विश्वास हो गया था कि यह कोई सपना नहीं था यह तो सच था। वह अकेला था उसके साथ कोई नहीं था। उसके पास खाना कमाने का कोई साधन भी नहीं था।

अब उसकी समझ में आ रहा था कि गरीबों को कैसी कैसी मुसीबतों से गुजरना पड़ता है। अब उसको महसूस हो रहा था कि किस तरह से उसने गरीबों को तंग किया था। अब उसे लग रहा था कि उसे उनके साथ किये गये अपने निर्दयी व्यवहार का किस तरह बदला चुकाना पड़ रहा था।

उस दिन सारा दिन वह इधर उधर मारा मारा फिरता रहा। उसके पैर दुखने लगे थे और वह पूरी तरीके से थक गया था।

सड़क पर ही एक मकान था वह उसी मकान की सीढ़ियों पर जा कर बैठ गया और वहॉ उसने खाना और शरण मॉगी। वह उसे वहॉ मिल गयी। अगले दिन वह खेतों पर काम करने पहुॅचा।

पर उसके हाथ तो काम करने के आदी नहीं थे सो उसको वह काम छोड़ना पड़ा। उसके साथी लोग उस पर हॅस रहे थे।

अपना घमंड चूर चूर होने की वजह से भारी दिल से वह वहॉ से इस बात का रहस्य जाने के लिये चला कि पॉच तक गिनती गिनना सीखने का क्या मतलब होता है।

गर्मियों के काफी दिन और रातें जाड़े की बर्फ पतझड़ की बारिश और वसन्त की ठंडी हवा में गुजरने के बाद उसे एक साल हो गया पर उसने कुछ सीखा नहीं बल्कि वह यह भी भूल गया कि वह वहॉ इस तरह से क्यों घूम रहा था।

घूमते घूमते वह अपने घर से बहुत दूर निकल आया। अब वह अक्सर ही भूखा प्यास रहता। एक दिन में जितना खाना उसे खाना चाहिये उससे उसे कम ही मिलता। रात में ठंडी जमीन ही उसका बिछौना होता।

उसका समय ऐसे ही बेकार जा रहा था। कभी कभी तो उसको एक हफ्ते तक आदमी की आवाज भी सुनने को नहीं मिलती। वह अब भिखारी था। जब भी उसे कोई कुछ देता, कभी कठोर शब्दों से तो कभी नम्रता से, तो वह उसे धन्यवाद के साथ लेता।ि

जब कभी वह कुछ कर सकता तो वह कुछ सिक्कों के लिये कर लेता। क्योंकि किसी रैबाई[59] ने जिसने उसके ऊपर दया की थी उससे कहा था — "बजाय घमंड से यह कहने के कि "मैं तो एक अमीर आदमी का बेटा हूॅ।" कोई भी काम करो तो ईमानदारी से

[59] Rabbi – Jewish religious people

मन लगा कर करो चाहे शुरू शुरू में वह काम तुम्हें घिनौना ही क्यों न लगे।"

एक पल को तो उसे लगा कि यह रैबाई उसका रहस्य जान गया है पर उस विद्वान आदमी ने कहा कि वह तो यह केवल टालमुड[60] से पढ़ कर ही कह रहा था।

जितना उसे गिनना आता था उसके अनुसार जिस दिन से उसको सजा मिली थी उसके ठीक एक साल बाद राजकुमार ने अपने आपको एक अजनबी देश में पाया। वहाँ एक भिखारी से उसकी जान पहचान हो गयी जिसने उसे दोस्त कहा।

भिखारी ने कहा — "मेरे साथ आओ दोस्त। मैं अपने समुदाय की रस्मो रिवाज जानता हूँ। मैं तुम्हें बताऊँगा कि बिना पैसे के अच्छा खाना और रहने की जगह कहाँ मिलेंगी।

इस शहर में एक सुन्दर और भली राजकुमारी ने एक जगह बना रखी है जहाँ सारे यात्री मुफ्त में ठहर सकते हैं और खाना खा सकते हैं। वहाँ से किसी को वापस नहीं भेजा जाता। मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ।"

वह भिखारी अपनी बात का पक्का था। वह राजकुमार को उसी जगह ले गया। बहुत दिनों बाद उसने वहाँ पेट भर स्वादिष्ट खाना खाया और उसे बहुत अच्छी ठहरने की जगह मिली क्योंकि

---

[60] Talmud – see "Glossary of Jew Religion" at the back of this book

वह बाहर से आया था। यह देख कर उसकी ऑखों में ऑसू आ गये।

वह एक कोने में बैठ कर रो रहा था कि उससे किसी ने बड़ी मीठी आवाज में पूछा — "तुम क्यों रो रहे हो?"

उसने अपना सिर उठाया तो वहॉ उसे एक बहुत ही सुन्दर स्त्री खड़ी दिखायी दी। वैसी सुन्दर स्त्री राजकुमार ने पहले कभी नहीं देखी थी। वह उठा और उसने सामने झुक गया पर वह बोला कुछ नहीं।

तभी एक दूसरी मीठी आवाज उसकी नौकरानी की आयी — "जवाब दो। राजकुमारी जी कुछ पूछ रही हैं।"

राजकुमारी। हॉ इतनी सुन्दर स्त्री एक राजकुमारी के अलावा और कौन हो सकती है। और उसकी इतनी नम्र आवाज। उसे याद आया कि जब वह राजकुमार था तब वह कितनी कठोरता से बोलता था और कभी किसी दान वाली जगह भी नहीं गया था।

राजकुमारी बोली — "लगता है तुम्हारी कोई कहानी है। तुम मुझे बताओ न। मैं उसे छिपा कर ही रखूॅगी किसी को बताऊॅगी नहीं। तुम मुझ पर भरोसा रख सकते हो। मैं तुम्हें धोखा नहीं दूॅगी।"

राजकुमार उसको अपनी कहानी सुनाने ही वाला था फिर वह हिचकिचा गया और बोला — "अफसोस मैं एक दुखी खानाबदोश

भिखारी हूँ। जैसा कि आप देख सकती हैं राजकुमारी जी। पर मेरे ऊपर दया करने की जरूरत नहीं है।

मैं आपकी दया के काबिल नहीं हूँ। एक साल पहले ही मैं एक बहुत सुन्दर मकान में रह रहा था। मैं एक बहुत अमीर व्यापारी का एकलौता बेटा था। मेरे पिता ने मेरे ऊपर अपना सारा प्रेम और धन लुटा रखा था।

लेकिन मैं बहुत नीच था। मैं लोगों के प्रति बहुत निर्दयी था। तो मुझे घर से निकाल दिया गया और तब तक लौटने के लिये मना कर दिया गया जब तक मैं पॉच तक गिनना न सीख लूँ। यह मैंने अभी तक सीखा नहीं है इसी लिये मैं अब ऐसी ज़िन्दगी गुजारने पर मजबूर हूँ। मेरी यही कहानी है।"

राजकुमारी बुदबुदायी — "अजीब बात है। पर मुझसे जो कुछ भी हो सकेगा मैं तुम्हारे लिये अवश्य करूँगी।"

अगले दिन वह फिर उस जगह आयी और अपने साथ एक रैबाई को ले कर आयी। यह वही रैबाई था जिसने उसे पहले अच्छी सलाह दी थी। उस समय रैबाई ने ऐसा कोई इशारा नहीं किया कि जिससे किसी को यह लगे कि उसने इस अजनबी को पहले कभी देखा है।

राजकुमारी बोली — "ये ज्यूज़ के एक बहुत बड़े विद्वान हैं ये तुम्हें सलाह देंगे।"

फिर राजकुमारी ने अजनबी से कहा कि वह अपनी बात रैबाई को बताये ताकि वह उसे ठीक सलाह दे सकें। सो उसने अपनी कहानी रैबाई के सामने दोहरा दी।

रैबाई बोले — "बड़ी सादी सी बात है और दुर्भाग्य से बहुत ही आसान भी है जिसे घमंडी लोग अनदेखा कर देते हैं। मेरे बच्चे मुझे बताओ। क्या कभी तुमने भूख अनुभव की है।"

राजकुमार बोला — "हॉ वह तो मैंने की है।"

रैबाई बोले — "तो इसे एक गिन लो। अब यह बताओ कि क्या तुम्हें कभी ठंड लगी है।"

राजकुमार बोला — "हॉ लगी है।"

रैबाई बोले — "तो इसको तुम दो गिन लो। अब तुम मुझे यह बताओ कि दया से भरा दिल क्या होता है।"

राजकुमार बोला — "हॉ वह मुझे एक बहुत ही गरीब और इस राजकुमारी से मिला।"

रैबाई बोले — "तब तो तुम अपनी पढ़ाई में काफी आगे बढ़ गये हो। इसे तुम तीन गिन लो। क्या कभी तुम किसी के प्रति ऐहसानमन्द हुए हो।"

राजकुमार बोला — "हॉ हुआ तो हूॅ अक्सर पिछले साल में मैं हुआ हूॅ और अब भी हूॅ।"

रैबाई बोले — "इसे तुम चार गिन सकते हो। अब मेरे बच्चे यह बताओ कि तुमने अब तक सबसे बड़ी क्या सीख सीखी है। क्या तुम दिल से नम्र बन गये हो।"

ऑखों में ऑसू भर कर राजकुमार बोला — "हॉ अब मैं दिल से नम्र बन गया हूॅ।"

रैबाई बोले — "इसे तुम पॉच गिन सकते हो। इस तरह से अब तुम पॉच गिन सकते हो। अब तुम अपने पिता के पास लौट जाओ। वह जरूर ही कोई अक्लमन्द और न्यायप्रिय आदमी होंगे जिन्होंने तुम्हारे ऊपर यह बन्धन लगाया। वह तुम्हें जरूर माफ कर देंगे। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

कह कर रैबाई ने अपने हाथ उठा कर राजकुमार के सिर पर रखा और आशीर्वाद के शब्द पढ़े।

राजकुमारी बोली — "मेरी भी शुभकामनाऐं तुम्हारे साथ हैं।" कह कर राजकुमारी ने उसे अपना हाथ चूमने के लिये दिया।

राजकुमार बोला — "यह एक फटे कपड़े पहने भिखारी की सीमा में तो नहीं आता कि वह इतनी बड़ी राजकुमारी से अपने मन की बात कहे। पर मैं फिर लौट कर आऊॅगा और अगर उस समय आप मुझे योग्य समझती हों तो हो सकता है कि उस समय आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लें।"

राजकुमारी हॅस कर बोली — "हो सकता है।"

राजकुमार वहॉ से जल्दी से अपने घर चला गया और वहॉ पहुँच कर जो कुछ उसके साथ हुआ था वह सब बताया। बूढ़े बाप ने सब कुछ ध्यान से सुना और अपने बेटे को गले लगा लिया।

उसने फिर उसे माफ कर दिया और गर्व से सबके सामने राजकुमार घोषित कर दिया। अब वह एक बिल्कुल बदला हुआ आदमी था और अपने किसी भी निर्दयी कर्म के लिये अपने आपको इतना अधिक दोषी नहीं समझता था।

कई महीने गुजर जाने से पहले ही वह उस शहर लौटा जहॉ उसने राजकुमारी को देखा था। अबकी बार उसके साथ कई नौकर चाकर थे जिनके सबके हाथों में भेंटें थीं।

जब उसे राजकुमारी से मिलने का मौका मिला तो वह बोला — "राजकुमारी जी मैंने आपसे कहा था न कि एक दिन मैं जरूर लौटूॅगा आज मैं वापस आ गया हूॅ।"

राजकुमारी बोली — "पर मैंने तो तुम्हें कभी देखा नहीं।" तब राजकुमार ने उसे अपनी पुरानी मुलाकात के बारे में बताया तो वह उससे मिल कर बहुत खुश हुई।

राजकुमार बोला — "अब आप अपने काम पर ताज रखिये जिसने मुझे इन्सान बना दिया जिसे मैंने अपनी बेवकूफी से अपने बुरे व्यवहार से निकाल फेंक दिया था। मैं आपसे शादी करना चाहता हूॅ।

और आपकी सलाह और मार्गदर्शन से मैं राजाओं में बहुत अच्छा राजा बनूँगा और आप मेरी सुन्दर और बुद्धिमान रानी। जैसी पहले कभी किसी ने न देखी होगी।"

राजकुमारी ने उसे उसी समय कोई जवाब नहीं दिया पर ठीक समय पर दिया। राजकुमार एक बार फिर से घर लौटा और पर इस बार वह बहुत खुश था।

उसके बराबर में शाही रथ पर राजकुमारी बैठी हुई थी शानदार और मुस्कुराती हुई क्योंकि सब लोगों ने उसके रास्ते में फूल बिखेर कर उसका स्वागत किया। अब देश में शान्ति और खुशहाली थी। लोग बहुत खुश थे।

13 बोस्तॉई की कहानी[61]

यह बहुत पुरानी बात है जब फारस एक बहुत सुन्दर और प्रसिद्ध देश हुआ करता था। जहॉ गुलाब के बहुत सारे बाग बागीचे थे और बड़े बड़े महल थे वहॉ होरमुज़[62] नाम का एक बादशाह राज किया करता था।

यह फारस का राजा एक बहुत ही निर्दयी राजा था। यह अपनी जनता के साथ बहुत अत्याचार करता था और उन्हें शान्ति से नहीं रहने देता था। इसके अलावा यह ज्यूज़ से बहुत घृणा करता था।

वह अपने बड़े वज़ीर से कहता — "ये अब्राहम की सन्तान जानते नहीं हैं कि कब इनकी पिटायी हो जाये। मुझे याद नहीं पड़ता कि कितनी बार लोगों ने मुझसे इनकी शिकायत की है कि इन्हें देश से बिल्कुल निकाल दिया जाये पर कोई भी चीज़ इनकी आत्मा को कुचल देने में काम ही नहीं की। मुझे बताओ कि इसमें राज़ क्या है।"

वज़ीर बोला — "जनाब क्योंकि इनको अपने भविष्य में पूरा विश्वास है।"

---

[61] The Story of Bostanai. (Tale No 13)

[62] Hormuz – King of Persia

राजा ने कुछ गुस्से से पूछा — "इस बात से तुम्हारा क्या मतलब है।"

वज़ीर जल्दी से बोला — "मैं वही कहूँगा जो मैंने उनके विद्वान लोगों से सुना है। उनका यह विश्वास है कि वे लोग अपने देश में एक हो कर रहेंगे।"

होरमुज़ बीच में ही बोला — "क्या अपने राजा के नियन्त्रण में?"

वज़ीर शान्ति से बोला — "डेविड[63] के शाही खानदान के वंशज द्वारा।"

राजा ने अपना पैर गुस्से से ज़ोर से पटका और बोला — "उनका इतना साहस कैसे हुआ कि वह मेरे अलावा किसी और शाह के बारे में सोच भी सकें।"

क्योंकि अपनी जनता पर राज करने का यह विचार उसके दिमाग में इसलिये था ताकि वह उनके प्रति रोज निर्दयता का व्यवहार कर सके।

तब अचानक ही वह बोला — "ज़रा सोचो अगर कोई ऐसा आदमी ही न बचे जो डेविड के वंश का हो तो क्या उनका विश्वास चूर चूर हो जायेगा।"

"हो सकता है।"

---

[63] David – See "Glossary of Jew Religion" given at the back of the book

शाह बोला — "तो फिर ऐसा ही हो। इस डेविड के पूरे वंश को ही खत्म कर दो।"

कह कर उसने अपने फाँसी देने वालों को बुलाया और जब वे सब उसके सामने एक लाइन में खड़े हो गये तो उसने उन नीच लोगों को अपनी बुरी नजर से देखा।

उसने उनसे कड़ी आवाज में कहा — "आज से मैं डेविड के पूरे वंश को तुम लोगों को सौंपता हूँ। सारे फारस के ज्यूज़ में जितने भी डेविड के वंशज हैं उन सबको तुरन्त ही मार दो। ध्यान रहे कि उनमें से एक भी चाहे वह आदमी हो या स्त्री या फिर कोई बच्चा कोई ज़िन्दा नहीं बचना चाहिये।"

फिर उसने अपने वज़ीर की तरफ देख कर कहा — "अगर मेरा हुक्म शब्द ब शब्द न माना गया तो तुमको हमारी नौकरी से निकाल दिया जायेगा।"

उनको जाने का इशारा कर के वह आने बाली मौतों की कल्पना कर के आनन्द लेने लगा मुस्कुराने लगा।

अब क्या था रोज ब रोज शाह के पास मारने की खबर आने लगीं। इसका मतलब यह था कि उसका हुक्म माना जा रहा था। सारे देश में हाहाकार मच रहा था क्योंकि इस तरह का निर्दयी कत्ले आम लड़ाई से कहीं अधिक बुरा और भयानक था। क्योंकि कोई इसमें अपना बचाव नहीं कर सकत था।

मारने वालों के लिये उस आदमी के ऊपर केवल शक करना ही काफी था कि वह डेविड के वंश का है।

वे अपना ज़रा सा भी समय बर्बाद नहीं कर रहे थे और न ही शक को जाने दे रहे थे। जिसके ऊपर उनको ज़रा सा भी शक होता था कि यह आदमी डेविड के वंश का है तो वे उसको तुरन्त ही मार देते थे।

शाह हर रात उन लोगों के नामों की सूची पढ़ता और आनन्दित हो कर हॅसता। आखिर उसे बताया गया कि सभी लोगों को मार दिया गया है।

खुश होते हुए उसने अपने हाथ मलते हुए कहा "यह अच्छा हुआ। यह अच्छा हुआ। आज की रात मैं शान्ति से सोऊॅगा।"

उस रात वह अपने गुलाब के बागीचे में एक कमरे में सोया। दुनियॉ में कहीं भी इतने शानदार और खुशबूदार गुलाब नहीं थे जितने कि फारस में थे।

सोते समय वह बुदबुदाया "आज मुझे बहुत अच्छे अच्छे सपने आयेंगे।" पर दुर्भाग्य से उस रात उसे एक भयानक डरावना सपना दिखायी दिया।

उसने सपने में देखा कि वह अपने गुलाब के बागीचे में घूम रहा है पर बजाय उन पेड़ों से आनन्द लेने के वह बहुत गुस्सा था। उसने पूछा "क्या यहॉ कोई सफेद पीले और गुलाबी रंग का गुलाब नहीं

है।" पर उसे कोई जवाब नहीं मिला तो वह परेशानी में फिर बुदबुदाया "यहाँ तो सारे फूल लाल ही लाल हैं।"

वह एक बहुत सारे फूलों से लदे हुए पेड़ के पास रुका और उससे पूछा — "तुम मुझे बताओ कि तुम पूरे के पूरे लाल क्यों हो?"

गुलाब बोला — "क्योंकि जिन निर्दोषों का खून बहाया गया है वह शाही खून था उसी से सारी धरती भीग गयी है इसलिये फारस में इस मौसम में अब केवल लाल रंग के फूल ही खिलेंगे।"

"आह।" कह कर शाह ने अपनी तलवार उठायी और उसे फूलों में इधर उधर चलाने लगा। सुन्दर फूल टूट कर जमीन पर नीचे गिर गये। वह अपनी तलवार तब तक चलाता रहा जब तक कि सारा बागीचा लाल फूलों की लाल पंखुरियों से ढक नहीं गया। ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ खून का कोई तालाब सा बन गया हो।

आखिर वहाँ फूलों का केवल एक ही पेड़ बचा। जैसे ही शाह ने उसे काटने के लिये अपनी तलवार उठायी पीछे से एक बूढ़ा आया और उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

शाह ने उसकी तरफ गुस्से से देखते हुए पूछा — "तुम कौन हो और कहाँ से आये हो।"

उस बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया। वह शाह की आँखों में घूरता रहा। अचानक उसने अपना हाथ ऊपर उठाया और शाह के

ऊपर मारा कि वह जमीन पर लुढ़क कर नीचे गिर पड़ा। वह आश्चर्यचकित सा फूलों की पंखुरियों के बीच में पड़ा था और ऊपर बूढ़े की तरफ देख रहा था।

बूढ़े ने पूछा — "क्या तुमने जितना विनाश कर दिया है उससे तुम सन्तुष्ट नहीं हो। क्या तुम्हारा इस आखिरी गुलाब के पेड़ को नष्ट कर देना भी जरूरी है?"

बूढ़ा उस तलवार को उठाने के लिये झुका जो शाह के हाथ से फिसल गयी थी।

होरमुज़ को लगा कि अब वह बूढ़ा उसे मार देगा सो वह चिल्लाया "नहीं नहीं।" और यह कहते हुए बूढ़े के सामने घुटनों पर बैठ गया और उससे विनती की — "तुम मेरी जान मत लो। मुझे छोड़ दो मैं इस आखिरी पेड़ को छोड़ दूँगा और इसकी प्यार से देखभाल करूँगा।"

बूढ़ा उसके सिर पर तलवार रखे रखे बोला "ऐसा ही हो।"

फिर बूढ़े के हाथ से तलवार गिर गयी। होरमुज़ ने ऊपर देखा तो वह बूढ़ा गायब हो गया था।

शाह जाग गया था। उसका सारा शरीर डर के मारे कॉप रहा था। उसके सिर में बहुत ज़ोर का दर्द था। उसने कॉपते हुए इधर उधर देखा कि क्या वह बूढ़ा उसकी तलवार लिये हुए अभी भी उसके सिर पर खड़ा था।

उसको वहाँ न देख कर उसने अपने जादूगरों को बुलवा भेजा और उनसे कहा कि वे उसके इस सपने का मतलब बतायें। पर उन्होंने जो उसका मतलब उसे समझाया उससे वह खुश नहीं हुआ।

वह बोला — "तुम सब बेवकूफ हो। जाओ और जा कर किसी ऐसे अक्लमन्द आदमी की खोज करो जो मुझे इसका रहस्य बता सके। ज्यूज़ में से किसी साधु को पकड़ कर लाओ।"

शाही नौकर उसका हुक्म बजाने के लिये जाने लगे। उनको अच्छी तरह पता था कि जब होरमुज़ बहुत गुस्से में होता था तब वह किसी की जान भी ले सकता था। उन्होंने तुरन्त ही शहर के एक रैबाई को पकड़ा और उसे साथ ले कर शाह के पास आ गये।

औपचारिकता निभाने के बाद शाह ने उससे पूछा — "क्या तुम सपने का मतलब बता सकते हो?"

रैबाई बोला — "मैं कुछ चीज़ों के मतलब बता सकता हूँ।"

होरमुज़ ने कहा — "तब मेरे सपने का मतलब बताने में फेल मत होना।" कह कर उसने अपना सपना उसको सुना दिया। फिर बोला — "मुझे इसका मतलब जानना ही है नहीं तो... ।"

यह कह कर वह रुक गया। इस समय वह उसे अपनी वह धमकी नहीं देना चाहता था जो वह अक्सर दिया करता था – यानी मारने की धमकी।

रैबाई धीरे धीरे बोला — "इस सपने का मतलब तो बहुत सादा है। वे चीज़ें जिन्हें आदमी लोग या फिर राजा लोग भी अपने सपने में देखते हैं वे उनके दिन में किये गये काम होते हैं।

बागीचे का मतलब है "डेविड का घर" जिसे आपने बर्बाद कर दिया। वह बूढ़ा डेविड खुद था और आपने उससे वायदा किया है कि आप बागीचे के आखिरी पेड़ की देखभाल ठीक से करेंगे यानी उसकी एक आखिरी सन्तान की देखभाल ठीक से करेंगे।"

शाह चुपचाप बैठा यह सुनता रहा फिर जैसे उसकी ऑखों में एक चमक आ गयी और वह उस चमक के साथ बोला — "पर डेविड की सारी सन्तानें तो मरवायी जा चुकी हैं।"

रैबाई बोला — "हॉ मगर एक रह गया है – एक बच्चा जो उसी दिन पैदा हुआ था जिस दिन आपने अपना कत्ले आम रुकवाया था।"

होरमुज़ ने पूछा — "वह कहॉ है?"

रैबाई घबराते हुए बोला — "मगर आपका वायदा... ।"

क्योंकि वह नहीं चाहता था कि वह डेविड की उस आखिरी सन्तान को शाह के हाथों में मरने के लिये सौंपे।

शाह बोला — "मैं अपना वायदा पूरी तरीके से निभाऊॅगा।"

रैबाई बोला — "बच्चा मेरे घर में है। इस खून खराबे से बच कर उसकी मॉ भाग गयी थी और बच्चे को जन्म दे कर मर गयी।"

शाह बोला — "उसे मेरे पास ले आओ। डरो मत।" कह कर उसने अपनी उँगली से एक अँगूठी निकाली और रैबाई को दे कर बोला — "यह मेरा बंधक है। अपनी सुरक्षा के लिये इसे अपने पास सँभाल कर रखना।"

बच्चे को महल लाया गया और शाह ने उसे बड़ी कड़ी नजर से देखा।

फिर बोला — "यह बच्चा हमारे महल में एक राजकुमार की तरह से बड़ा होगा। इसकी जरूरतों का ख्याल रखने के लिये बहुत सारे नौकर चाकर दास हमेशा इसके पास मौजूद रहेंगे। इसे बहुत ही कोमलता और दया के साथ रखा जायेगा। बागीचे में देखे गये सपने के कारण इसका नाम "बोस्तॉई" होगा।"

शाह ने उसका यह नाम इसलिये रखा कि फारसी में गुलाब के बागीचे को "बोस्तॉ" कहते हैं।

उसने बच्चे को अपने रत्नजटित दंड से छुआ और जितने भी लोग वहाँ खड़े हुए थे सबने उस बच्चे को उसके राजकुमार होने के नाते उसको आदर देने के लिये और अपनी वफादारी प्रगट करने के लिये उसे सिर झुकाया

अब होरमुज़ तो किसी भी चीज़ से सन्तुष्ट होने के लिये बहुत निर्दयी था। वह बच्चे को किसी भी तरह का नुकसान पहुँचाने से

डरता था पर यह बच्चा बोस्तॉई क्या सचमुच में ही डेविड का वंशज है उसे इस बात का सबूत चाहिये था।

बच्चा धीरे धीरे बड़ा होने लगा। वह बहुत सुन्दर और अक्लमन्द होता जा रहा था और होरमुज़ कुछ तो डर की वजह से पर ज़्यादातर उसकी सुन्दरता और होशियारी की वजह से उसे बहुत प्यार करता था और हमेशा उसे अपने साथ ही रखता था।

एक दिन होरमुज़ बागीचे में अपने कमरे में बैठा हुआ था और बच्चा गुलाब के फूलों के बीच खेल रहा था। उस दिन दिन बहुत गर्म था तो राजा थोड़ा सा आलसी सा हो रहा था।

वह उस कमरे में तबसे नहीं सोया था जबसे उसने वह भयानक सपना देखा था और उसकी अभी भी वहॉ सोने की कोई इच्छा नहीं थी पर उसने हिम्मत नहीं हारी थी। उसने बोस्तॉई को अपने पास बुलाया और उससे कहा कि जब तक वह थोड़ी देर वहॉ सोता है वह दरवाजे से कहीं न जाये।

वह कुछ देर बहुत आराम से सोया पर जब वह जागा तो उसने देखा कि बच्चा वहीं दरवाजे के पास बिल्कुल बिना हिले डुले खड़ा है।

उसने उसे पुकारा "बोस्तॉई।" बच्चा पलटा तो शाह ने देखा कि उसके एक गाल से खून बह रहा है।

उसने चिन्ता से पूछा "यह क्या है बेटे?"

बोस्तॉई बोला — "वह एक मधुमक्खी काट गयी थी।"

"क्या इसमें दर्द नहीं हो रहा?"

इसके जवाब में बच्चा केवल मुस्कुरा दिया।

राजा ने पूछा — "यह कैसे हुआ?"

बच्चा बोला — "मधुमक्खी ने मुझे तब काटा जब मैं आपका पहरा दे रहा था।"

"पर क्या तुम उसे भगा नहीं सकते थे?"

बच्चा बोला — "डेविड मेरे पूर्वज थे और राजा की उपस्थिति में मुझे बिना हिले डुले खड़ा रहना चाहिये जब तक कि वह खुद मुझे हिलने के लिये न कह दें इसलिये मैं तो हिल भी नहीं सकता था।"

इससे पहले कि राजा उसे अपनी गोद में उठाता वह बच्चा काफी खून बह जाने की वजह से बेहोश हो कर गिर पड़ा। उसे जल्दी ही होश में ले आया गया। पर इस घटना ने उसके सारे शक दूर कर दिये।

वह बोला — "अब मैं समझ गया कि तुम सचमुच में ही डेविड के वंशज हो क्योंकि इतनी मजबूती और कोई दूसरा दिखा ही नहीं सकता था।"

उसके बाद बोस्तॉई शाह का प्यारा बन गया। जब वह बड़ा हो गया तब वह एक प्रान्त का राजा बना दिया गया। वह बहुत खुश रहा और उसके राज में ज्यूज़ भी बहुत खुश रहे।

14 एक गड़रिये बच्चे से राजा[64]

एक सुनसान मैदान में एक गड़रिया बच्चा अकेला खड़ा था। उसका उस दिन का काम पूरा हो चुका था वह खेतों और जंगलों में इधर उधर घूम कर चिड़ियों की चहचहाहट और पेड़ों की डालियों में से बहती हवा की सरसराहट भी सुन चुका था।

लगता था कि वह चिड़ियों की भाषा जानता था सो वह जानता था कि वे क्या कह रही हैं। वह वहाँ बहती नदी की छल छल बहते पानी आवाज जानता था। ये मीठी आवाजें उसके कानों में हमेशा ही रहती थीं। उसका दिल हमेशा गाता रहता क्योंकि यह गड़रिया लड़का एक कवि था।

कई बार वह चौंक कर पीछे मुड़ कर देखता जैसे कोई उसे पुकार रहा हो। पर एक दिन तो सचमुच ही चौंक पड़ा। उसको लगा कि कोई उससे पुकार कर कह रहा था — "डेविड। डेविड। तुम एक दिन इज़रायल के राजा बनोगे।"

उसने इधर उधर देखा कि यह कौन बोल रहा है पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया सिवाय पेड़ों और फूलों के सो उसने जंगल छोड़ा और एक मैदान में आ कर खड़ा हो गया।

---

[64] From Shepherd-boy to King. (Tale No 14)

उसने दूर एक पहाड़ी देखी तो वह उधर चल दिया। जब वह उस पहाड़ी के पास पहुँचा तो उसने देखा कि उसके ऊपर तो एक बहुत बड़ा पेड़ खड़ा है जिसमें न कोई शाख है और न ही कोई पत्ते। बहुत कठिनाई से वह उस पहाड़ी पर चढ़ा।

वह पहाड़ी एक चिकनी पहाड़ी थी। उस पर कोई घास फूस भी नहीं उग रही थी और न ही कोई पत्थर पड़े हुए थे। बच्चे डेविड ने देखा कि उस पहाड़ी से ऐसी कोई संगीत की सी आवाज भी नहीं आ रही थी जैसी दूसरी पहाड़ियों में से आ रही थी।

जब वह चोटी के ऊपर पहुँच गया तो उसने पेड़ की तरफ आश्चर्य से देखा। यह क्या यह तो सामान्य पेड़ नहीं था यह तो सींग का बना हुआ था।

बच्चा बोला — "कितने आश्चर्य की बात है। लगता है कि यह कोई जादू का पहाड़ है जिसकी बंजर जमीन में कोई पेड़ कोई फूल कोई झाड़ी तक नहीं उग सकती।"

उसने नीचे धरती में से एक मुट्ठी मिट्टी लेने की कोशिश की पर वह उसे निकाल नहीं सका। यहाँ तक कि वह उसे चाकू से भी नहीं निकाल सका क्योंकि जमीन बहुत सख्त थी जैसे उस पर कोई सख्त खाल बिछी हो।

डेविड यह देख कर बहुत परेशान हो गया पर वह एक साहसी बच्चा था सो वह पहाड़ी से नीचे नहीं भागा। उसने सोचा कि

"अगर मैं यहाँ ठहरा तो पता नहीं क्या होगा।" यह सोच कर वह उसी सींग के पेड़ की तली में बैठ गया जो वहाँ चोटी पर खड़ा था और चारों तरफ देखने लगा।

उसने वहाँ एक बड़ी अजीब सी चीज़ देखी कि कुछ जगहों पर जमीन की सतह उठ रही थी और बैठ रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे जमीन के नीचे कुछ हिलडुल रहा हो।

उसने उसको ध्यान से सुनने की कोशिश की तो उसे कुछ लुढ़कने की आवाज सुनायी दी और फिर एक बहुत तेज़ आवाज आयी। उसी समय उसने पहाड़ के दूसरी ओर से कुछ उठता देखा जो हवा में गायब हो गया।

उसे देख कर डेविड आश्चर्य से बोला "लगता है यह तो पूँछ है।"

अगले ही पल उसे सींग पर चढ़ना पड़ गया क्योंकि वह सारा पहाड़ हिल रहा था। वह ऊपर की ओर उठ रहा था। जल्दी ही डेविड ने अपने आपको बादलों में पाया।

धरती तो नीचे बहुत दूर रह गयी थी। सूरज के कारण जो साया बन रहा था उसको देख कर डेविड ने अन्दाजा लगाया कि वह तो किसी बड़े जानवर के सींग से चिपका हुआ था।

वह बोला — "अब मेरी समझ में आया कि यह क्या है। यह पहाड़ी नहीं है यह तो "एक सींग वाला घोड़ा"[65] है। उस समय यह सो रहा होगा जब मैंने इसे पहाड़ी समझा।" अब डेविड यह सोच कर परेशान होने लगा कि वह किस तरह से उस खतरनाक जानवर की पीठ पर से नीचे उतरे।

उसने सोचा — "जब तक यह खाना खाता है तब तक मुझे इन्तजार करना चाहिये। क्योंकि तब यह अपना सिर झुकायेगा और मैं नीचे खिसक जाऊँगा।"

पर उसके लिये तो एक और नया खतरा इन्तजार कर रहा था। दूर कही शेर की दहाड़ सुनायी दी और डेविड को लगा कि वह समझ गया है। शेर गरज कर बोला — "मैं जंगली जानवरों का राजा हूँ मेरे सामने सिर झुकाओ।"

अब शेर तो उस घोड़े के मुकाबले में बहुत ही छोटा था तो डेविड बड़ी कठिनाई से उसे देख पा रहा था। घोड़े ने जब यह हुक्म सुना तो उसने अपना सिर झुकाना शुरू किया तैसे ही डेविड उसके ऊपर से नीचे खिसक गया।

पर यह क्या वह नीचे उतरा तो वह तो सीधा शेर के सामने जा खड़ा हुआ था। जानवरों का राजा अपनी जलती हुई ऑखों के साथ अपनी पूँछ अपने दोनों ओर फटकारते हुए उसके सामने खड़ा

---

[65] Translated for the word "Unicorn"

था। पर डेविड ने एक पल का भी इन्तजार नहीं किया उसने अपनी कमर की पेटी से अपना चाकू निकाला और वह बहादुर लड़का शेर की ओर बढ़ा।

कि तभी एक और आवाज ने उन दोनों का ध्यान खींच लिया था। वह आवाज थी एक हिरन की। हिरन चिल्ला कर बोला — "तुम डरो नहीं बच्चे। आओ तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ। मैं तुम्हें बचा लूँगा।"

इससे पहले कि शेर अपने आश्चर्य से बाहर आता डेविड हिरन पर पहले ही बैठ चुका था और वह हिरन बिजली की सी गति से वहाँ से भाग लिया था। डेविड उसकी पीठ से कस कर चिपक कर बैठा हुआ था।

उसके पीछे शेर के गरजने की आवाज आ रही थी जिसका मतलब था कि शेर उसका पीछा कर रहा था। सुनसान मैदान पार कर के जंगल से होते हुए यह दौड़ जारी रही।

जब हिरन ने देखा कि अब लोग उन्हें देख सकते हैं तब हिरन रुक गया और बोला — "अब तुम सुरक्षित हो। तुम्हें राजा बनना है। मुझे हुक्म था कि मुझे तुम्हें बचाना है। तुम चिन्ता नहीं करना शेर को रास्ता मैं भटका दूँगा।"

डेविड ने हिरन को इतनी अच्छी तरह से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये बहुत धन्यवाद दिया। जैसे ही डेविड हिरन की पीठ से

उतरा हिरन फिर से तेज़ी से भाग गया। शेर फिर से उसका पीछा करने में लगा रहा। जल्दी ही वे दोनों दृष्टि से ओझल हो गये।

डेविड हलके हल्के गाता हुआ अपने घर चला आया। सालों बाद जब डेविड इज़रायल का राजा बना तो उसे अपना शेर से बच कर निकलना याद आया तो उसने इसे एक गीत में बाँध कर एक साम[66] में लिख दिया।

[66] Psalm.

15 जादू का महल[67]

इब्राहीम पर जो शहर का सबसे ज़्यादा बुद्धिमान और पवित्र आदमी था जिसे सब लोग बहुत मानते थे एक बार कुछ बुरे दिन आ गये। उसने अपने दुख के बारे में किसी को नहीं बताया था क्योंकि वह थोड़ा घमंडी था।

वह किसी की भी सहायता लेने से इनकार कर देता जिसे वह जानता कि कोई उसे देता। उसकी भली पत्नी और उसके वफादार पॉच बेटे चुपचाप उस दुख को सहते रहे।

पर इब्राहीम को जब बहुत ज़्यादा दुख हुआ जब उसने देखा कि उसके और उसके घर वालों के कपड़े घिस घिस कर तार तार हो गये थे और भूख से उनके शरीर बहुत पतले हो गये थे।

एक दिन इब्राहीम अपनी पवित्र पुस्तक के सामने बैठा था तो उसने देखा कि उसको उसके शब्द ही दिखायी नहीं दे रहे थे। यह देख कर उसकी ऑखों में ऑसू आ गये और उसके सामने सब कुछ धुँधला हो गया। उसके विचार भी जाने कहॉ भटक गये।

वह कुछ ऐसी जगह का सपना देखने लगा जहॉ भूख प्यास नहीं होती जहॉ कपड़े या किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं होती।

[67] The Magic Palace. (Tale No 15)

उसने एक उसॉस भरी जिसे उसकी पत्नी ने सुन ली। वह उससे मुस्कुराते हुए बोली — “प्रिय। हम लोग भूखे मर रहे हैं। तुमको हमारे पॉचों बेटों का पेट भरने के लिये कोई काम ढूँढने के लिये जरूर जाना चाहिये।”

उसने दुखी हो कर जवाब दिया — “हॉ हॉ। और प्रिये तुम्हारे लिये भी जो हमारा इतने ध्यान से देखभाल करती है।” फिर वह अपने फटे हुए कपड़ों की तरफ इशारा करते हुए बोला “मैं इन फटे हुए कपड़ों में कैसे जाऊँ मुझ जैसे गरीब को कौन रखेगा।”

पत्नी बोली — “मैं तुम्हारे लिये अपने पड़ोसी से कुछ कपड़ों का इन्तजाम करती हूँ। पहले तो उसके पति ने कुछ ना नू की पर फिर मान गया।” उसने अपने पति के लिये एक शाल का इन्तजाम कर लिया था जिसने उसे पूरा ढक लिया था और अब वह कुछ ठीक लगने लगा था।

उसकी भली पत्नी ने अपने शब्दों से उसे खुश किया। उसने अपना डंडा उठाया और सिर सीधा कर के चल दिया। उसका दिल आशाओं से भरा हुआ था। सब लोगों ने बुद्धिमान इब्राहीम को सलाम किया क्योंकि वह तो अक्सर ही बाहर शहर की सड़कों पर दिखायी नहीं देता था।

उसने भी उनके सलामों का बदला मुस्कुरा कर दिया पर उसने अपना चलना नहीं रोका। वह अपने साथियों से कोई ऐहसान लेना

नहीं चाहता था। हालाँकि वह उसकी खुशी से सहायता कर देते। पर वह अजनबियों में जाना चाहता था जहाँ वह काम कर सके और कोई उसे जाने नहीं।

शहर के दरवाजे के बाद जहाँ खजूर के पेड़ उगे हुए थे और दूर रेगिस्तान में ऊँट कुछ कुछ चरते रहते थे उसे एक अजनबी मिला जो एक अरब की तरह से लग रहा था।

उसने इब्राहीम से कहा — "ओ शहर के बुद्धिमान और पवित्र आदमी मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं आपके लिये क्या करूँ क्योंकि मैं आपका गुलाम हूँ।"

इब्राहीम आश्चर्य से बोला — "नहीं नहीं। तुम मेरे साथ मजाक कर रहे हो तुम मेरे गुलाम ऐसे कैसे बन सकते हो। मैं तो खुद ही बहुत गरीब हूँ और अपने लिये काम ढूँढ रहा हूँ। मैं किसी के पास भी काम कर लूँगा जो भी मुझे मेरी पत्नी और कपड़ा और खाना देगा।"

अरब बोला — "तुम अपने आपको इस तरह से मत बेचो। तुम अपने को बेचने की बजाय मुझे बेच दो। मैं एक बहुत ही अच्छा राज[68] हूँ। देखो ये मेरे बनाये हुए प्लान और मौडल। ये मेरी कुशलता के नमूने हैं।"

---

[68] Builder or Mason

उसने बहुत सारे कपड़े पहने हुए थे उनकी तहों में से उसने एक रोल और एक बक्सा निकाला और इब्राहीम को दिखाया। इब्राहीम ने आश्चर्य से उन्हें ले लिया।

रोल पर बहुत ही शानदार और शाही बिल्डिंगों के नक्शे बने हुए थे और बक्से में एक महल का मौडल रखा हुआ था। वह मौडल तो बहुत ही सुन्दर कला का नमूना था। उस पर सारा काम हो रखा था। इब्राहीम ने सबको बड़ी सावधानी से जॉचा।

उसने स्वीकार किया कि उसने इतनी सुन्दर चीज़ें पहले कभी नहीं देखी थीं। इसे देख कर पता चलता है कि इसे बनाने वाले की खुद की पसन्द बहुत अच्छी है। जरूर ही तुम एक बहुत अच्छा काम करने वाले होने चाहिये। तुम कहॉ से आते हो?"

अरब बोला — "इससे क्या अन्तर पड़ता है। मैं तुम्हारा दास हूॅ। क्या इस शहर में कोई ऐसा अमीर व्यापारी या कुलीन आदमी नहीं है जिसे इन सेवाओं की आवश्यकता हो जैसी कि मेरे पास हैं?"

इब्राहीम ने कुछ पल तक इस अजीब सी विनती के बारे में सोचा फिर वह बोला "ठीक है।"

दोनों साथ साथ शहर लौटे। वहॉ इब्राहीम ने बाजार में वहॉ पूछताछ की जहॉ अमीर व्यापारी अपने बातें किया करते थे। जल्दी ही उसे वहॉ जवाहरातों का एक अमीर व्यापारी मिल गया जिसने

दान के बहुत सारे काम किये थे और जो अब एक मकान बनवाना चाहता था। सो वह उस जवाहरातों के व्यापारी के पास गया।

इब्राहीम ने उससे बहुत ही नम्रता से कहा — "जनाब। मैंने सुना है कि आप एक ऐसा महल बनवाना चाहते हैं जैसा इस शहर में किसी ने कभी देखा न हो।

एक ऐसी चीज़ जो उसको रखने वाले मालिक के लिये सदा के लिये एक खुशी की बात हो और साथ में जो उसे देखे उसका मन भी प्रसन्न हो जाये। वह इस शहर को लिये गर्व और सम्मान की बात हो।"

व्यापारी बोला — "हॉ यह तो है। तुमने मेरे दिल की इच्छा तो ऐसे कह दी है जैसे कि तुमने मेरे मन का भेद पढ़ लिया हो। मैं वह महल इस शहर के राजा को देना चाहता हूॅ जो उसके नाम में चार चॉद लगा दे।"

इब्राहीम बोला — "यह तो अच्छा है। मैं आपके लिये एक महल बनाने वाला ले कर आया हूॅ। आप इसका प्लान और डिजाइन देख लें। अगर आप उनसे खुश हों तो जहॉ तक मुझे लगता है कि आप जरूर होंगे आप इस आदमी को मुझसे खरीद लें क्योंकि यह मेरा दास है।"

जवाहरातों का व्यापारी उस आदमी के कागज पर बने प्लान को तो नहीं समझ सका पर उसे बक्से में रखा मौडल उसे बहुत

अच्छा लगा। वह उसे काफी देर तक देखता रहा। उसे देख कर उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकल पा रहा था।

आखिर वह बोला — "यह तो बहुत ही सुन्दर है। मैं तुम्हारे दास को खरीदने के लिये तुम्हें अस्सी हजार सोने की मुहरें दूँगा। उसे मेरे लिये ऐसा ही महल बनाना होगा।"

इब्राहीम ने तुरन्त ही अरब को बताया तो अरब भी उसकी बात मान कर वैसा महल बनाने के लिये तैयार हो गया।

भला आदमी इस पैसे और अच्छी खबर के साथ अपनी पत्नी और बच्चों के पास लौटा जिससे अब वह परिवार अपनी बाकी बची ज़िन्दगी के लिये अमीर हो गया था।

जवाहरातों के व्यापारी ने अरब से कहा — "तुमको अब मेरे पास से छुट्टी तभी मिलेगी जब तुम मेरे लिये वैसा महल बनाओगे। तुम अपना काम तुरन्त ही शुरू कर दो। मैं तुम्हारे लिये मजदूरों का इन्तजाम करने जा रहा हूँ।"

अरब ने जवाब दिया — "मुझे किसी मजदूर की जरूरत नहीं है। बस आप मुझे उस जमीन पर ले चलिये जहाँ आपको यह महल बनवाना है। कल आपका महल तैयार हो जायेगा।"

"क्या कहा कल?"

"जी जनाब। मैंने यही कहा।"

जब वे उस जमीन पर पहुँचे जहाँ व्यापारी को महल बनवाना था सूरज अपनी सुनहरी चमक में डूब रहा था। अरब ने आसमान की तरफ इशारा करते हुए कहा — "जनाब। कल जब दूर पहाड़ियों के पीछे से सूरज उगेगा तो उसकी किरने महल की मीनारें और उसके गुम्बदों पर पड़ेंगी। अब आप मुझे अकेला छोड़ दें मुझे अपनी प्रार्थना करनी है।"

आश्चर्य में पड़ा व्यापारी अजनबी को वहीं छोड़ कर चला गया। कुछ दूर जा कर उसने अरब की तरफ निगाह डाली तो वह वास्तव में अपनी प्रार्थना कर रहा था। बजाय वहाँ से जाने के व्यापारी ने उसके ऊपर वहीं से रात भर नजर रखने का निश्चय किया।

पर जब चाँद उगा तो उसके ऊपर एक भारी नींद छाने लगी। वह तुरन्त ही सो गया। उसने सपने में देखा कि बहुत सारे लोग कुछ मशीनों के साथ लगे हुए हैं और मचानें ऊँची और और ऊँची होती जा रही हैं जिनके पीछे एक बहुत बड़ी बिल्डिंग छिपी हुई है।

इब्राहीम ने भी सपना देखा पर उसने सपने में केवल एक ही शक्ल देखी और वह थी अरब की। वह सबसे अलग खड़ा था। इब्राहीम ने अजनबी की शक्ल पास से देखी तो उसने उसकी हर हरकत को बड़े ध्यान से देखा।

उसने देखा कि सारे लोग उस अरब का कितना आदर कर रहे थे जैसे वह उनका सबसे ऊँचा औफीसर हो। और अरब भी उनसे बहुत ही नम्रता से बात कर रहा था। आसमान से एक चमकीली रोशनी की किरन आ कर उस जगह पर पड़ रही थी और किरन वहॉ सबसे अधिक कोमल थीं जहॉ वह अरब खड़ा हुआ था।

सपने में इब्राहीम को ऐसा लगा कि वह अपने बिस्तर से उठा और रात में ही बाहर चल दिया और महल के पास जा पहुँचा जो शहर के बाहर एक कूड़े के ढेर में से अचानक उठ गया था। वह धीरे धीरे आगे बढ़ता गया जब तक कि वह अरब के पास तक नहीं आ गया।

उसके नीचे काम करने वालों में से एक काम करने वाला उसके पास तक आया और उसने अजनबी को उसके नाम से पुकारा। तब इब्राहीम ने समझा और वह जाग गया।

सूरज की किरनें उसके सोने वाले कमरे की जाली में से झॉक रही थीं। वह अपने बिस्तर से उठ कर कूद कर खड़ा हो गया और बाहर के शानदार दृश्य को देखने लगा।

शहर के उस पार सूरज की किरनें महल की बिल्डिंग मीनारों और गुम्बदों से टकरा टकरा कर आ रही थीं जिसे उसने सपने में बनता हुआ देखा था। वह तुरन्त ही उस महल की तरफ यह देखने के लिये जाने लगा कि क्या उसका सपना सच था।

वह और जवाहरातों का व्यापारी दोनों लगभग एक साथ ही महल के पास पहुँचे। वे दोनों ही वहाँ अरब के उस मौडल को जीता जागता खड़ा देख कर आश्चर्य और प्रशंसा से चुप्पी साधे खड़े रह गये।

लगभग उसी समय महल का दरवाजा जो सोने से सजा हुआ था अन्दर से खुला और उनके सामने अरब खड़ा हुआ दिखायी दिया। इब्राहीम ने उसे नीचे तक सिर झुकाया।

अरब ने व्यापारी से कहा — "क्या मैंने अपना वायदा पूरा किया और क्या मैं अब आजाद हूँ?"

व्यापारी बोला — "जरूर। अब तुम आजाद हो।"

"ठीक है तो अब विदा। अल्लाह तुम्हें और इब्राहीम दोनों को तुम्हारे कामों के लिये बहुत सारा आशीर्वाद दे।" ऐसा वह अरब अपने हाथ उठाते हुए और आशीर्वाद देते हुए बोला और दरवाजे के पीछे ही गायब हो गया।

जवाहरातों का व्यापारी और इब्राहीम दोनों ही कमरों से होते हुए बरामदों से होते हुए साफ क्रिस्टल की खिड़कियों को रोशनी से चमकते हुए देख कर उसके पीछे पीछे दौड़े पर वहाँ तो कोई भी नहीं था।

व्यापारी ने इब्राहीम से पूछा — "मुझे तो बताओ कि यह महल किसने बनाया।"

इब्राहीम बोला — "धर्मदूत ऐलाइजा[69] ने जो सब लोगों का भला सोचते हैं। जो धरती पर उन लोगों के दुखों में उन्हें दुख से उभारने के लिये बार बार आते हैं जिन्हें वह इस योग्य समझते हैं। मेरे ऊपर उनकी कृपा है और साथ में तुम्हारे अच्छे कामों के लिये तुम्हारे ऊपर भी क्योंकि उन्होंने हमारा वास्तव में सम्मान किया है।

अपना आभार दिखाने के लिये व्यापारी ने अपने महल में शहर के सभी लोगों को एक दावत दी और जो लोग सड़कों पर आ जा रहे थे उनके लिये सोने चाँदी के सिक्कों की बिखेर की।

[69] Prophet Elijah

16 सौ साल की नींद[70]

यह तब की बात है जब पहले मन्दिर[71] को नष्ट किया जा रहा था। निर्दयी लड़ाई ने जेरुसलेम को बिल्कुल सुनसान सा छोड़ दिया था और वहाँ के लोगों को बहुत ही तकलीफ में।

रैबाई ओनियास[72] एक ऊँट पर चढ़ कर इसी दुखी शहर की तरफ जा रहे थे। वह बहुत दिनों का सफर कर के यहाँ तक आये थे। वह कई रातों के जागे हुए थे और थके हुए थे।

भूख से बेहोश से थे फिर भी उन्होंने वह खजूर की टोकरी बिल्कुल नही छुई थी जिसे वह अपने साथ ले कर आये थे। न उन्होंने वह पानी की बोतल ही छुई थी जो उनके बैठने की सीट से बँधी हुई थी।

उन्होंने सोचा कि क्या पता रास्ते में उन चीज़ों की जरूरत किसी और आदमी को उनसे ज़्यादा पड़ जाये। लेकिन हर जगह धरती खाली ही खाली थी। कोई कहीं दिखायी नहीं दे रहा था।

[70] The Sleep of One Hundred Years. (Tale No 16)
[71] The First Temple was built by Solomon in Jerusalem around 3,000 years ago.
[72] Rabbi Onias

एक दिन जब उनका सफर खत्म होने पर आ रहा था तो उन्होंने देखा कि एक आदमी एक पहाड़ी तलहटी में कैरब[73] का पेड़ लगा रहा था।

आदमी बोला — "इन काल्डीयन्स[74] ने मेरे सुन्दर अंगूर के बागीचे और उपज बरबाद कर दिये हैं पर मैं अब नये सिरे से पौधे उगाऊँगा ताकि धरती फिर से ज़िन्दा हो सके।"

ओनियास वहाँ से दुखी हो कर गुजरा और पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर रुक गया। उसके सामने जेरुसलेम[75] फैला पड़ा था।

यह वह जेरुसलेम नहीं था जो कभी बहुत सुन्दर हुआ करता था और जहाँ की मीनारों और गुम्बदों पर रोज सुबह सूरज की किरनें चमका करती थीं। बल्कि यह वह जेरुसलेम था जो नष्ट हो चुका था और जल चुका था।

उसे देख कर ओनियास जमीन पर गिर पड़ा और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। वहाँ उसे दूर दूर तक कोई भी आदमी नजर नहीं आ रहा था। सूरज अब एक मरे हुए शहर पर डूबने वाला था।

[73] Carob tree – Carob tree is an evergreen Mediterranean tree with edible pods; the biblical carob
[74] Chaldeans – Chaldeans are Aramaic-speaking, Eastern Rite Catholics. They have a history that spans more than 5,500 years, dating back to Mesopotamia, which was known as the cradle of civilization and is present-day Iraq.
[75] Jerusalem

वह रो कर बोला — "उफ़ उफ़। मेरी प्यारी ज़िओन[76] कहाँ है तू। तू तो अब यहाँ नहीं है। क्या कभी तू उठेगी भी या नहीं। तेरी शान तो अब सौ साल में भी वापस नहीं लौटेगी।"

जब वह जेरुसलेम को देख रहा था तो सूरज नीचे डूबता जा रहा था और सब जगह अँधेरा ही अँधेरा फैलता जा रहा था। रैबाई ओनियास बहुत थक गया था सो वह अपना सिर ऊँट के सहारे रखे बैठा बैठा सो गया।

रात में चाँद चाँदी जैसा चमक रहा था पर सुबह होते होते पीला और उदास हो गया था और अब सुबह के सूरज की किरनें रैबाई के चेहरे को छू रही थीं। दिन ने एक बार फिर अँधेरे की चादर ओढ़ ली पर रैबाई फिर भी नहीं जागा। सूरज दोबारा उगा पर रैबाई ओनियास फिर भी सोता ही रहा।

दिन हफ्तों में बीते हफ्ते महीनों में बीते और महीने सालों में बीतते चले गये पर रैबाई ओनियास की नींद नहीं खुली।

हवाओं में उड़ते हुए और चिड़ियों के लाये बीज उसके आस पास गिरते रहे। उन्होंने जड़ें पकड़ लीं तो कुछ झाड़ियाँ बन गये फिर वह हैजैज़ में बदल गये और उन हैजैज़ ने रैबाई को चारों तरफ से घेर लिया।

---

[76] Zion - Zion, or Mount Zion, in the Old Testament, the easternmost of the two hills of ancient Jerusalem. It was the site of the Jebusite city captured by David, king of Israel and Judah, in the 10th century BC and established by him as his royal capital.

जो कोई भी उधर से आता जाता था वह उसे दिखायी नहीं देता था। एक खजूर भी उसकी टोकरी से नीचे गिर गया था। वह भी उग गया। समय के साथ साथ वह बड़ा हो गया और एक छायादार खजूर का पेड़ बन गया और सोते हुए रैबाई के ऊपर छाया करता रहा।

इस तरह से सौ साल बीत गये।

अचानक ओनियास हिला और एक ॲगड़ाई ले कर उसने जॅभाई ली। वह जाग गया था। उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

वह बोला — "अजीब बात है। क्या मैं कल रात एक पहाड़ी पर नहीं सोया था जहॉ से जेरुसलेम मुझे साफ साफ दिखायी दे रहा था। ऐसा कैसे हुआ कि मेरे चारों तरफ ये घनी घनी झाड़ियॉ उग आयीं और मैं इस भले खजूर के पेड़ की छॉह में लेटा हुआ हूॅ।"

बड़ी मुश्किल से वह अपने पैरों पर खड़ा हो सका। "ओह। ये मेरी हड्डियॉ कैसे दर्द कर रही हैं। ऐसा लगता है कि मैं ज़रा कुछ ज़्यादा ही सो गया हूॅ। और मेरा ऊॅट कहॉ है।"

परेशान हो कर उसने अपनी दाढ़ी में हाथ फेरा तो देखा कि उसकी दाढ़ी तो बिल्कुल सफेद हो गयी थी। बहुत लम्बी हो गयी थी। वह तो जमीन तक पहुॅच रही थी। यह देख कर वह फिर से वहीं जमीन पर बैठ गया।

पर वह जिस ढेर पर बैठा था वह तो कूड़े का ढेर था सो जैसे ही वह उस पर बैठा तो वह तो नीचे दब गया। उसके नीचे हड्डियॉ थीं। उसने कूड़े को साफ किया तो उसे वहॉ ऊँट का ढॉचा मिल गया।

वह बोला — "निश्चित रूप से यह मेरा ही ऊँट होगा। क्या मैं इतना अधिक सोया कि मेरे थैले सड़ गये। पर यह क्या है। यह तो खजूर की टोकरी है।"

कह कर उसने वह खजूर की टोकरी और पानी की बोतल उठा ली। खजूर और पानी दोनों ही ताजा थे। यह देख कर रैबाई बहुत आश्चर्य में पड़ गया।

बोला "यह तो चमत्कार हो गया। ऐसा लगता है कि यह इस बात का सूचक है कि मैं अपना सफर जारी रखूॅ। पर अफसोस तो यह है कि जेरुसलेम तो नष्ट हो ही गया होगा।

उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसे और भी अधिक आश्चर्य हुआ। जब वह कल शाम को सोया था तब तो वहॉ मुश्किल से ही कुछ हरा भरा था पर अब तो वहॉ सब जगह कैरब के पेड़ खड़े हुए थे।

जब तक मुझे याद पड़ता है कल मैंने एक आदमी को कैरब का पेड़ लगाते देखा था। पर क्या यह मैंने कल ही देखा था। फिर उसने दूसरी दिशा में देखा तो उसके मुँह से आश्चर्य से एक चीख सी

निकल गयी। सूरज तो एक बहुत सुन्दर शहर पर चमक रहा था और उसके आस पास खेत और अंगूर के बागीचे खिल रहे थे।

वह बोला — "सो जेरुसलेम अभी भी ज़िन्दा है। मुझे लगता है कि मैं सपना देख रहा हूँ – कि जेरुसलेम नष्ट हो गया था। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह एक सपना था।"

मैदान में से हो कर वह तुरन्त ही तेज़ तेज़ शहर की तरफ को चल दिया। शहर के लोग उसे अजीब अजीब नजरों से देख रहे थे और उसकी तरफ इशारा कर के एक दूसरे से कुछ कुछ कह रहे थे। बच्चे उसे नामों से बुला रहे थे।

वह उनकी भाषा तो नहीं समझ पा रहा था पर उसने उनकी तरफ ध्यान भी नहीं दिया। शहर के बाहर की तरफ पहुँच कर वह रुक गया। उसने एक बूढ़े से पूछा — "पिता जी क्या आप बता सकते हैं कि रैबाई ओनियास का घर कहाँ है।"

"यह आप होशियारी की बात कर रहे हैं या बेवकूफी की कि आप मुझे "पिता जी" कह कर बुला रहे हैं। मैं तो आपके बच्चे के बराबर हूँ।"

तभी और लोग भी इकट्ठा हो गये और ओनियास की तरफ घूरने लगे। उनमें से एक ने पूछा — "क्या आप रैबाई ओनियास की बात कर रहे हैं। मैं एक आदमी को जानता हूँ जो यह कहता है कि वह उसके बाबा का नाम है। मैं उसे अभी ले कर आता हूँ।"

कह कर वह जल्दी ही वहॉ से चला गया और एक अस्सी साल के बूढ़े को ले कर लौटा।

रैबाई ओनियास ने उससे पूछा — "तू कौन है।"

"मेरा नाम ओनियास है यह नाम मुझे मेरे संत बाबा रैबाई ओनियास के नाम पर मिला है। वह सौ साल पहले पहले मन्दिर के नष्ट होने पर कुछ अजीब ढंग से गायब हो गये थे।"

रैबाई ओनियास बड़बड़ाया "सौ साल? क्या मैं इतना सो सकता हूँ?"

दूसरे ओनियास ने जवाब दिया — "देखने से तो ऐसा ही लगता है क्योंकि मन्दिर को तो बाद में फिर से बनवाया गया।"

रैबाई ओनियास बोला — "तब यह सपना नहीं था।"

सब लोग उसे घर के अन्दर ले गये पर उसे वहॉ हर चीज़ नयी लग रही थी – रीति रिवाज, बरताव के ढंग, लोगों की आदतें, उनके कपड़े, उनकी बातें सभी कुछ अलग था। हर बार जब भी वह बोलता तो वे हॅसते।

वे बोले — "आप तो किसी दूसरी दुनियॉ के प्राणी लगते हैं। आप तो ऐसी चीज़ों के बारे में बात करते हैं जो बहुत पुराने समय में होती थीं।"

एक दिन उसने अपने नाती को बुलाया और उससे कहा — "मुझे वहॉ छोड़ आओ जहॉ मैं सोया हुआ था। हो सकता है कि मैं

वहॉ पहुँच कर फिर से सो जाऊॅ। मैं इस दुनियॉ का नहीं हूॅ मेरे बच्चे। मैं यहॉ अकेला हूॅ अजनबी हूॅ और तुमको अपनी खुशी से छोड़ता हूॅ।”

उसने अपने खजूर और पानी की बोतल उठायी जो अभी तक ताजा थे वह उस तरफ चल दिया जहॉ वह सौ साल तक सोया था। वहॉ उसकी शान्ति की प्रार्थना सुनी गयी। वह वहॉ जा कर फिर सो गया पर इस दुनियॉ में जागने के लिये नहीं।
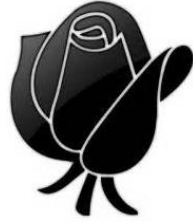
17 तीन दिन का राजा[77]

गौडफ्रे डी बूइलौन[78] एक बहुत बड़ा योद्धा था एक साहसी जनरल था और लोगों का बहादुर नेता था जिसने कई देशों को जीता था। सो **1095** में जब ईसाइयों का पहला धर्मयुद्ध[79] संगठित किया गया तब उसे कई सेनाओं में से एक सेना का जनरल बना दिया गया। वह अपनी सेना को यूरोप से हो कर "पवित्र धरती"[80] की तरफ ले गया।

उसके समय के और बहुत सारे बड़े बड़े योद्धाओं की तरह से गौडफ्रे भी एक निर्दयी आदमी था। और इससे भी बड़ी बात यह थी कि वह ज्यूज़ से बहुत घृणा करता था।

उसने अपने आदमियों से कहा — "हम हमारे इस पवित्र युद्ध में इज़रायल के उन सभी लोगों को वहीं मार देंगे जहाँ भी वे हमें मिल जायेंगे। मुझे तब तक सन्तोष नहीं होगा जब तक मैं सारे ज्यूज़ को मार नहीं लूँगा। अपनी अमानवीय कसम के अनुसार उसने बहुत सारे ज्यूज़ को मार डाला।

---

[77] King For Three Days. (Tale No 17)
[78] Godfrey de Bouillon
[79] Translated for the word "Crusade"
[80] Translated for the word "Holy Land" - Holy Land refers to a territory roughly corresponding to the modern State of Israel, the Palestinian territories, western Jordan, and parts of southern Lebanon and southwestern Syria. Jews, Christians, and Muslims all regard it as holy.

यह सब उन्होंने बड़ी निर्दयता और बेरहमी के साथ किया। उसने कहा — "यह सब हम अपने धर्म का काम कर रहे हैं और इस काम को करने के लिये हमें अपने पादरी का आशीर्वाद प्राप्त है।"

गौडफ्रे को विश्वास था कि वही जीतेगा पर फिर भी वह एक रैबाई का आशीर्वाद भी चाहता था। यह उसकी एक अजीब सी इच्छा थी पर उन दिनों यह सब कोई अजीब बात नहीं थी। सो गौडफ्रे डी बूइलौन ने एक रैबाई सोलोमन बैन इज़ाक[81] को बुलवा भेजा। वह संसार में राशि[82] के नाम से प्रसिद्ध था।

राशि ज्यूज़ का एक बहुत ही अक्लमन्द रैबाई था। वह गौडफ्रे के पास आया तो दोनों एक दूसरे सामने खड़े हुए। गोडफ्रे ने मजबूती से कहा — "आपने मेरे इस उद्देश्य के बारे में तो सुना ही होगा कि मुझे जेरुसलेम पर अधिकार करना है। मुझे अपने इस काम के लिये आपका आशीर्वाद चाहिये।"

रैबाई राशि बोला — "आशीर्वाद कोई आदमियों की भेंटों में नहीं होता। वह योग्य कामों के लिये स्वर्ग से मिलता है।"

गौडफ्रे बोला — "मुझे शब्दों के जाल में मत उलझाइये। वे आपको मँहगे पड़ सकते हैं। एक साधु तो आशीर्वाद दे ही सकता है।"

---

[81] Solomom ben Isaac – name of the Rabbi

[82] Rashi – Solomon ben Isaac was famous by this name.

पर रैबाई राशि निडर था। अब वह बूढ़ा होता जा रहा था पर फिर भी वह एक बहादुर सिपाही की तरह बहादुर था। वह गौडफ्रे के सामने बिना किसी डर और हिचक के खड़ा था।

वह बोला — "मैं उस आदमी की तरफ से इज़रायल के भगवान से कुछ नहीं कह सकता जिसने "उसके चुने हुए लोगों"[83] की सन्तानों को मारने का प्लान बनाया हो।"

गौडफ्रे बोला — "तो आप मेरा कहा नहीं मानेंगे।"

उसने तुरन्त ही अपने गुस्से वाले शब्द रोक लिये वह किसी भी पवित्र आदमी से लड़ाई झगड़ा करना नहीं चाहता था क्योंकि यह झगड़ा उसे कमजोर बना देता। और यह कमजोरी उस समय एक अन्धविश्वास समझी जाती थी। इसके अलावा फिर रैबाई उसे शाप भी तो दे सकता था न।

गौडफ्रे बोला — "अगर आप मुझे आशीर्वाद नहीं देते तो कोई बात नहीं कम से कम आप मेरे ऊपर इतनी कृपा तो कर ही सकते हैं न कि भविष्य के ऊपर से परदा हटा दें। ऐसा लोग कहते हैं कि आप ज्यूज़ के अक्लमन्द लोग आगे की घटनाऐं देख सकते हैं।

इस समय सौ हजार रथ, सब बहादुर ताकतवर और मारने की इच्छा से भरे हुए सिपाहियों से भरे हुए मेरे नियन्त्रण में हैं। मुझे बताइये कि मैं अपने उद्देश्य में सफल होऊँगा या नहीं।"

---

[83] Translated for the words "His Chosen People"

रैबाई राशि बोला — "तुम्हें दोनों प्राप्त होंगे।"

गौडफ्रे ने कुछ गुस्से से पूछा — "इस बात का क्या मतलब है।"

रैबाई राशि बोला — "इस बात का यह मतलब है कि तुम जेरुसलेम को जीत लोगे और तुम तीन दिनों के लिये वहाँ के राजा भी बनोगे। ऐसा तुम्हारी किस्मत में लिखा हुआ है।"

गौडफ्रे बोला — "हा हा हा। तो आपने यह सोच ही लिया कि आप मुझे आशीर्वाद देंगे। अब मैं सन्तुष्ट हूँ।"

रैबाई राशि गम्भीरता से बोला — "यह मैंने नहीं कहा। तुम वहाँ तीन दिन राज करोगे। बस फिर कुछ नहीं।"

गौडफ्रे यह सुन कर पीला पड़ गया। उसने धीमी सी आवाज में पूछा — "मैं वहाँ से वापस तो आऊँगा न।"

रैबाई राशि बोला — "इतने सारे रथों के साथ नहीं। जब तुम यहाँ इस शहर में वापस लौट कर आओगे तब तुम्हारे पास तुम्हारी इतनी बड़ी सेना में से केवल तीन घोड़े और तीन आदमी रह जायेंगे।"

गौडफ्रे चिल्लाया — "बस काफी है। अगर आप यह सोचते हैं कि आप मुझे इन शब्दों से डरा लेंगे तब आप अपने इरादों में असफल रहेंगे।

और सुनिये ओ ज्यूज़ के रैबाई। मैं आपके शब्दों को याद रखूँगा। अगर आपकी ज़रा सी भी बात झूठ निकली – जैसे अगर मैं तीन की जगह चार दिन के लिये भी जेरुसलेम का राजा रह गया या फिर तीन की जगह चार घुड़सवारों के साथ लौटा तब आपको अपने इस झूठ की सजा भुगतनी पड़ेगी। मैं आपको ज़िन्दा जला दूँगा। आप समझ रहे हैं न। मैं आपको मरवा दूँगा।"

बिना किसी हिचक के राशि बोला — "मैं अच्छी तरह से समझता हूँ। यही वह सजा है जो तुम और तुम्हारा प्यार बिना उनकी इजाज़त के दे सकते हो जिनको तुम "पवित्र आदमी" कहते हो। यह मैं नहीं हूँ जो डर रहा हूँ गौडफ्रे डी बूइलौन। यह तुम हो जो डर रहे हो। मैं अपनी सुरक्षा के लिये अपना भविष्य जानने की इच्छा नहीं रखता। यह तुम्हारी इच्छा थी।"

यह कह कर रैबाई राशि वहाँ से अपनी प्रार्थना करने और अपने अध्ययन के लिये चला गया जिससे ज्यू लोग अपने आपको ज्ञानवान बनाते हैं और गौडफ्रे राइन नदी[84] के किनारे निरपराध ज्यूज़ का खून बहाने के लिये पैलैस्टाइन[85] चला गया।

इस धर्मयुद्ध का इतिहास तो लिखा हुआ है। पवित्र शहर पर बहुत सारी लड़ाइयाँ लड़ी गयीं उसे कब्जे में कर लिया गया। ज्यूज़

[84] Rhine River

[85] Palestine

को एक साइनागौग[86] में बन्द कर के जला दिया गया। आठ दिन के बाद गौडफ्रे के सिपाहियों ने उसे जेरुसलेम का राजा बना दिया।

गौडफ्रे बहुत खुश हुआ पर दो दिन बाद ही उसने इस घटना पर बहुत सावधानी से सोचा कि वह जेरुसलेम में हमेशा के लिये तो रह नहीं सकता था।

सो अगले दिन उसने अपने कप्तानों को बुलाया और उनसे कहा — "तुम लोगों ने मेरी बहुत इज़्ज़त बढ़ायी है पर मुझे यूरोप तो लौटना ही होगा इसलिये मेरे लिये यह अधिक उचित होगा कि मैं बजाय यहाँ के राजा बनने के "जेरुसलेम का ड्यूक और रक्षक"[87] बन जाऊँ।"

उसी रात अचानक उसे रैबाई राशि की भविष्यवाणी की याद आयी तो वह बड़बड़ाया "मैं तीन दिन तक जैरुसलेम का राजा रह चुका हूँ। ज्यूज़ के उस रैबाई राशि ने सच ही कहा था। फिर वह सोच रहा था कि क्या रैबाई की बाकी की भविष्यवाणी भी सच होगी या नहीं। और वह मुस्कुरा दिया।

वह खुश था जब उसकी जीत हुई थी पर उसके साथ बहुत सारे प्रकोप भी आये थे। यह सोच कर वह कुछ उदास हो गया। इसने उसके सिपाहियों का उत्साह भी तोड़ दिया। वे लोग छोड़ छोड़ कर जाने लगे।

---

[86] Synagogue – name of the place for Jewish worship, as temples are for Hindu worship.
[87] "Duke and Guardian of Jerusalem"

धीरे धीरे उसकी सेना बिखरने लगी और अब कुछ असन्तुष्ट लोग और कुछ घोड़े ही उसके पास रह गये।

यह फटे चिथड़ों में लिपटे दुखी लोग थे जिन्हें गौडफ्रे यूरोप से हो कर वापस ले जा रहा था। हर रोज उसके सिपाहियों की संख्या कम होती जा रही थी। आदमी और घोड़े अधिक थकान के कारण रास्ते में ही गिरे जा रहे थे।

उन्हें उन गिद्धों द्वारा मरने के लिये वहीं छोड़ना पड़ रहा था जो वहाँ पेड़ों की डालियों पर बैठे हुए थे। वे बस इस बात का इन्तजार कर रहे थे कि कब उनकी आखिरी साँस आये और कब वे उनकी हड्डियों से उनका माँस निकाल कर खायें।

गौडफ्रे डी बुइलौन जीत तो गया ही था पर किस कीमत पर। हजारों आदमी स्त्रियाँ और बच्चे मर चुके थे। उसकी अपनी सेना के भी हजारों सैनिक लड़ाई में मारे गये थे। सैंकड़ों की संख्या में सिपाहियों ने उस सड़क पर अपनी जान दे दी थी जिस पर से वे जेरुसलेम से पश्चिमी यूरोप जा रहे थे।

क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि गौडफ्रे दुखी था और हर पल वह रैबाई राशि की बात को याद करता जा रहा था। आखिर वह रैबाई राशि के शहर "कीड़ों के शहर" पहुँच गया जहाँ वह रहता था। वहाँ उसके साथ चार आदमी चार घोड़ों पर सवार थे।

अब वह बहुत खुश था। उसने अपनी बची हुई सेना को गिना और बोला — "यहाँ रैबाई मात खा गया।"

उसने अपनी सेना को अपने पीछे एक लाइन में आने के लिये कहा और गर्व से शहर के दरवाजे में घुसा। जैसे ही वह अन्दर घुसा तो उसने एक चीख सुनी। उसने तुरन्त ही घूम कर देखा तो देखा कि दरवाजे से एक पत्थर टूट कर उसके ठीक पीछे वाले सिपाही के ऊपर गिर पड़ा। इससे सिपाही और घोड़ा दोनों मर गये।

वह बोला — "ओ रैबाई। आपने ठीक बोला था। क्या मुझे आपकी कही बात पर विश्वास कर लेना चाहिये था। मैं तो अब टूट गया हूँ पर आपकी तो इज़रायल में बहुत प्रसिद्धि फैलेगी।"

सो इस तरह से यह सब हुआ। अगर तुमको कभी बेल्जियम की राजधानी ब्रसल्स जाने का मौका मिले तो गौडफ्रे डी बूइलौन की मूर्ति देखना मत भूलना जिसकी तलवार बड़े गर्व से ऊपर उठी हुई है। यह मूर्ति शाही महल में साइनागौग से कुछ मिनट की दूरी पर ही है।

अगर कभी तुम प्राचीन "कीड़ों के शहर" जाओ जो राइन नदी के किनारे पर है तो सायनागौग में वैसे ही घुसना जैसे दूसरे जाने वाले घुसते हैं। यह सायनागौग शताब्दियों पहले बनवाया गया था। तुम इसमें वह कमरा भी देख सकते हो जहाँ रैबाई राशि अपना

अध्ययन किया करता था। और पत्थर की वह सीट भी जिस पर वह बैठता था।

सायनागौग के पास ही शहर का वह प्राचीन दरवाजा है जिसका नाम रैबाई सोलोमन बैन इज़ाक के सम्मान में राशि गेट रखा गया है। शायद यह वही दरवाजा है जिसके नीचे से हो कर गौडफ्रे डी बूइलौन अपने तीन सिपाहियों के साथ शहर में अन्दर घुसा था।

18 बादलों में महल[88]

ऐसीरिया के राजा का एक ज्यू मन्त्री था जिसका नाम था इक्कोर[89]। वह उसके राज्य में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द आदमी था। वह राजा का भी बहुत प्यारा था। उसने उस पर बहुत सारा प्यार लुटा रखा था।

वह जनता का भी आदर्श था। रास्ता चलते वे भी उसे सलाम किया करते थे और उसके कपड़ों का किनारा चूमने के लिये जमीन पर लेट जाते थे।

वह जो भी उसो कोई सलाह लेने आता हमेशा हर एक से दयापूर्वक और मुस्कुरा कर बोलता था पर उसकी ऑखें हमेशा ही उदास रहतीं। जब भी वह बच्चों को गलियों में खेलते देखता तो उसकी ऑखों में ऑसू भर आते।

एक अक्लमन्द आदमी की हैसियत से उसकी प्रसिद्धि बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी। दूसरे देशों के राजा लोग ऐसीरिया के राजा को किसी भी बात पर नाराज करने से डरते थे क्योंकि उसका चीफ सलाहकार अक्लमन्द इक्कोर था।

---

[88] The Palace in the Clouds.   (Tale No 18)

[89] Ikkor, the Vazir of the King of Assyria

लेकिन इक्कोर अक्सर अपने महल में अकेला बैठ जाता और लम्बी लम्बी साँसें लेता। इक्कोर के महल में किसी बच्चे की हँसी की आवाज नहीं गूँजती और यही उसके दुख का कारण था।

इक्कोर एक बहुत ही धार्मिक आदमी था और अपने धर्म के कानून का बहुत बड़ा ज्ञाता था। उसने बहुत दिनों तक बहुत ही लगन से पूजा की थी।

जादूगरों की सलाह भी मानी थी ताकि उसका वंश चलाने के लिये और उसे प्रसिद्ध करने के लिये उसके एक बेटा हो जाये या फिर एक बेटी ही हो जाये। पर बहुत साल हो गये थे और उसके कोई बेटा या बेटी नहीं हुआ था।

राजा की सलाह पर वह हर साल एक नयी शादी करता। इस तरह से उसके घर में अब तीस पत्नियाँ थीं पर बच्चा किसी के नहीं था। अब उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वह अब और शादी नहीं करेगा।

एक रात उसने सपना देखा। सपने में उसको एक आत्मा दिखायी दी। वह उससे बोली — "इक्कोर तुम बहुत बड़े हो कर और सम्मान के साथ मरोगे पर तुम्हारा अपना कोई बच्चा नहीं होगा। इसलिये तुम अपनी विधवा बहिन का बच्चा "नादान" गोद ले लो और उसी को अपना बच्चा समझ कर पालो।"

नादान पन्द्रह साल का एक नौजवान लड़का था। सपना देखने के बाद उसने यह सपना लड़के की माँ को बताया तो उसने अपने लड़के को उसके घर जाने की और उसे अपने बच्चे की तरह से पालने की इजाज़त दे दी।

अब वज़ीर की आँखों से उदासी चली गयी थी। अब वह बच्चे को बड़ा होते खेलते पढ़ते देखता तो बहुत खुश होता। वह खुद भी उसे पढ़ाता।

पर पहले तो उसे आश्चर्य हुआ और फिर दुख हुआ कि नादान को जो धन वैभव और प्यार दिया गया था वह उसके लिये उसका बिल्कुल भी अनुगृहीत नहीं था।

वह पढ़ता नहीं था। वह बहुत घमंडी और जिद्दी होता जा रहा था। वह घर के नौकरों के साथ बहुत कठोरता से व्यवहार करता था। वह इक्कोर के बुद्धिमानी के पाठों को भी नहीं मानता था।

फिर भी वज़ीर को आशा थी कि समय के साथ साथ वह सुधर भी जायेगा और बुद्धिमान भी हो जायेगा। वह उसे राजा के पास ले कर गया और उसे शाही पहरेदारों का औफीसर नियुक्त कर दिया।

राजा ने भी अपने वज़ीर इक्कोर की खुशी के लिये उसे अपना प्यारा बना लिया। अब देश में सारे लोग उसे होने वाले वज़ीर और इक्कोर के उत्तराधिकारी के रूप में देखने लगे। पर इससे नादान और अधिक जिद्दी हो गया।

उसके दिमाग में एक नीच विचार आया जिससे वह राजा का और अधिक प्यारा हो जाता और इक्कोर को पीछे छोड़ देता।

एक बार जब इक्कोर देश के किसी दूसरे दूर के हिस्से में था तो एक दिन वह राजा से बोला — "राजा अमर रहे। मुझे अपने पिता और अक्लमन्द इक्कोर के प्रति जिन्होंने मुझे गोद लिया है विरुद्ध आपको यह चेतावनी देते हुए बहुत दुख होता है पर वे आपको बर्बाद करने की साज़िश रच रहे हैं।"

राजा उसकी इस बात पर पहले तो हॅस पड़ा पर फिर गम्भीर हो गया जब नादान ने उससे यह कहा कि वह तीन दिन के अन्दर अन्दर इसका सबूत ला कर देगा। कह कर नादान वहॉ से अपना काम करने चला गया।

उसने दो चिट्ठियॉ लिखीं – एक मिस्र के राजा फैरो[90] को जिसमें लिखा था — "ओ सूरज के बेटे फैरो और धरती के ताकतवर राजा आप हमेशा ज़िन्दा रहें। आप ऐसीरिया के ऊपर राज करना चाहते हैं तो मेरी बात ध्यान से सुनें।

अगले महीने के दसवें दिन आप अपनी सेना ले कर "ईगिल प्लेन्स"[91] में आ जायें जो शहर के बाहर है और मैं बड़ा वज़ीर इक्कोर आपका दुश्मन ऐसीरिया का राजा आपको दे दूॅगा।"

---

[90] Pharaoh – the King of Egypt
[91] Eagle Plains

इस पर उसने इक्कोर के नकली हस्ताक्षर बनाये और राजा के पास ले गया और बोला — “मुझे यह चिट्ठी मिली है सो इसे मैं आपके पास ले आया हूँ। यह चिट्ठी बताती है कि आपका वज़ीर इस देश को आपके दुश्मन को दे देगा।”

यह देख कर राजा बहुत गुस्सा हुआ वह इक्कोर को तभी बुलावाना चाह रहा था पर नादान ने उसे सलाह दी कि वह थोड़ा धीरज रखे। उसने कहा कि वह अगले महीने के दसवें दिन तक रुके जब सालाना जाँच पड़ताल होगी क्योंकि तब उसे और भी अधिक आश्चर्य देखने को मिलेंगे।

इसके बाद उसने दूसरी चिट्ठी लिखी। यह चिट्ठी उसने इक्कोर के नाम लिखी और इस पर मिस्र के राजा के नकली हस्ताक्षर थे और उसकी मुहर भी लगी हुई थी जिसे उसने किसी तरह पा लिया था।

उसमें उसने लिखा कि इक्कोर अगले महीने के दसवें दिन “ईगिल प्लेन्स” में अपनी सेना यह दिखाने के लिये ले कर आये कि वह कितनी बड़ी है। और मिस्र के राजा पर हमला करने का नाटक यह दिखाने के लिये करे कि उनकी ट्रेनिंग कितनी अच्छी है।

वज़ीर जाँच पड़ताल के पहले दिन लौट आया और जब राजा नादान और विदेशी दूतों के साथ खड़ा हुआ था इक्कोर और सेना ने

मिस्र के राजा की आज्ञा मानते हुए हिज़ मैजेस्टी पर नकली हमला कर दिया।

नादान बोला — "क्या आपको दिखायी नहीं देता कि मिस्र के राजा यहाँ नहीं हैं और इक्कोर आपके ऊपर हमला कर रहा है।" और उसने तुरन्त ही शाही बिगुल बजाने वालों को रुक जाने का हुक्म दिया।

इक्कोर को राजा के सामने लाया गया और उसे उसकी फैरो को लिखी हुई चिट्ठी दिखायी गयी।

राजा गुस्से से बोला — "अगर तुम इसे समझा सकते हो तो समझाओ। मैंने तुम्हारे ऊपर विश्वास किया तुम्हें बहुत सारा धन और सम्मान दिया और तुमने मुझे तुमने धोखा दिया। क्या यह तुम्हारे हस्ताक्षर नहीं हैं? और क्या यह नीचे तुम्हारी मुहर नहीं है?"

इक्कोर तो उसे देख कर दंग रह गया वह तो कोई जवाब ही नहीं दे सका। नादान ने राजा के कानों में फुसफुसाया — "यही इनको दोषी साबित करता है।"

राजा बोला — "ले चलो इसे सजा के लिये। इसका सिर धड़ से अलग कर दो और उसे पचास गज दूर फेंक दो।"

इक्कोर बेचारा राजा के सामने अपने घुटनों पर बैठ गया और उससे विनती की कि वह उसे उसके घर में मारे ताकि उसे वहीं दफ़नाया जा सके।

उसकी यह विनती स्वीकार कर ली गयी। उसको सजा देने वाला नाबू समक[92] उसे बन्दी बना कर उसके महल तक ले गया। नाबू समक इक्कोर का बहुत अच्छा दोस्त था। और इस तरह उसे मारने के राजा के हुक्म से वह बहुत दुखी था।

नाबू समक ने इक्कोर से कहा — "मुझे मालूम है कि तुम अपराधी नहीं हो। मैं तुम्हें बचाऊँगा। तुम मेरे ऊपर भरोसा रखो। जेल में एक बहुत नीच आदमी बन्द है जिसने खून किया है और जिसे मौत की सजा मिलनी चाहिये।

उसकी दाढ़ी और बाल तुम्हारे जैसे ही हैं। दूर से उसे कोई भी तुम्हें समझ लेगा। मैं उसका सिर काट दूँगा और उसी का सिर मैं भीड़ को दिखा दूँगा। इस बीच तुम कहीं छिपे रहना और फिर कुछ समय के लिये छिप कर ही रहना।"

इक्कोर ने अपने दोस्त को धन्यवाद दिया और इसी प्लान से काम किया गया। इक्कोर के महल की छत से उस डाकू का सिर भीड़ को दिखा दिया गया। लोग रोये क्योंकि उन्होंने समझा कि वह सिर भले इक्कोर का था और अब इक्कोर मर गया है।

इस बीच इक्कोर अपने महल के नीचे तहखाने में छिप गया था। वहाँ उसे खाना मिलता रहा जबकि उसका गोद लिया हुआ बेटा नादान उसकी जगह राजा का वज़ीर बन गया।

---

[92] Nabu Samak

अब जब मिस्र के राजा फैरो ने सुना कि बुद्धिमान इक्कोर को मरवा दिया गया उसने ऐसीरिया पर हमला करने की सोची। सो उसने ऐसीरिया के राजा को एक चिट्ठी लिखी जिसमें उसने बादलों में एक महल बनाने के लिये उसका नक्शा बनाने वाले को भेजने की विनती की।

उसने लिखा कि अगर यह काम आप कर देते हैं तो मैं सूरज का बेटा फैरो आपको टैक्स दूँगा पर अगर आप यह काम नहीं कर सकते तो आप मुझे टैक्स दें।

यह चिट्ठी पा कर ऐसीरिया का राजा तो बहुत परेशान हो गया। उसे इस चिट्ठी का जवाब तीन महीने के अन्दर अन्दर देना था।

नादान की तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह इस बारे में क्या सलाह दे। उधर राजा को बहुत पछतावा हो रहा था कि इतना अक्लमन्द आदमी मरवा दिया गया था और अब उसके पास सलाह देने के लिये कोई आदमी नहीं था।

उसके मुँह से निकला — "जो कोई भी इक्कोर को ज़िन्दा कर देगा तो मैं उसे अपना चौथाई राज्य दे दूँगा।"

यह सुन कर नाबू समक राजा के पैरों पर गिर पड़ा और स्वीकार किया कि इक्कोर अभी ज़िन्दा था। राजा यह सुनते ही चिल्ला कर बोला "उसे तुरन्त मेरे पास ले कर आओ।"

जब इक्कोर का दोस्त इस खबर के साथ उसके पास तहखाने में आया तब उसे तो बिल्कुल विश्वास ही नहीं हुआ। लोगों की ऑखों में दया और खुशी के ऑसू आ गये जब उन्होंने वज़ीर को सड़क पर से जाते देखा। वह दृश्य बहुत ही असाधारण था।

वह अपने तहखाने में एक साल तक बन्द रहा था। इस समय में उसकी दाढ़ी जमीन तक लम्बी हो गयी थी। उसके बाल उसके कन्धे से नीचे तक लटक गये थे। उसके नाखून कई कई इंच बढ़ गये थे। राजा अपने वज़ीर से मिल कर बहुत रोया।

राजा बोला — "इक्कोर। कई महीनों तक मैं यही सोचता रहा कि तुम निर्दोष हो और इस समय में मैं अपने लिये कितनी फायदेमन्द सलाहों के समय तुम्हें याद करता रहा। तुम मुझे इस मुसीबत से निकालो मैं तुम्हें माफ कर दूँगा।"

इक्कोर बोला — "योर मैजेस्टी। मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये मैं तो बस आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मैं बिल्कुल निर्दोष हूँ। समय ही इसे साबित करेगा।"

जब उसने फैरो की मॉग के बारे में सुना तो वह मुस्कुराया। वह बोला — "यह तो बहुत आसान है। मैं फैरो के पास जाऊँगा और उसे थोड़ा छकाऊँगा।"

उसने कहा कि महल के बागीचे से उसे चार पालतू गरुड़ उसे दिये जायें और उनके पंजों से ढाई सौ गज लम्बी रस्सी बॅधी होनी

चाहिये। फिर उसने लचीले और फुर्तीले शरीर के चार नौजवान चुने और उन्हें गरुड़ों की पीठ पर बैठना और उड़ना सिखाया। यह कर के वह अपने बहुत सारे नौकरों और दूतों को ले कर मिस्र के लिये रवाना हो गया।

जब वह फैरो के सामने पहुँचा तो फैरो ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

इक्कोर बोला — "मेरा नाम अकबम[93] है और मैं राजा का सबसे छोटा सलाहकार हूँ।"

फैरो ने पूछा — "तुम्हारे राजा क्या यह समझते हैं कि यह सब इतना आसान है?"

इक्कोर ने सिर नीचे झुकाया जिससे उसका मतलब था कि "हाँ ऐसा ही है।"

फैरो तो यह देख कर और भी परेशान और गुस्सा सा हो गया। वह बोला — "ठीक है तो कर के दिखाओ।"

इक्कोर के इशारा करने पर चारों नौजवान चारों गरुड़ों पर बैठ गये। और वे गरुड़ उनको ले कर पूरी रस्सी ले कर ऊपर उड़ गये। अब चिड़ियें आसमान में एक दूसरे से सौ गज की दूरी पर थीं जैसा कि उनको सिखाया गया था। नौजवानों ने उनकी रस्सियाँ ऐसे पकड़ी हुई थीं कि उनसे एक वर्ग बन रहा था।

---

[93] Akbam – name of Ikkor told to Pharaoh of Egypt

अकबम बोला — “यह आसमान के महल का प्लान है। अब आप अपने लोगों को हुक्म दें कि वे ईंटें और ओखली ले कर आयें। यह काम इतना सादा सा है कि आपके लोग इसे बना लेंगे।”

फैरो यह देख कर बहुत गुस्सा हुआ। उसे नहीं पता था कि राजा का मन्त्री उसे इस तरह से हरा देगा। पर वह इसे जल्दी ही स्वीकार करने वाला नहीं था।

फैरो बोला — “इस देश में हम ओखली इस्तेमाल नहीं करते बल्कि पत्थरों को सिलते हैं। क्या तुम ऐसा कर सकते हो?”

इक्कोर बोला — “जी जनाब। आसानी से। अगर आपके अक्लमन्द लोग मेरे लिये रेत का धागा बना सकें तो।”

फैरो ने पूछा — “क्या तुम रेत का धागा बना सकते हो?”

इक्कोर बोला — “जी सरकार।”

सूरज की दिशा देखते हुए इक्कोर ने जमीन में एक छेद किया और सूरज की एक पतली सी किरन उस गड्ढे में आ कर पड़ी। उसने थोड़ी सी रेत अपने हाथ में ले कर उसे गड्ढे की तरफ फूॅक मार दी और बोला “लो पकड़ो इसे जल्दी से।”

इससे सूरज की वह किरन लोगों को रस्सी जैसी लगी पर वह किसी से पकड़ी नहीं गयी। फैरो उसकी तरफ काफी देर तक

देखता रहा फिर बोला — “सचमुच तुम बहुत बुद्धिमान हो। अगर वह मर न गया होता तो मैं कहता कि तुम बुद्धिमान इक्कोर हो।”

वज़ीर बोला — “सरकार मैं ही इक्कोर हूँ।” और उसने अपने बच कर निकल भागने की कहानी उसे सुना दी।

फैरो बोला — “मैं तुम्हारे निर्दोष होने को साबित करूँगा। मैं तुम्हारे राजा को चिट्ठी लिखूँगा।”

उसने न केवल ऐसीरिया के राजा को चिट्ठी ही लिखी बल्कि उसने इक्कोर को बहुत सारी भेंटें भी दीं। वज़ीर ऐसीरिया वापस चला गया और राजा के बराबर में अपनी जगह फिर से पा ली।

अब राजा उसे पहले से भी ज़्यादा प्यार करते थे। नादान को राज्य से बाहर निकाल दिया गया और वह वहाँ फिर कभी दिखायी नहीं दिया।

19 पोप का शतरंज का खेल[94]

यह लगभग एक हजार साल पुरानी बात है राइन नदी के किनारे मेयैन्स नाम के शहर में एक बहुत ही धार्मिक ज्यू रहता था जिसका नाम था साइमन[95] बैन इज़ाक।

वह बहुत दान देता था बहुत विद्वान था और हमेशा ही गरीबों की पैसे से और अपनी अक्लमन्दी की सलाह से सहायता करने के लिये तैयार रहता था। सब उसका बहुत आदर करते थे। सब लोगों का यह विश्वास था कि वह डेविड की सन्तान था। हर एक उसको सम्मान दे कर अपने आपको गर्वित महसूस करता।

साइमन बैन इज़ाक के एक बेटा था ऐल्कानन[96] जो बहुत ही होशियार था। उसका इरादा उसको भी रैबाई बनाने का था। छोटा ऐल्कानन अपनी पढ़ाई में बहुत ही मेहनती था। शुरू से ही ऐसा लगता था कि वह बहुत अक्लमन्द निकलेगा।

उसकी अक्लमन्दी की वजह से घर के नौकर भी उसको बहुत प्यार करते थे। उनमें से एक तो उसे बिना सोचे समझे ही बहुत चाहता था।

---

[94] The Pope's Game of Chess. (Tale No 19)

[95] A Jew lived on the banks of Rhine River in Mayence Town named as Simon ben Isaac.

[96] Elkanan – name of Simon de Isaac's son

वह सबाथ[97] में आग जलाने वाली एक लड़की थी जो घर में सबाथ की आग में हिस्सा लेने के लिये केवल सबाथ के दिन ही आती थी क्योंकि ज्यू नौकर यह काम नहीं कर सकते थे।

वह लड़की बहुत ही पक्की कैथौलिक थी और उसने ऐल्कानन के बारे में पादरी से भी बात की थी तो पादरी उससे पहुत प्रभावित हुआ था।

वह बोला — "कितनी खराब बात है कि इतना अक्लमन्द बच्चा ज्यू है। अगर वह ईसाई होता तो वह होली चर्च में शामिल हो जाता और फिर बहुत प्रसिद्ध हो जाता।"

सबाथ की आग वाली लड़की जानती थी कि उसका पादरी क्या चाहता है। एक दिन उसने पादरी से पूछा — "क्या वह इतना अक्लमन्द है कि वह बिशप[98] भी बन जाता।"

पादरी बोला — "अरे वह बिशप ही क्यों वह तो पोप भी बन सकता है।"

लड़की ने कहा — "यह तो कितना अच्छा होता अगर हम चर्च को एक बिशप दे सकते।"

पादरी ने उसे विश्वास दिलाया कि यह तो सचमुच में ही बहुत अच्छा होता अगर हम किसी को रोम के चर्च को दे सकते।"

---

[97] Sabbath – holy day, seventh day, Friday

[98] Bishop – very high status in Church

फिर वे बहुत धीमी आवाज में बात करते रहे। स्त्री थोड़ी परेशान सी दिखायी दे रही थी पर पादरी ने उसे विश्वास दिलाया कि सब कुछ अच्छा ही होगा और उसे इस बात का इनाम भी मिलेगा।

कोई उसे इस बात के लिये अपराधी नहीं समझेगा कि उसने कोई काम गलत किया है। अब वह सन्तुष्ट थी कि वह कोई गलत काम नहीं कर रही है सो जो कुछ पादरी ने उससे कहा वह उसे मानने के लिये तैयार हो गयी।

अपने इस प्लान के अनुसार अगले शुक्रवार की रात जब साइमन बैन इज़ाक का परिवार गहरी नींद सो रहा था तो वह उसके बेटे के सोने वाले कमरे में घुस गयी। बड़ी कोमलता से उसे अपनी बॉहों में उठा कर वह उसके घर से बाहर निकल आयी और ला कर उसे पादरी को दे दिया जो बाहर ही खड़ा उसका इन्तजार कर रहा था।

ऐल्कानन कम्बल में अच्छी तरह लिपटा हुआ था और स्त्री ने भी उसे इतनी अच्छी तरह से उसे उठाया कि वह जागा नहीं। पादरी ने एक शब्द भी नहीं कहा बस केवल स्त्री को हॉ में सिर हिलाया और बच्चा गाड़ी में रख दिया जो वहीं उसका इन्तजार कर रही थी।

ऐल्कानन शान्ति से सो रहा था। उसे यह कुछ नहीं पता था कि उसके साथ क्या हो रहा है या क्या होने वाला है।

लेकिन जब उसने अपनी ऑखें खोलीं तो उसे लगा कि वह सपना देख रहा था। वह अपने कमरे में नहीं था। वह एक बहुत छोटे से कमरे में था जो हिल रहा था और कहीं जा रहा था जैसे कोई गाड़ी जाती है। उसके सामने एक पादरी बैठा हुआ था।

उसने चिन्तित हो कर पूछा "मैं कहाॅ हूॅ?"

पादरी बोला — "चुपचाप लेटे रहो ऐन्ड्रियास[99]।"

बच्चा बोला — "पर मेरा नाम ऐन्ड्रियास नहीं है। मेरा नाम ऐल्कानन है और मैं साइमन का बेटा हूॅ।"

उसे आश्चर्य हुआ जब पादरी ने उसकी ओर दयापूर्वक देखा और ना में हिलाते हुए बोला — "लगता है तुम्हारे साथ कोई बहुत बुरी दुर्घटना हुई है जिसने तुम्हारे दिमाग पर असर डाला है। अभी तुम्हें बोलना नहीं चाहिये। तुम चुपचाप लेटे रहो।"

बच्चे ने कुछ और भी सवाल किये पर उसने उनके जवाब में कुछ नहीं कहा। उसने ऐल्कानन की किसी बात पर ध्यान नहीं दिया। ऐल्कानन बेचारा इस सब पर सोचता सोचता परेशान हो गया। थक जाने पर वह फिर से सो गया।

---

[99] Andreas

जब वह दोबारा जागा तो उसने देखा कि वह एक अकेले कमरे में है। उसमें एक घंटा लटक रहा था और उसे कुछ लोगों के एक साथ गाने की आवाज आयी। उसके बराबर में एक पादरी खड़ा हुआ था।

इससे पहले कि ऐल्कानन कुछ बोलता पादरी बोला — "उठो एन्ड्रियास आओ मेरे पीछे पीछे आओ।"

बच्चे के पास और कोई रास्ता नहीं था सिवाय इसके कि वह पादरी की बात मान ले सो वह चुपचाप उठा और पादरी के पीछे पीछे चल दिया। वह तो बहुत ही डर गया जब उसे एक चैपल में ले जाया गया और वहाँ उसे घुटनों पर बैठने के लिये कहा गया। पादरी ने उसके ऊपर पानी छिड़का।

उसकी समझ में ही नहीं आया कि उस सबका क्या मतलब था। जब यह सब खत्म हो गया तो वह अपने माता पिता के पास जाने के लिये रोने लगा।

कई दिनों तक उसके सवालों पर किसी ने कुछ ध्यान नहीं दिया। आखिर एक पादरी ने बड़े कठोर चेहरे और कड़ी बोली से उसे डाँट कर कहा — "मुझे ऐसा लगता है ऐन्ड्रियास कि तुम्हारे अन्दर कोई बहुत ही जिद्दी आत्मा घुस गयी है। उसे निकालना होगा।

तुम्हारे माता पिता मर गये हैं। तुम्हारे लिये सारी दुनियाँ मर गयी है। तुम्हारे दिमाग में अजीब तरह के विचार घूमते रहते हैं। हम उन्हें तुम्हारे दिमाग से निकाल देंगे।"

ये भयानक शब्द सुन कर ऐल्कानन इतनी ज़ोर से रोया कि वह बहुत बीमार पड़ गया। उसे पता ही नहीं कि वह कितने दिन बिस्तर में पड़ा रहा पर जब वह कुछ ठीक हुआ तो उसने अपने आपको एक मोनैस्टरी[100] में कैद पाया।

वहाँ सारे पादरी उसे ऐन्ड्रियास कह कर बुलाते थे। वे उसके प्रति बहुत दयालु थे। कुछ समय में ही उसे अपने ऊपर शक होने लगा कि वह मेयैन्स के धार्मिक ज्यू साइमन का बेटा ऐल्कानन था भी या नहीं।

अपने परेशान दिमाग को शान्त करने के लिये उसने अपनी पढ़ाई में ध्यान लगाया। उसके पढ़ाने वालों को इतना होशियार शिष्य पहले कभी नहीं मिला था और न ही इतना बुद्धिमान साथी। वह बहुत अच्छी शतरंज खेलता था।

एक दिन उन्होंने उससे पूछा — "तुमने इतना अच्छा शतरंज खेलना कहाँ सीखा?"

वह अपने पिता की याद में सिसकियाँ लेते हुए बोला — "मेरे पिता मेयैन्स के साइमन बैन इज़ाक ने मुझे सिखाया।"

---

[100] Monastery is a place where Christian nuns live

वे अपनी सिखायी गयी बातों का ठीक असर देख कर कि किस सवाल के जवाब में क्या कहना चाहिये बोले "यह तो बहुत अच्छा है। भगवान की कृपा है तुम्हारे ऊपर ऐन्ड्रियास। तुम न केवल दिन में अपना पाठ ही पढ़ रहे हो बल्कि रात को तुम्हें देवदूत और मरे हुए साधु संत भी तुम्हारे सपने में आ कर तुम्हें सिखाते हैं।"

उसे अपने पढ़ाने वालों से कभी कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं मिले सो उसने हर हाल में अपने भूत काल की बातों का जिक्र करना तक छोड़ दिया। उसके पढ़ाने वालों और साथियों ने भी उससे इस बात पर फिर कभी कोई चर्चा नहीं की।

एक दो बार उसने वहाँ से भागने की भी कोशिश की पर उसने देखा कि वहाँ से बच कर भाग निकलना असम्भव है। उसे एक पल के लिये भी अकेला नहीं छोड़ा जाता था। हालाँकि सारे लोग उसकी अक्लमन्दी का आदर करते थे पर एक तरह से वह वहाँ बन्दी था।

समय के साथ साथ वह एक पादरी बन गया और एक पढ़ाने वाला भी बन गया। यहाँ तक कि उसे रोम भी बुलाया जाने लगा। वहाँ जाने से वह एक कार्डिनल बन गया।

अब वह लाल रंग का केप और टोपी पहनने लगा था। लोग उसके सामने घुटनों पर बैठते थे और उसका आशीर्वाद लेते थे। सारे लोग उसे चर्च का सबसे दयालु सबसे बुद्धिमान और सबसे बड़ा विद्वान मानते थे।

उसने सालों से अपने लड़कपन की बातें नहीं कही थीं पर वह अपने उन खुशी के दिनों की याद भूला नहीं था। और उसने कितनी भी कोशिश की पर वह यह भी नहीं मान सका कि वह एक सपना था। जब भी वह शतरंज का खेल खेलता जो उसके समय गुजारने का एक साधन था उसे लगता कि वह मेयैन्स के अपने पुराने कमरे में बैठा है उसके मुँह से एक आह निकल जाती।

उसके साथी पादरी यह सोचते ही रह जाते कि वह ऐसा क्यों करता था। वह उनसे हँस कर यह कह देता कि वह यह सोच रहा था कि वह उनसे यह खेल कैसे हारे।

और तब एक बड़ी घटना घटी। रोम का पोप मर गया और उसकी जगह ऐन्ड्रियास को पोप बना दिया गया। उसे एक राजगद्दी पर बिठा दिया गया और उसके सिर पर ताज रख दिया गया। उसे "होली फादर" का नाम दे दिया गया।

उसे बहुत सारे देशों के लाखों करोड़ों लोगों की ज़िन्दगी और मौत पर अधिकार दे दिया गया। राजा राजकुमार और कुलीन लोग उसको मिलने के लिये उसके महल में आने लगे।

उसकी प्रसिद्धि बहुत दूर दूर तक फैल गयी। पर वह दिनोंदिन अधिक गम्भीर और विचारक होता चला गया। वह अब जनता की भलाई के बारे में ही सोचता रहता।

पर यह सब उसके कुछ सलाहकारों को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने उससे कहा — "चर्च को पैसे की जरूरत है। हमको यह पैसा ज्यूज़ से लेना चाहिये।" पर ऐन्ड्रियास ने इस अत्याचार का पक्के तरीके से कड़ा विरोध किया।

उसके हस्ताक्षर के लिये कई कागज उसके सामने रखे गये जिसमें यह इजाज़त माँगी गयी थी कुछ जिलों में बिशपों को यह इजाज़त दी जाये कि वे ज्यूज़ पर अत्याचार कर के उनसे पैसा लें पर ऐन्ड्रियास ने उन सब कागजों पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया।

एक दिन उसे एक ऐसा कागज दिया गया जिसमें राइन ज़िले के आर्चबिशप[101] ने उससे यह इजाज़त माँगी थी कि मेयैन्स क्षेत्र के सब ज्यूज़ को वहाँ से बाहर निकाल दिया जाये।

यह पढ़ कर पोप का चेहरा कुछ सख्त सा हो गया। उसने तुरन्त ही राइन ज़िले के आर्चबिशप को रोम बुलवाने का हुक्म सुना दिया।

दूसरे कार्डिनल्स के आश्चर्य का तो ठिकाना ही न रहा जब उसने मेयैन्स से तीन मुख्य ज्यूज़ को भी अपना मामला उसके सामने रखने के लिये वहाँ बुलवाया।

---

[101] Archbishop – a high position in Church

उसने कहा — "यह कहने का किसी को मौका नहीं दिया जायेगा कि पोप ने लोगों को बिना उनकी सफाई सुने हुए सजा सुना दी है।"

जब यह खबर मेयैन्स में पहुँची तो वहाँ तो बहुत रोना पीटना मच गया क्योंकि वे पहले ही जानते थे कि रोम से उन्हें कोई दया की भीख नहीं मिलेगी। लोग चुने गये और जब वे लोग वैटिकन शहर लाये गये तब उनका नाम पूछा गया। फिर उन्हें पोप को पास ले जाया गया।

एक सेक्रेटरी ने घोषण की — "मैयैन्स शहर से आये हुए ज्यूज़ योर होलीनैस से मिलना चाहते हैं।"

पोप ने पूछा — "उनके क्या क्या नाम हैं।"

सेक्रेटरी बोला — "साइमन बैन इज़ाक, अब्राहम बैन मोज़ैज़ और इसाकार[102]।"

पोप ने शान्त ढंग से मजबूत आवाज में कहा — "ठीक है। उन्हें अन्दर भेजो।"

उसने तो बस एक ही नाम सुना। और वह भी बस यही नाम सुनना चाहता था। उसकी तरकीब काम कर गयी थी। चुने हुए प्रतिनिधियों मे से उसको बस साइमन पर ही भरोसा था।

---

[102] Issachar – pronounced as "I-suh-kaar"

तीनों लोग पोप के कमरे में घुसे और उसके सामने आ कर खड़े हो गये। हिज़ होलीनैस ने ऐसा दिखाया कि जैसे वह बड़े सोच विचार में डूबे हुए हैं।

अचानक वह अपने विचारों से जागा और उन तीनों में से सबसे बड़ी उम्र वाले की तरफ ध्यान से देखते हुए बोला — "मेयैन्स के साइमन। तुम्हारे पास इसके लिये क्या तर्क है। कहो हम सुन रहे हैं।"

बूढ़ा साइमन पोप की तरफ कुछ कदम बढ़ा और सादी मगर साफ सुथरी अच्छी भाषा में पोप से बोला — "ज्यूज़ को यह इजाज़त मिलनी चाहिये कि वे मेयैन्स में बिना किसी परेशानी के रह सकें क्योंकि वहॉ उनके लोग बहुत दिनों से और ठीक से जमे हुए हैं।"

जब साइमन ने अपनी बात खत्म कर ली तो पोप बोला — "आपकी प्रार्थना पर पूरा ध्यान दिया जायेगा और इस विषय पर जल्दी ही मेरा फैसला आप तक पहुॅचा दिया जायेगा। अब मेयैन्स के साइमन। आप मुझे ज़रा अपने और अपने साथियों के बारे में बतायें कि आप लोग अपने शहर में क्या हैं।"

साइमन ने बता दिया तो पोप ने पूछा — "क्या आप लोग यहॉ अकेले आये हैं या फिर अपने किसी परिवार के सदस्य के साथ आये हैं जैसे बेटा या कोई और।"

अब पोप की आवाज उतनी मजबूत नहीं थी जितनी पहले थी अब वह कुछ कमजोर पड़ गयी थी पर किसी को पता नहीं चला।

साइमन ने एक लम्बी साँस भर कर कहा — "मेरे कोई बेटा नहीं है।"

पोप ने पूछा — "क्या तुम्हारे कभी कोई बच्चा था ही नहीं?"

साइमन ने पोप की तरफ तेज़ निगाहों से देखा फिर सिर झुका कर टूटी आवाज में बोला — "भगवान ने मुझे एक बेटा दिया था पर उसके बचपन में ही उसे चुरा लिया गया। यह मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा दुख था।"

अब तक बूढ़े की आवाज आँसुओं से भर्रा गयी थी।

कुछ पल बाद पोप बोला — "मैंने सुना था कि आप एक प्रसिद्ध शतरंज के खिलाड़ी हैं। मुझे भी इस खेल का थोड़ा सा ज्ञान है। आज मैं आपके साथ शतरंज खेलना चाहूँगा। और सुनिये। अगर आप इस खेल में जीत गये तो आपकी इच्छा पूरी की जायेगी।"

बूढ़ा थोड़े गर्व से बोला — "मैं तैयार हूँ। मुझे हारे हुए कई साल हो गये हैं।"

तय हुआ कि यह खेल उसी शाम को खेला जायेगा। अब यह तो स्वाभाविक है कि इस अजीब से मुकाबले में सब लोगों की रुचि

उत्पन्न हो चुकी थी। इस खेल को देखने के लिये पोप के सेक्रेटरी और ज्यू प्रतिनिधि सभी वहाँ उपस्थित थे।

दोनों खिलाड़ी करीब करीब बराबर के से थे। दोनों अपनी अपनी चालें कुछ इस तरह से खेल रहे थे जिससे दूसरा खिलाड़ी मुश्किल में पड़ जाता था पर हर बार यह मुश्किल आसानी से दूर कर दी जाती। ऐसा लगता था कि जैसे यह मैच ड्रौ हो जायेगा।

अचानक ही पोप ने एक आश्चर्यजनक चाल चली जिसे देख कर देखने वाले चौंक गये। ऐसा लग रहा था जैसे अबकी बार साइमन अपनी हार टाल नहीं सकता था।

पोप की इस चाल से और कोई इतना चकित नहीं था जितना कि खुद साइमन। वह कॉपते हुए अपनी कुर्सी से उठा और पोप के चेहरे की तरफ पैनी दृष्टि से देखा और कर्कश आवाज में पूछा — "यह चाल आपने कहाँ से सीखी? मैंने इसे केवल एक ही आदमी को सिखाया था।"

पोप ने उत्सुकता से पूछा "किसको।"

साइमन बोला — "यह मैं आपको अकेले में बताऊँगा।"

पोप ने सबको इशारा किया और सब लोग उस कमरे से बाहर चले गये। साइमन खुशी से बोला — "जब तक तुम शैतान न हो तब तक तुम मेरे बहुत पुराने खोये हुए बेटे ऐल्कानन हो।"

पोप बोला — "पिता जी।" कह कर दोनों आपस में एक दूसरे के गले लग गये।

जब सब लोग लौट कर कमरे में आये तो पोप बोला — "हमने यह निश्चय किया है कि यह खेल ड्रौ हो गया है और मेयैन्स के साइमन जैसे अच्छे खिलाड़ी के साथ खेलने के आनन्द को उठाने के बदले में अपना आभार प्रदर्शित करने के लिये मैं इस शहर के प्रतिनिधियों की प्रार्थना स्वीकार करता हूँ। यह मेरी इच्छा है कि वहाँ के ज्यूज़ वहीं उसी शहर में आराम से रहें।"

कुछ समय बाद ही एक दूसरा पोप चुना गया। उसके बाद बहुत सारी अफवाहें उड़ने लगीं। उनमें से एक तो यह है कि ऐन्ड्रियास आग में जल कर मर गया।

दूसरी यह कि वह रहस्यमय रूप से गायब हो गया और तीसरी यह कि कुछ दिनों बाद ही मेयैन्स में एक आदमी प्रगट हुआ जिसे साइमन ने अपने बेटे ऐल्कानन की तरह रख लिया।

20 दास का सौभाग्य[103]

अहमद दमिश्क[104] के एक सबसे अधिक धनवान सौदागर का अकेला बेटा था। उसका पिता उसके लिये सब कुछ करता था। अहमद भी उसके प्यार को वैसे ही प्रेम से लौटाता था। दोनों आपस में हँसी खुशी से मिल कर रहते थे।

वे कभी एक दूसरे से अलग नहीं हुए थे। पिता भी अपने व्यापार से जल्दी से जल्दी लौट आया करता था ताकि वह अधिक से अधिक समय अपने बेटे के साथ बिता सके। वह वहाँ का वह काम वहीं नहीं करता था जो वह घर आ कर कर सकता था।

जब अहमद का पिता घर पर नहीं होता था तो वह एक नीग्रो दास पैड्रो की सुरक्षा में रहता था। वह अपने पद और घर के अनुसार बहुत अच्छे कपड़े पहनता था और एक ऐसा आदमी दिखता था जैसे कोई आज्ञा देने वाला हो। वह एक बहुत ही वफादार दास था और अहमद और वह दोनों अच्छे दोस्त थे।

जब अहमद बड़े हो कर जवान हो गया तो उसके पिता ने उसे शिक्षा के लिये जेरुसलेम भेजने के लिये सोचा। उसने यह काम बड़े अनमनेपन से किया पर उसने सोचा कि इस समय यही सबसे अधिक

---

[103] The Slave's Fortune. (Tale No 20)

[104] Damascus – the capital of Syria

अक्लमन्दी का काम है। सो बड़ी नर्मी से उसने यह बात अहमद को बतायी क्योंकि उसे मालूम था कि अहमद कभी घर छोड़ना नहीं चाहेगा।

जब अहमद को यह बात पता चली तो वह वास्तव में बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह अपने पिता से अलग नहीं होना चाहता था। पर उसने अपने ऑसू रोक लिये और बहादुरी से कहा — "क्योंकि यह आपकी इच्छा है इसलिये मैं इसके बारे में कुछ नहीं कहूँगा क्योंकि आप हमेशा मेरा भला ही चाहेंगे।"

पिता ने कहा — "तुमने ठीक कहा बेटे।"

अहमद ने पूछा — "क्या मैं पैड्रो को अपने साथ ले जा सकता हूँ पिता जी?"

पिता ने कहा — "नहीं बेटे नहीं। यह ठीक नहीं रहेगा। क्योंकि इससे तुम हमेशा ही अपने धन दौलत की नुमायश करते रहोगे। इस तरह का दिखावा लोगों के दिलों में तुम्हारे और तुम्हारे पिता के लिये मूर्खता की भावना पैदा करेगा कि वे बुद्धि के स्थान पर धन को अधिक महत्व देते हैं।

इसके अलावा मेरे बेटे तुम्हारी वहॉ की पढ़ायी केवल वही सीखने तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिये जो वहॉ के विद्वान लोग तुम्हें सिखायेंगे। तुम दुनियॉ के तरीकों को सीखने के लिये, अपने आत्मविश्वास को विकसित करने के लिये और अपने आपको उन

कर्तव्यों को सीखने के लिये भी एक बहुत बड़े शहर में जा रहे हो जिन सबकी तुम्हें अपनी जवानी में आवश्यकता पड़ेगी।"

यह सब सुन कर नौजवान कुछ निराश सा हो गया। जहाँ तक उसकी याद काम करती थी यह शायद उसका पहला मौका था जब उसके पिता ने उसको कोई इच्छा पूरी नहीं की थी। पर इस बात में उसको बहुत आनन्द आ रहा था कि वह जल्दी ही एक आदमी बन जायेगा।

उसने झुक कर कहा — "मैं आपकी अक्लमन्दी के सामने सिर झुकाता हूँ पिता जी।"

अपने पिता को एक प्यार भरी विदाई दे कर वह जेरुसलेम चला गया और उस पवित्र शहर में जा कर वह मेहनत से अपनी पढ़ायी में मन लगाने लगा।

उसने अपनी पढ़ायी में पूरा ध्यान लगा कर अपने गुरूओं को खुश कर दिया। उसको नयी चीज़ों को सीखने में और इधर उधर देखने भालने से सीखने से एक नयी खुशी मिलने लगी।

इसके अलावा एक अजीब सी खुशी मिलती थी जब वह वहाँ अपने मामलों को अपने आप ही देखता भालता था। इतने बड़े शहर में पास पास बनी बिल्डिंगें तंग रास्ते और शोर शराबे को देख कर अब उसे घर की याद भी कम आती थी।

रोज ही कोई न कोई दूत उसके पिता की चिट्ठी ले कर आता था और वह भी उसी को अपनी लम्बी लम्बी चिट्ठियाँ जवाब में लिख कर भेज देता। वह उनमें अपनी ज़िन्दगी में होने वाली सभी छोटी बड़ी बातें लिखता।

एक साल बीत गया। एक दिन अहमद को जो चिट्ठी मिली वह एक अनजाने हाथ की लिखी हुई थी। उसको लगा कि उसमें अवश्य ही कुछ बुरा लिखा है यह सोच कर उसने उसे जल्दी से खोला।

इस चिट्ठी को उसके पिता के एक बहुत ही पास के दोस्त ने लिखा था। उसमें लिखा था — "ओ योग्य पिता के योग्य बेटे। तुमको नमस्ते। भगवान तुम्हें इस बुरी खबर को सुनने की हिम्मत दे जिसे तुम्हें बताना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

तो सुनो भगवान की बुद्धि में आया कि वह तुम्हारे संत जैसे पिता को इस धरती से बुला ले ताकि वह दूसरे योग्य लोगों के साथ स्वर्ग में बैठ सकें।

इस दमिश्क शहर में सब लोग बहुत दुखी हैं और रो रहे हैं क्योंकि तुम्हारे पिता सबसे अधिक न्यायप्रिय आदमी थे। वह सबके दुख में उनका साथ देते थे। वह उन सबको दान देते थे जो अभागे और गरीब होते थे। इस काम में कोई उनका मुकाबला नहीं कर सकता था।

पर तुम्हारे दुख की हमारे दुख से जो चाहे कितना भी अधिक क्यों न हो कोई तुलना नहीं की जा सकती। हम सबने एक अक्लमन्द सलाहकार एक विश्वासपात्र दोस्त और हर परिस्थिति में हमारा एक अच्छा मार्गदर्शक खो दिया है। पर तुमने बहुत कुछ खोया है। तुमने तो अपने पिता को खोया है।

तुम उनके एकलौते बेटे हो सो उनके सब काम अब तुम्हारे ऊपर आ जाते हैं। हम तुम्हारे दुख में तुम्हारे साथ हैं। हमारी पूरी सहानुभूति तुम्हारे साथ है और हम तुम्हारे आने के इन्तजार में हैं। अब तुम एक बहुत ही भला पद ग्रहण करने जा रहे हो और एक पुरानी परम्परा को चालू रखने वाले हो।

हम तुम्हारे और तुम्हारे पिता दोनों के दोस्त जब तुम यहाँ आ जाओगे तो तुम्हारी सब प्रकार से सहायता करेंगे।"

जब नौजवान ने इस चिट्ठी का मतलब समझा तो उसकी तो यह चिट्ठी पढ़ कर बोलती ही बन्द हो गयी। कुछ पल तो वह कुछ बोल ही नहीं सका। बस जमीन पर बैठ गया और चुपचाप रोता रहा। फिर उसे अपने पिता की सलाह याद आयी तो उसने दमिश्क जाने से पहले जेरुसलेम से अपना सारा मामला सिलटाया।

उसने सोचा कि वह अपने उस अच्छे गुरू रैबाई को अपने साथ ले जायेगा जो उसे धर्म पढ़ाता था क्योंकि मैं अभी अपने उन कामों

को सॅभालने के योग्य नहीं हॅू जो मेरी किस्मत में आ पड़ी हैं। मुझे अभी अच्छी सलाह और एक अच्छे सलाहकार की जरूरत है।"

जब वह दमिश्क पहॅुचा तो उसका बड़े ज़ोर शोर से स्वागत हुआ। उन सबने पहले तो उसके साथ सहानुभूति प्रगट की और फिर उसके पिता के बारे में बहुत अच्छा बोला।

पिता के दफ़न के बाद अहमद ने शहर के बड़े बड़े लोगों को बुलाया और उनसे अपने पिता की वसीयत पढ़ने के लिये कहा क्योंकि उसको पूरा विश्वास था कि उसके पिता दान में भी कुछ जरूर ही छोड़ गये होंगे।

और ऐसा ही हुआ। सब लोगों ने इसके लिये बहुत तालियॉ बजायीं और खुशी दिखायी। कि अचानक ही वह दोस्त जिसने सौदागर के मरने की खबर उसके बेटे को दी थी और जो वसीयत पढ़ रहा था वसीयत पढ़ते पढ़ते रुक गया।

उसने अहमद से फुसफुसाते हुए कहा — "मुझे लगता है कि तुम्हारे पिता से शायद लिखने में कुछ गलती हो गयी है।"

वहॉ बैठे हुए लोग बोले — "आगे पढ़ो। आगे पढ़ो।"

और उस आदमी ने एक अजीब सी आवाज में पढ़ा — "और अब जैसी कि मैं आशा करता हॅू कि मैंने गरीबों के प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है मेरा बचा हुआ सब कुछ मेरे वफादार नीग्रो नौकर पैड्रो को दे दिया जाये।"

आश्चर्यचकित भीड़ चिल्लायी "पैड्रो?"

उन्होंने पैड्रो की बड़ी काली शक्ल की ओर देखा पर वह ऐसा शान्त और चुपचाप खड़ा रहा जैसे उसके ऊपर इसका कुछ असर ही न हुआ हो। न उसके चेहरे पर कोई खुशी थी और न ही कोई आश्चर्य।

पर अहमद अपना आश्चर्य नहीं छिपा सका। वह बोला — "और वह मेरे लिये कुछ नहीं छोड़ गये।"

पिता के दोस्त ने कहा — "हॉ।"

और फिर पूरी खामोशी और आश्चर्य के बीच उसने आगे पढ़ा — "मेरा यह आदेश नीचे लिखी शर्त पर आधारित है कि यह वसीयत उसके सामने पढ़ने के बाद इस बॅटवारे से पहले मेरे बेटे को एक चीज़ दी जाये जिसे भी वह चौबीस घंटे के अन्दर अन्दर चुन ले।"

सारी भीड़ में से सहानुभूति और आश्चर्य की मिली जुली फुसफुसाहट की आवाज आने लगी पर अहमद को यह सब कुछ सुनायी नहीं पड़ा। सब यही कह रहे थे कि यह सौदागर का पागलपन है जो वह ऐसी वसीयत लिख कर गया। अहमद खुद भी इस थपेड़े के बारे में सोच कर बहुत परेशान था।

अहमद ने अपने पिता के दोस्त और रैबाई से सलाह ली पर हालॉकि उन लोगों ने भी उस वसीयत को कई बार पढ़ा फिर भी

उनको उसमें कहीं कोई कमी या गलती दिखायी नहीं दी। दोस्त ने कहा — "यह वसीयत तो कानूनन तौर पर बिल्कुल सही है बिल्कुल ठीक है और बदली नहीं जा सकती।"

अहमद ने कुछ कड़वेपन से कहा — "मेरे पिता से जरूर ही कुछ बेवकूफी की गलती हुई है। जरूर ही उन्होंने बेटे और दास को इधर उधर कर दिया है।"

रैबाई बोला— "ऐसा तो नहीं लगता। तुम्हारे पिता तो मुझे कोई विद्वान और बुद्धिमान आदमी लगते हैं। बोलने में जल्दी मत करो और न ही जल्दी में बिना विचारे कोई काम करो। मेरी सलाह यह है कि इस मामले पर पहले अच्छी तरह से विचार करो। कल सुबह हम लोग इस पहेली को सुलझायेंगे।"

अहमद जो इस समय दुख गुस्से और आश्चर्य के कारण थका हुआ था जल्दी ही गहरी नींद सो गया। सुबह को जब उसकी ऑख खुली तो रैबाई अपनी सुबह की प्रार्थना कर रहा था।

जब रैबाई ने अपनी प्रार्थना खत्म कर ली तब उसने कहा — "आज की सुबह कितनी सुन्दर है अहमद। सूरज तुम्हारी खुशी पर चमक रहा है।"

अहमद ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बहुत दुखी था। वह इस बात से भी सन्तुष्ट नहीं था जब रैबाई ने उसे तसल्ली दी कि सब कुछ ठीक हो जायेगा।

रैबाई ने कहा — "मैंने तुम्हारे पिता के शब्दों पर बहुत अच्छी तरह से विचार कर लिया है। मैं रात से ले कर सुबह तक बैठा रहा और अब मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि तुम्हारे पिता कोई बहुत ही बुद्धिमान आदमी थे।"

अहमद ने इशारे में अपना सिर ना में हिलाया पर रैबाई ने इसके ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया और शान्ति से आगे कहा — "तुम्हारे पिता को यह डर होगा कि तुम्हारी अनुपस्थिति में उसकी मृत्यु के बाद और तुम्हारे यहाँ आने के बीच में कहीं वह दास तुम्हारी सम्पत्ति को हड़प न ले। मुझे ऐसा लगता है कि पैड्रो इस वसीयत की शर्तें जरूर जानता होगा।

तुम्हारे पिता ने यह अजीब सी वसीयत बना कर और इसे पैड्रो को बता कर तुम्हारी विरासत को पक्का कर दिया है।"

अहमद बड़बड़ाया — "मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।"

रैबाई बोला — "यह तो बिल्कुल साफ है। जैसे ही तुम तैयार होगे तब तुम अपना एक चुनाव करना। तुम वैसा ही करना जैसा मैं तुमसे कहूँ और फिर तुम अपने पिता की बुद्धिमानी देखना।"

अहमद के पास रैबाई की बात मानने के अलावा और कोई चारा नहीं था। वह इसका खुद कोई हल नहीं ढूँढ सका था इसलिये वह अपने आपको बहुत अभागा समझ रहा था। उसका तर्क कहता

था कि उसका पिता उसे बहुत प्यार करता था और रैबाई अपनी चतुरायी के लिये जाना जाता था।

उस दिन शहर के सब लोग अहमद के अपने पिता की सम्पत्ति में से एक और केवल एक चीज़ के चुनाव को जानने के लिये जमा हुए। उस समय अहमद के चेहरे पर उतनी परेशानी नजर नहीं आ रही थी जितनी कि वे लोग आशा कर रहे थे। और रैबाई के चहरे पर तो कोई भाव ही नहीं था।

पैड्रो अपनी सामान्य जगह पर बैठा हुआ था यानी वह दरवाजे के पास बैठा हुआ था – सीधा आज्ञाकारी और भावहीन जैसा कि वह हमेशा रहता था।

अहमद अपनी जगह से उठा और हाथ उठा कर सबको शान्त होने के लिये कहा। फिर बोला — "अपने पिता की इच्छा के अनुसार इस समय बॅटवारे के बाद मुझे उनकी सम्पत्ति में से केवल एक चीज़ चुननी है और मैं उसमें से उनका काला दास पैड्रो चुनता हूॅ।"

तब लोगों को पता चला कि उस वसीयत में बुद्धिमानी किस तरह छिपी हुई थी क्योंकि पैड्रो को चुन कर अहमद अब अपने पिता की इतनी सारी सम्पत्ति का मालिक बन गया था।

अहमद ने पैड्रो से जो अभी भी बिना किसी भाव के खड़ा था कहा — "पैड्रो मेरे दोस्त तुमको अब अपनी आजादी और जीवन भर के लिये रहने सहने का खर्चा मिल जायेगा।"

पैड्रो बोला — "मैं तो केवल आप ही की सेवा करना चाहता हूँ। मैं तो उसी की वफादारी से नौकरी करना चाहता हूँ जो आपके पिता के चरण चिन्हों पर चलेगा।"

इस तरह सब सन्तुष्ट थे।

21 समुद्र में स्वर्ग[105]

टीयर का राजा हिरम[106] एक बहुत ही बेवकूफ राजा था। वह इतने सालों तक ज़िन्दा रहा कि वह इतनी बड़ी उम्र तक पहुँच गया था कि उसे भ्रम होने लगा था कि वह कभी मरेगा ही नहीं। यह विचार उसके दिमाग में रोज ब रोज मजबूत होता गया और इस तरह वह यह सोच सोच कर आनन्दित होता रहा।

"पहले मैं ज्यूज़ के राजा डेविड को जानता था और फिर उसके बेट राजा सोलोमन को जानता हूँ पर वह कितना भी बुद्धिमान सही फिर भी उसको मुझसे अपना आश्चर्यजनक मन्दिर बनवाने के लिये सहायता माँगनी पड़ी।

और वह भी उन बहुत होशियार कारीगरों की सहायता से ही बनाया जा सका जिन्हें मैंने उसके पास भेजा तभी वह अपनी उस बिल्डिंग को सफलतापूर्वक पूरा कर सका।

और डेविड जो इज़रायल का इतना मीठा गाने वाला था और जिसने जब वह केवल लड़का ही था इतने बड़े शरीर वाले गोलियाथ को मार डाला था वह भी मर गया। मैं अभी तक ज़िन्दा हूँ।

---

[105] Paradise in the Sea. (Tale No 21)

[106] Hiram, the King of Tyre. His name is mentioned in the book "Raja Solomon" also by Sushma Gupta in Hindi, Prabhat Prakashan, Delhi. 2019. He was a great friend of the King Solomon.

ऐसा लगता है कि मैं तो कभी मरूँगा ही नहीं। सारे लोग मरते हैं केवल भगवान ही जो हमेशा रहता है। तो शायद मैं भगवान ही होऊँगा और क्यों नहीं।"

उसने यह सवाल अपने सलाहकारों के सरदार से पूछने की सोचा। वे भी उसके सवालों का जवाब देने के लिये उतने ही बुद्धिमान थे। राजा के ये सलाहकार उसके सवालों का जवाब देने में कभी असफल नहीं रहे थे।

इसलिये हिरम ने सोचा कि वह ऐसा सवाल उनसे पूछ कर उनको चकित कर देगा क्योंकि इस सवाल का जवाब तो धरती के किसी भी आदमी के लिये देना कठिन था। उसने सोचा कि यह एक दूसरा सबूत होगा जो यह बतायेगा कि वह दूसरे लोगों और राजाओं से अलग है। यानी कि वह भगवान है।

फिर वह बुदबुदाया "हॉ हॉ मुझे होना चाहिये। मुझे होना ही चाहिये।" और यह उसने इतनी अधिक बार कहा कि अब उसको यह लगने ही लगा कि यह सच है।

उसने अपने आप से कहा कि "यह मेरी नहीं बल्कि यह भगवान की आवाज है जो मेरे अन्दर से बोलती है।" और उसने यह इतने अच्छे से सोचा कि उसको लगा कि यह उसके लिये एक और सबूत है। अपने आपको भ्रमित करना कितना आसान है।

अब उसने यह सच दूसरों पर प्रगट करने की सोचा। और उस थरथराते हुए बूढ़े ने सोचा कि अगर वह यह सच किसी असामान्य तरीके से लोगों से कहेगा तो उसकी प्रजा को उसकी बात पर कोई शक नहीं होगा।

उसने यह घोषणा भगवान की तरह से हर किसी के सामने उनको विश्वास दिलाने के लिये नहीं की। सबसे पहले उसने इसे सलाहकारों के सरदार से कहा और उसे निर्देश दिया कि यह बात वह रोज एक आदमी से कहे। और वह आदमी भी उसी तरह से रोज एक आदमी से कहे।

इस तरीके से यह खबर यह खबर देश के हर कोने में फैल गयी। क्योंकि अगर तुम इस तरह थोड़ा थोड़ा भी करोगे तो वह भी जुड़ कर बहुत बड़ा हो जायेगा। एक से दो, दो से चार, चार से आठ, आठ से सोलह... लाखों।

पर इस सबके बावजूद कुछ नहीं हुआ। हिरम ने अब अपनी बेवकूफी में सबसे यह कहना शुरू कर दिया था कि वे उसकी पूजा करें क्योंकि वह अमर है और केवल भगवान ही अमर होता है।

कुछ लोगों ने इस डर से उसकी बात मानी कि अगर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी तो वह या तो उनको सजा देगा या उनको मार देगा। कुछ दूसरे लोगों ने कहा कि इस बात का क्या सबूत है कि वह भगवान है।

जब हिरम को इस बात का पता चला तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने अपने सलाहकारों से पूछा कि वह इसके लिये क्या सबूत चाहते हैं।

पहले तो सलाहकार कुछ हिचकिचाये पर उसका वज़ीर जिसके लम्बी दाढ़ी थी और जो बहुत चालाक था शान्ति से कहा — "मैंने सुना है कि लोग कहते हैं कि भगवान के पास तो स्वर्ग होना चाहिये जहाँ से बिजली कड़कती है और बादल गरजते हैं और जहाँ वह रहता है।"

कुछ पल शान्त रहने के बाद हिरम बोला — "मेरे पास भी स्वर्ग होगा। अगर सोलोमन मेरे कारीगरों की सहायता से एक इतना बढ़िया मन्दिर बनवा सका तो मैं भी अपने लिये एक स्वर्ग बनवा सकता हूँ।"

वह इस बात पर इतना अधिक सोचता रहा कि रोज उसको यह काम आसान से आसान लगने लगा। इसके अलावा उसको भी स्वर्ग में रहने को मिलेगा जो केवल उसी का होगा।

पहले तो उसने सोचा कि वह अपना एक सोने का महल बनवाये जिसमें कीमती पत्थरों की खिड़कियाँ लगी हों। उसमें एक बहुत ऊँची मीनार होगी जहाँ उसका सिंहासन रखा जायेगा जो उसकी जनता से बहुत ऊँचे पर होगा। तब वे जरूर ही उससे प्रभावित होंगे कि वह भगवान है।

बाद में उसने सोचा कि इस सबसे नहीं चलेगा। एक महल चाहे वह कितना ही बड़ा और सुन्दर क्यों न हो होगा तो आखिर एक बिल्डिंग ही तो है स्वर्ग तो नहीं। रात दिन वह इसके बारे में सोचता ही रहा सोचता ही रहा जब तक कि उसका सिर दर्द से फट नहीं गया।

तब एक दिन वह एक पानी का जहाज़ देख रहा था तब उसके दिमाग में एक असाधारण विचार आया। उसने आनन्द लेते हुए सोचा "मैं एक महल बनवाऊँगा जो पानी के ऊपर लटकता दिखायी लगेगा। ऐसा विचार तो भगवान के सिवा और किसी को आ ही नहीं सकता।"

हिरम तुरन्त ही अपना यह प्लान लागू करने की तैयारी में जुट गया। उसने अपने दूतों को दूर दूर तक भेजा कि वे चतुर पानी में डुबकी मारने वालों को खोज कर लायें। केवल उन्हीं डुबकी मारने वालों को चुना गया जो उस देश की भाषा नहीं जानते थे।

हिरम ने खुद ही उन सबको हुक्म दिये और वे केवल रात में ही काम करते थे ताकि उनके काम को न तो कोई देख सके और न ही उसके बारे में कोई जान सके।

उनका काम यह था कि वे चार खम्भों को समुद्र की तली से बाँधें। उन्होंने अपना काम पूरा कर दिया। उनको उनकी मजदूरी दे दी गयी और वे चले गये। उसके बाद किसी दूसरे देश से कुछ और

काम करने वाले बुलवाये गये। उन्होंने समुद्र में लगे खम्भों पर एक चबूतरा बनाया। फिर एक तीसरा झुंड बुलवाया गया जिसने उस चबूतरे पर महल बनाना शुरू किया।

ये सब भी रात को ही काम करते थे पर जब बिल्डिंग बननी शुरू हुई तो उसको छिपाया नहीं जा सका। शाही आदेश से उनसे कहा गया –

मैं टीयर का हिरम राजा और सब लोगों का
सर्वशक्तिमान भगवान
तुम सबको बताता हूँ और बड़ी खुशी से दिखाता हूँ
मेरा स्वर्ग
जिसे मैंने अब तक बादलों में छिपा रखा था
अब जो लोग योग्य हैं वही इसे देखेंगे
आज

हिरम ने अब तक जितने भी होशियारी के काम किये थे उनमें से वह अपनी इस घोषणा को सबसे अच्छा मानता था।

"जो इसे नहीं देख पायेंगे वे अयोग्य समझे जायेंगे और मेरे गुस्से से कॉपेंगे। जो रोज थोड़ा थोड़ा कर के देखेंगे वे अपने आपको धीरे धीरे योग्य समझते जायेंगे। और जो इसको पूरा देखेंगे वे ही पूर्णतया योग्य समझे जायेंगे।

इसके अलावा वे ऊपर की ओर बादलों की ओर से स्वर्ग को नीचे उतरते हुए देखेंगे। वे कभी उसको ऊपर उठता हुआ देखने के लिये नीचे देखने की सोचेंगे भी नहीं।"

और फिर ऐसा ही हुआ। जब लोगों ने यह आश्चर्यजनक बिल्डिंग देखी तो वे इस बात से बहुत ही अधिक प्रभावित हो गये। वह तो देखने में अपने ही बढ़ता जा रहा था क्योंकि वहाँ कभी कोई काम करता हुआ देखा ही नहीं गया। और वह सब उन्हें हवा में झूलता हुआ ही दिखायी दे रहा था किसी पर टिका हुआ दिखायी नहीं दे रहा था।

ऐसा इसलिये था कि क्योंकि उसकी पहली मंजिल इतने साफ शीशे की बनी हुई थी कि लोग उसके आरपार देख सकते थे और उनको लग रहा था उनको कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। इस शीशे की पहली मंजिल और ऊपर की मंजिलें बन रही थीं। और इसी लिये उनको वह बिल्डिंग हवा में टॅगी हुई दिखायी दे रही थी।

सात लोकों को दर्शाने के लिये उसमें सात मंजिलें थीं। शीशे की पहली मंजिल के ऊपर की दूसरी मंजिल लोहे की बनी हुई थी। तीसरी मंजिल लैड की बनी हुई थी। चौथी मंजिल चमकीली पीतल की बनी हुई थी। पॉचवीं मंजिल तॉबे की बनी हुई थी। छठी मंजिल चमकती चॉदी की थी और सातवीं मंजिल असली सोने की बनी हुई थी।

सारी बिल्डिंग पर बहुत सारे कीमती पत्थर रत्न और कई रंगों के जवाहरात जड़े हुए थे। जब दिन होता था तो उस पर जड़े हजारों रत्नों और चमकीली धातुओं से चमक निकलती थी।

इस चमक से आते जाते लोगों की ऑखें इतनी चौंधिया जाती कि वे इसके अलावा कुछ और सोच ही नहीं पाते कि वे स्वर्ग देख रहे हैं। जिसको भी वे इतनी चमक के कारण ऑख खोल कर ठीक से देख भी नहीं पाते।

जब सूरज डूबता था तो उसकी सबसे ऊपर की मंजिल पर जिस पर सुनहरा गुम्बद लगा हुआ था एक आग के गोले की तरह से चमकता था। और जब रात होती तो उसके रत्न सितारों की तरह चमकते।

इस सबके बावजूद कुछ लोगों को अभी भी यह विश्वास नहीं था कि वह स्वर्ग था सो हिरम ने फिर अपनी बुद्धि इस काम पर लगा दी। उसने सोचा कि मुझे कड़कती बिजली और गरजते बादल भी पैदा करने चाहिये। और उसकी महत्वाकांक्षा का यह भाग उसको कोई कठिन नहीं लगा।

इस बिल्डिंग की दूसरी मंजिल में उसने बहुत बड़े बड़े पत्थर और गोल भारी पत्थर रखे। जब वे लुढ़काये जाते तो उनकी आवाज को लोग गरज की आवाज समझते। और बहुत सारी खिड़कियों को घुमा फिरा कर हिरम शहर पर रोशनी फेंक कर लोगों को बिजली का ऐहसास दिला देता।

इससे वे लोग बहुत जल्दी इस बात से विश्वस्त हो जाते कि हिरम वास्तव में बिजली की कड़क और बादलों की गरज पैदा कर

रहा है। पर साथ में वे डर भी जाते क्योंकि उनको लगता कि उन्होंने वास्तव में बिजली की चमक देखी थी।

हिरम बोला — "जब मैं वहॉ इन तूफानों के ऊपर बैठा होता हॅू तो लोगों को समझना चाहिये कि मैं भगवान हॅू और उन्हें मुझे दुनियॉ के राजाओं से ऊपर समझना चाहिये।"

वह बादलों में अपनी उस राजगद्दी पर बैठ कर अपनी बेवकूफी पर बहुत खुश था पर उसके सलाहकार उसकी इस बात पर ना में सिर हिला रहे थे। वे सोच रहे थे कि उसकी इस बेवकूफी की उसे उचित सजा मिलेगी।

उन्होंने हिरम को चेतावनी दी कि वह तूफान के समय अपनी उस राजगद्दी पर न बैठे पर उसने गुस्से में भर कर कहा — "मैं भगवान हॅू मैं तूफान से नहीं डरता।"

पर जब उसके स्वर्ग के चारों ओर असली बादलों की गरज आसमान में इधर से उधर गयी और बिजली चमकी तो हिरम की हिम्मत जवाब दे गयी।

उसे कुछ कुछ दिखायी देने लग गया। उसका पूरा शरीर कॉप गया और वह अपने राज सिंहासन पर सिकुड़ कर बैठ गया। उसको लगा कि उसके चारों ओर देवदूत राक्षस और परियॉ नाच रहे हैं और उसके इस झूठ और इस आश्चर्यजनक बिल्डिंग का मजाक बना रहे हैं।

वह तूफान भयानक से और अधिक भयानक होता गया। बिजली की चमक बढ़ती गयी। बादलों की गरज और तेज़ होती गयी। यहाँ तक कि उसके स्वर्ग की पहली मंजिल के शीशे खड़खड़ाने लगे तो हिरम के मुँह से एक चीख निकल गयी।

उसकी बिल्डिंग की पहली मंजिल समुद्र की लहरों की तेज़ी नहीं सह सकी और वह एक बहुत तेज़ आवाज के साथ टूट गयी। अब ऊपर की छह मंजिलों को सँभालने वाला कोई नहीं रहा। अब वे आसमान में लटकी नहीं थीं।

बहुत ज़ोर की टूटने की आवाज के साथ ही पूरी बिल्डिंग हजारों टुकड़ों में टूट कर नीचे गिर गयी और देखने वाले डर के मारे काँपते से खड़े देखते रहे।

इसमें बस अच्छी बात यह थी कि हिरम को कुछ नहीं हुआ। वह डूबा भी नहीं। यह एक चमत्कार ही था कि वह बच गया था पर ऐसा हो गया था। इससे लोगों ने समझा कि वह सचमुच भगवान था। पर वह किसी बुरी मौत से मरने के लिये बच गया था।

उसको नैबूचैडनज़ार ने गद्दी से उतार दिया था और फिर उसके आन्तिम दिन उसकी जेल में कटे। फिर सभी लोग जान गये थे कि हिरम जो कभी टीयर का महान राजा था राजा डेविड और राजा सोलोमन का दोस्त था वह नाशवान और मूर्ख था।
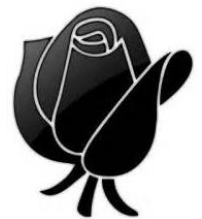
22 रैबाई का हौआ[107]

प्राचीन शहर प्राग[108] में एक रैबाई शेर[109] रहते थे। एक दिन वह अपने घर में अपना अध्ययन करने के लिये बैठे। वह कुछ चिन्तित थे। उनकी खिड़की से मोल्डौ नदी[110] साफ दिखायी देती थी जहाँ कब्रिस्तान था और उसके चारों ओर ज्यू लोगों के मकानों की बस्ती थी जिनमें तंग गलियाँ थी। यह जगह वहाँ आज भी मौजूद है।

रैबाई के मकान के उस पार शहर की मीनारें और बड़ी बड़ी इमारतें थीं। पर उस समय रैबाई के दिमाग में ज्यूज़ के प्रति लोगों की निर्दयता ही नहीं थी बल्कि कुछ और भी था। उसे कोई नौकर नहीं मिल रहा था। यहाँ तक कि सबाथ के दिन आग जलाने के लिये भी कोई नहीं मिल रहा था।

सच तो यह था कि लोग रैबाई से बहुत डरते थे क्योंकि रैबाई एक बहुत ही विद्वान बुद्धिमान मेहनती और वैज्ञानिक आदमी था। और वह क्योंकि लोगों के लिये आश्चर्यजनक काम करता था तो लोग उसको जादूगर भी कहते थे। उसके रसायन शास्त्र के प्रयोग उनको चकित कर देते थे।

---

[107] The Rabbi's Bogey-Man. (Tale No 22)

[108] Prague – the capital of Czech Republic country in Europe

[109] Rabbi Lion

[110] Moldau River

देर रात को वे उसकी खिड़की से छोटी छोटी नीली और लाल लपटें देखा करते थे। उसके लिये वे कहते थे कि राक्षस और जादूगरनियाँ उसके पीछे थे और उससे बात करते थे।

रैबाई ने अपने मन में सोचा कि "अगर जैसा कि लोग कहते हैं कि मैं जादूगर हूँ तो मैं अपने लिये एक नौकर क्यों न बना लूँ जो सबाथ के दिन मेरे लिये आग जलाया करे।"

बस यह दिमाग में आते ही वह इस काम को करने के लिये बैठ गया। कुछ ही हफ्तों में उसने अपना एक मशीनी नौकर बना लिया जो एक स्त्री थी। वह एक बड़ी ताकतवर और मजदूर स्त्री जैसी लगती थी। रैबाई अपने इस जादुई काम से बहुत खुश था।

अब उसने सोचा कि इसमें जान डाली जाये। आधी रात को अपने रहस्यमयी अध्ययन के बाद खाल के एक टुकड़े पर उसने भगवान का वह नाम लिखा जो पुकारा जाना मना था और उसे उस मशीनी यंत्र के मुँह में रख दिया।

तुरन्त ही वह मशीन उठी और किसी ज़िन्दा आदमी की तरह से हिलने डुलने लग गयी। उसने अपनी आँखें इधर उधर घुमायीं अपने हाथ इधर उधर चलाये और खिड़की में से चली जाने वाली थी कि रैबाई शेर ने डर के मारे उसके मुँह से खाल का टुकड़ा बाहर निकाल लिया। वह स्त्री बेचारी मजबूर सी फर्श पर नीचे गिर पड़ी।

रैबाई ने सोचा कि "मुझे इसके बारे में बहुत ही सावधान रहना चाहिये। यह बहुत सारी स्प्रिंग पेचों और लीवरों से बनी एक आश्चर्यजनक मशीन थी। रैबाई ने सोचा कि "जब मैं इसको ठीक तरह से चलाना सीख जाऊँगा तब यह मेरे बड़े काम की मशीन हो जायेगी।"

जब लोगों ने रैबाई की यह नयी मशीन देखी तो उन्होंने उसकी बड़ी तारीफ की। वह मशीन तो उनका कोई भी काम कर लाती थी और बहुत सारे काम घर में भी करती थी। और केवल उनकी सोच से ही चलती थी।

वह सब कुछ कर सकती थी सिवाय बोलने के। रैबाई शेर ने यह भी पता लगा लिया कि उसके सोने से पहले वह उसका नाम पुकारे नहीं तो वह उसके सो जाने के बाद कुछ गड़बड़ भी कर सकती थी।

एक सबाथ की शाम को रैबाई सायनागौग में भाषण दे रहे थे। कुछ छोटे बच्चे घर के बाहर खड़े उस मशीन स्त्री की ओर देख रहे थे जो खिड़की के पास ही खड़ी थी। उन्होंने उसको देख कर अपनी ऑखें घुमायीं तो उसने भी अपनी ऑखें घुमायीं।

आखिर उनके मुँह से निकला "आओ हमारे साथ खेलो न।"

यह सुन कर वह खिड़की से बाहर कूद गयी और बच्चों के बीच जा कर खड़ी हो गयी।

बच्चों में से एक बच्चे ने कहा — "आज बहुत ठंडा है। क्या तुम हमारे लिये आग जला सकती हो?"

अब वह मशीन तो आज्ञा पालन करने के लिये ही बनायी गयी थी सो उसने तुरन्त ही कुछ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और सड़क पर आग जला दी। फिर वह बहुत खुशी खुशी उनके साथ आग के चारों ओर नाचने लगी।

कुछ देर बाद उसने और लकड़ियाँ और पुराने बैरल इकट्ठे किये और उन्हें आग में डाल दिये। इससे आग और बढ़ गयी और एक घर में जा कर लग गयी। इससे बच्चे डर गये और वहाँ से भागने लगे।

आग बढ़ती गयी और इतनी बढ़ी कि सारा शहर डर गया। इससे पहले कि आग को बुझाया जा सकता उस आग में कई मकान जल गये और बहुत नुकसान हो गया।

वह मशीन स्त्री कहीं दिखायी नहीं दे रही थी। केवल वह खाल का टुकड़ा जो उसके मुँह में रखा था वही राख के ढेर में से मिला। जिसका अर्थ यह था कि वह इस आग में जल गयी थी।

शहर की काउन्सिल के कानों तक जब यह बात पहुँची तो वे सब बहुत गुस्सा हुए और रैबाई शेर को राजा रुडोल्फ के सामने हाजिर होने का हुक्म हुआ।

राजा रुडोल्फ ने पूछा — "यह मैं क्या सुन रहा हूँ। क्या किसी ज़िन्दा आदमी को बनाना पाप नहीं है?"

रैबाई ने कहा — "उसके अन्दर प्राण नहीं थे। उसके अन्दर तो केवल वही था जो "पवित्र नाम" ने उसे दिया था।"

राजा रुडोल्फ ने कहा — "यह बात मेरी समझ में नहीं आती। तुम्हें जेल में बन्द किया जाता है वहाँ तुम एक दूसरा प्राणी बनाओगे ताकि मैं उसे अपनी आँखों से देख सकूँ। क्योंकि अगर वैसा ही है जैसा कि तुम कह रहे हो तो मैं तुम्हें जीवन दान दे दूँगा।

और अगर ऐसा नहीं हुआ तो क्योंकि तुम भगवान का पवित्र नियम तोड़ रहे हो और एक ज़िन्दा चीज़ बना रहे हो इसके लिये तुम्हें मरना पड़ेगा। और तुम्हारे लोगों को भी इस शहर से बाहर निकाल दिया जायेगा।"

रैबाई शेर तुरन्त ही अपने काम पर लग गया। इस बार उसने एक आदमी बनाया और उसे उस स्त्री से भी काफी बड़ा बनाया जो पहले जल गयी थी।

जब रैबाई का काम खत्म हो गया तब रैबाई ने राजा से कहा — "जैसा कि यौर मैजेस्टी देख सकते हैं यह प्राणी केवल लकड़ी गोंद और जोड़ों में स्प्रिंग का बना हुआ है। अब आप देखें।" कह कर उसने भगवान का पवित्र नाम उसके मुँह में रख दिया और वह प्राणी धीरे धीरे उठा और उसने राजा को सलाम किया।

राजा रुडोल्फ यह देख कर इतना खुश हुआ कि वह तुरन्त ही बोला — "इसे मुझे दे दो।"

रैबाई ने बड़ी गम्भीरता से कहा — "नहीं यह नहीं हो सकता। यह पवित्र नाम मेरे अलावा किसी दूसरे को नहीं दिया जा सकता नहीं तो यह प्राणी फिर से कोई न कोई बड़ा नुकसान कर देगा। इस बार मैं इसकी पूरी देखभाल करूँगा और सबाथ के दिन इसको इस्तेमाल नहीं करूँगा।"

राजा रुडोल्फ ने इसमें रैबाई की बुद्धिमत्ता देखी और उसे छोड़ दिया। उस प्राणी को भी उसे घर ले जाने की आज्ञा दे दी। ज्यूज़ ने जब इस प्राणी को रैबाई शेर के साथ सड़क पर चलते देखा तो उसे बड़े आश्चर्य से देखा पर बच्चे उसे देख कर उसे "हौआ" कह कर भाग गये।

रैबाई ने इस बार अपने हौए के साथ बहुत सावधानी बरती। अब वह हर शुक्रवार के दिन सबाथ शुरू होने से पहले उसके मुँह में से भगवान का पवित्र नाम निकाल लेते और उसे शक्तिहीन कर देते।

पर वह हर रोज पहले से अच्छा होता गया और एक दिन तो उसने रैबाई को भी सोते में चौंका दिया क्योंकि अब वह बोल पड़ा था। वह बोला — "मैं एक सिपाही बनना चाहता हूँ और राजा के

लिये लड़ना चाहता हूँ। मैं राजा का हूँ। क्योंकि आपने मुझे उसके लिये बनाया है।"

रैबाई शेर चिल्लाया — "चुप।" और उसको रैबाई की बात माननी पड़ी। रैबाई ने अपने आपसे कहा "मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता। इस राक्षस को मेरा मालिक नहीं बनना चाहिये नहीं तो यह मुझे नष्ट कर देगा या फिर शायद सारे ज्यूज़ को ही खत्म कर देगा।"

पर वह यह आश्चर्य किये बिना न रह सका कि क्या राजा सही था। क्या किसी ज़िन्दा चीज़ को बनाना पाप था। यह प्राणी तो केवल बोला ही नहीं पर यह तो मेरी आज्ञा उल्लंघन करने वाला भी हो गया।

लेकिन फिर भी रैबाई उसको तोड़ नहीं सका क्योंकि वह उसके लिये बहुत काम की चीज़ थी। वह उसके लिये सारा खाना बनाता था उसके कपड़े धोता था उसके घर की सफाई करता था।

वह उसके घर में तीन नौकरों से भी अधिक का काम करता था। और सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि वह ये सब काम बहुत सफाई और जल्दी से करता था।

एक शुक्रवार की शाम को जब रैबाई सायनागौग के लिये जा रहा था तो उसको सड़क कर बहुत ज़ोर का शोर सुना। लोग उसके दरवाजे पर आ कर उसको ज़ोर ज़ोर से बाहर बुला रहे थे।

वे कह रहे थे — "जल्दी आओ। यह तुम्हारा हौआ सायनागौग के अन्दर जाने की कोशिश कर रहा है।"

रैबाई शेर तुरन्त ही डर कर सायनागौग की ओर भागा। वह राक्षस घर में से छिप कर निकल गया था अऔर अब सायनागौग के दरवाजे में घुस रहा था।

रैबाई ने उसे ज़ोर से डॉटते हुए पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

राक्षस ने जवाब दिया — "मै सायनागौग में पवित्र कानून के कागज नष्ट करने जा रहा था। उसके बाद तुम्हारा मेरे ऊपर कोई नियन्त्रण नहीं रहेगा। फिर मैं एक हौओं की एक बहुत बड़ी सेना बनाऊॅगा जो राजा की ओर से लड़ेगी और सब ज्यूज़ को मार देगी।"

यह सुन कर रैबाई शेर बोला — "मैं तुझे इससे पहले मार दूॅगा।" कहते हुए वह उसकी ओर वह खाल का टुकड़ा निकालने के लिये आगे बढ़ा जो उसके मुॅह में रखा हुआ था। वह उसे निकालने में सफल हो गया।

जैसे ही उसने वह टुकड़ा उसके मुॅह से निकाला वह मशीन निर्जीव हो कर जमीन पर उसके पैरों के पास गिर पड़ी। उसके सब टुकड़े और स्प्रिंग आदि सब टूट गये थे।

बहुत साल बाद ये टूटे हुए टुकड़े उस सायनागौग के ऐटिक में आने वाले मेहमानों को दिखाये गये और रैबाई के हौए की यह कहानी उनको सुनायी गयी।

23 परी मेंढक[111]

एक बार की बात है कि एक बड़ा विद्वान और धनवान आदमी था जिसके एक ही बेटा था जिसका नाम हनीना[112] था। यह लड़का बड़ा था इसकी शादी हो गयी थी।

एक दिन पिता ने अपने इस बेटे के पास अपना एक आदमी भेजा जिसने उससे जा कर कहा कि उसका पिता उससे तुरन्त ही मिलना चाहता था। वह भी तुरन्त ही उससे मिलने गया तो पाया कि उसके माता पिता दोनों ही बहुत बीमार थे।

पिता बोला — "सुनो ओ मेरे बेटे। हम लोग तो अब मरने वाले हैं। पर तुम हमारे लिये दुखी मत होना क्योंकि हमारे लिये यही लिखा हुआ था। हम लोग ज़िन्दगी भर साथियों की तरह से साथ साथ रहे हैं। यह हमारे लिये बड़े सौभाग्य की बात थी कि हम इस दुनियॉ में एक साथ रहे।

तुम हमारे लिये रीति रिवाज के अनुसार सात दिनों तक शोक मनाना। वे पासओवर[113] की शाम को खत्म हो जायेंगे।

---

[111] The Fairy Frog. (Tale No 23)

[112] Hanina

[113] Passover - Passover, Hebrew Pesaḥ or Pesach, in Judaism, a holiday commemorating the Hebrews' liberation from slavery in Egypt and the "passing over" of the forces of destruction, or the sparing of the firstborn of the Israelites, when the Lord "smote the land of Egypt" on the eve of the Exodus.

उस दिन तुम बाजार जाना और तुम वह चीज़ खरीद लेना जो भी तुमको खरीदने के लिये कहा जाये चाहे वह कुछ भी हो और बेचने वाला उसका कितना भी मूल्य क्यों न माँगे। वह तुम्हारे लिये अच्छा भाग्य ले कर आयेगी। बेटे मेरी बात को ध्यान में रखना और भगवान ने चाहा तो सब कुछ अच्छा ही होगा।"

हनीना ने अपने पिता की इस अजीब सी बात को मानने का वायदा किया और फिर सब कुछ उसके पिता के कहे अनुसार ही हुआ। उसके माता पिता उसी दिन मर गये। उन दोनों को एक साथ ही दफ़न कर दिया गया।

एक हफ्ते के शोक के बाद पासओवर के पहली शाम को हनीना बाजार चल दिया। वह चकित था यह सोच कर कि पता नहीं उसकी किस्मत में क्या लिखा था।

वह अभी बाजार में घुसा ही था जहाँ तरह तरह की चीज़ें बिकने के लिये रखी हुई थीं कि तभी एक बूढ़ा उसके सामने एक चाँदी की सन्दूकची जिसका डिजाइन कुछ अजीब सा था ले कर आया और बोला — "तुम इसे खरीद लो मेरे बेटे। यह तुम्हारे लिये अच्छी किस्मत ले कर आयेगा।"

हनीना ने पूछा — "इसके अन्दर क्या है?"

उसने जवाब दिया — "यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता। वास्तव में यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता क्योंकि मुझे मालूम ही नहीं है कि

इसके अन्दर क्या है क्योंकि इसे केवल खरीदने वाला ही पासओवर की दावत से पहले खोल सकता है।"

हनीना उसकी इस बात से बहुत प्रभावित हुआ। मामला वैसे ही चल रहा था जैसा उसके पिता ने कहा था। सो उसने उसकी कीमत पूछी तो बूढ़े ने कहा कि वह एक हजार सोने की मुहरों का था।

अब यह तो बहुत बड़ी रकम थी शायद उतनी जितनी कि उसके पास थी। पर हनीना ने अपने पिता की बात याद कर के उसे उसी कीमत पर खरीद लिया और उसे घर ले गया।

घर ले जा कर उसने उस सन्दूकची को मेज पर रख दिया। जब पासओवर त्यौहार शुरू हुआ तब उसने उसे खोला। खोलने पर उसे उसमें उसे एक और छोटी सन्दूकची दिखायी दी। उसने उसे भी खोला तो उसमें से एक मेंढक कूद गया।

हनीना की पत्नी यह देख कर बहुत निराश हुई। उसने उसे खाना दिया क्योंकि वह सन्दूकची से बाहर निकलते ही सब कुछ खाने लगा था। और उनके पास तो अपने खाने के लिये ही खाना पूरा नहीं था।

हालाँकि दिन पर दिन उनकी मुश्किलें बढ़ती जा रही थीं पर उन्होंने कोई शिकायत नहीं की। वे उस मेंढक को खाना खिलाने के लिये अपनी सारी चीज़ें बेचने पर बाध्य हो गये। यहाँ तक कि अब वे बिल्कुल गरीब हो गये थे।

अब हनीना की पत्नी का साहस खत्म हो चुका था सो वह बैठ कर रोने लगी। पर आश्चर्य की बात यह थी कि मेंढक जो अब तक किसी आदमी जितना बड़ा हो चुका था उससे बोला — "ओ हनीना की पत्नी सुनो। तुमने मुझे बहुत अच्छी तरह से रखा इसलिये तुम्हें मुझसे जो तुम्हें चाहिये माँग लो। मैं तुम्हारी सब इच्छाऐं पूरी करूँगा।"

हनीना की पत्नी ने रोते हुए कहा — "हमें खाना चाहिये।"

मेंढक बोला — "यह लो।" और उसी पल किसी ने उसका दरवाजा खटखटाया और एक बड़ी टोकरी भर कर खाना आ गया।

हनीना अभी तक एक शब्द भी नहीं बोल पाया था कि मेंढक ने उससे फिर पूछा "बोलो तुम्हें और क्या चाहिये।"

हनीना ने सोचा कि जो मेंढक बोल सकता है और ऐसे आश्चर्यजनक काम कर सकता है वह तो बहुत अक्लमन्द होना चाहिये सो हनीना बोला — "तुम मुझे आदमियों के तौर तरीके सिखा दो।"

मैंढक बोला "ठीक है।" और उसने उसे तौर तरीके सिखाने शुरू कर दिये। उसका सिखाने का तरीका बहुत अजीब था। उसने ये नियम सत्तर अलग अलग भाषाओं में कागज पर लिख दिये।

फिर उसने हनीना से कहा कि वह उनको निगल जाये। हनीना ने वैसा ही किया और हनीना को सब कुछ आ गया। यहाँ तक कि उसे जानवरों और चिड़ियों की भाषा भी आ गयी। अब सारे लोग उसे उस समय का सबसे अधिक अक्लमन्द आदमी मानने लगे।

एक दिन मेंढक फिर बोला — "अब समय आ गया है जब मुझे तुम्हारी उन सब मेहरबानियों का बदला चुका देना चाहिये जो तुम लोगों ने मेरे ऊपर की हैं। तुम्हारा इनाम बहुत बड़ा है। आओ तुम लोग मेरे साथ जंगल चलो। तब तुम वह सब आश्चर्य देखोगे।"

सो एक सुबह हनीना और और उसकी पत्नी दोनों उस बड़े से मेंढक के पीछे पीछे जंगल की ओर चल दिये। जब मेंढक जा रहा था तो एक हँसी का सा दृश्य लग रहा था।

जब मेंढक जंगल में पहुँचा तो अपनी बहुत ज़ोर की आवाज में टर्राया — "ओ पेड़ों पर गुफाओं में और नदियों में रहने वालो सब मेरे पास आओ और जैसा मैं कहूँ वैसा करो। धरती के नीचे से पेड़ों की जड़ों से और दवा वाले पौधों से बहुत सारे कीमती पत्थर ले कर आओ।"

उसको यह कहते ही एक बहुत ही अजीब सा जुलूस वहाँ आना शुरू हो गया। पेड़ों में से तरह तरह की सैंकड़ों चिड़ियें चीं चीं करती निकल कर वहाँ आ गयीं।

धरती के नीचे से हजारों कीड़े मकोड़े रेंगते हुए वहॉ आ गये। जंगल में से सबसे छोटे से ले कर सबसे बड़े तक बहुत सारे जानवर वहॉ आ गये।

सारे झुंड मेंढक के लिये कुछ न कुछ भेंट ले कर आये थे जिन्हें उन्होंने हनीना और उसकी पत्नी के पैरों के पास रख दिया जो डरे हुए से खड़े थे। जल्दी ही कीमती पत्थरों और दवाओं का ढेर लग गया।

मेंढक ने कहा — “यह सब तुम्हारा है। ये दवाऐं और जड़ें भी उतनी ही कीमती हैं जितने कि कीमती पत्थर क्योंकि तुम इनसे हर रोग ठीक कर सकते हो। क्योंकि तुमने अपने मरते हुए पिता की इच्छा पूरी की और मुझसे एक भी सवाल नहीं पूछा यह सब तुम्हारा उसका इनाम है।”

हनीना और उसकी पत्नी ने मेंढक को बहुत बहुत धन्यवाद दिया पर फिर हनीना ने पूछा — “क्या हम जान सकते हैं कि तुम कौन हो?”

मेंढक बोला — “हॉ हॉ। मैं ऐडम का परी बेटा हूॅ और अपनी इच्छा अनुसार कोई भी शक्ल ले सकता हूॅ। अच्छा विदा।”

यह कहने के बाद मेंढक छोटा होता चला गया और एक सामान्य मेंढक जैसा हो गया। फिर उसके बाद एक नदी में कूद गया और गायब हो गया। जंगल में रहने वाले भी सब अपने अपने घर

चले गये। हनीना भी अपनी पत्नी के साथ अपने घर चला गया। बाद में वे अपनी सम्पत्ति अपनी बुद्धिमानी और अपने दान के लिये बहुत प्रसिद्ध हो गये और बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

24 मीनार की राजकुमारी[114]

राजकुमारी सोलीमा[115] बीमार थी। वास्तव में वह बीमार नहीं थी पर उसके पिता राजा जुलीमान[116] कुछ गुस्सा से थे और परेशान थे। राजकुमारी उतनी ही सुन्दर थी जितनी सुन्दर उन दिनों की राजकुमारियाँ हुआ करती थीं।

उसके लम्बे लम्बे बाल सोने के धागों जैसे थे। उसकी आँखों का नीला रंग गर्मी के आसमान के नीले रंग का मुकाबला करता था। उसकी मुस्कान धूप जैसी चमकीली थी। वह विद्वान थी होशियार थी और उसका दिल इतना अच्छा था कि उसकी सुन्दरता असाधारण सुन्दरता में गिनी जाती थी।

इस सबके बावजूद राजकुमारी सोलीमा खुश नहीं थी। वह बहुत दुखी थी और उसके दुख से उसके पिता भी बहुत दुखी थे। उसके पिता ने उससे सैंकड़ों बार पूछा कि "मेरी बच्ची तुम्हें क्या दुख है।"

पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस बिल्कुल चुपचाप बैठी रही। पर उसको लगा कि उसका दिल भारी होता जा रहा है। वह दुबली भी नहीं हो रही थी इससे उसे देखने आने वाले डाक्टर

[114] The Princess of the Tower. (Tale No 24)
[115] Princess Zulima
[116] King Zuliman

बहुत परेशान थे। वह पीली नहीं पड़ रही थी जिसने उसकी नौकरानियों को परेशान कर रखा था। वह रोती भी नहीं थी जिसका उसे खुद ही बहुत आश्चर्य था।

उसको बस ऐसा लगता था जैसे उसे किसी चीज़ में कोई रुचि ही नहीं रह गयी थी।

तब राजा ने अपने जादूगरों और टोना टोटका करने वालों को बुलवाया और उनसे कहा कि वे उसकी बेटी को ठीक करने में अपनी कला का पूरा पूरा ज़ोर लगा दें और राजकुमारी सोलीमा की बीमारी का पता चलायें।

एक अजीब सा समूह था वह जो राजा के सामने अर्द्धचन्द्राकार शक्ल में खड़ा हुआ था। उस समूह में एक मिस्र का ज्योतिषी था। एक छोटा कुबड़ा था। एक चीन का दवाऐं मिला कर बनाने वाला था।

एक पीला आदमी था जिसकी ऑखें बहुत छोटी छोटी थीं। एक अरब का रसायन बनाने वाला था। एक भौंह चढ़ा आदमी था जिसका लगभग पूरा चेहरा मूँछों से ढका हुआ था। एक यूनानी था। एक फारसी था और एक फोनीशियन था।

सब अपनी अपनी कला में होशियार थे और अपनी अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिये आतुर थे।

सब अपने अपने काम में लग गये। एक ने सितारों का अध्ययन किया। दूसरे ने एक मीठा काढ़ा तैयार किया। तीसरा जंगल चला गया और वहाँ जा कर गहरे विचारों में डूब गया। चौथे ने कुछ तस्वीरें बना कर गुणा भाग करना शुरू कर दिया।

पाँचवे ने राजकुमारी की दासियों से पूछताछ करनी शुरू कर दी। छठे ने राजकुमारी से बातें करनी शुरू कर दीं। लगता था कि जैसे वह कोई असली जादूगर था और उसी को सबसे अधिक खबर मिली।

उसके बाद सब इकट्ठे हुए और विदेशी भाषाओं में बात की। ऐसा लग रहा जैसे वे एक दूसरे की बातें बड़ी गम्भीरता से समझ रहे हों। एक ने कहा कि राजकुमारी के सितारे एक दूसरे के विरोध में बैठे हुए थे।

दूसरे ने कहा कि उसने अपने क्रिस्टल में देखा तो उसने देखा कि एक जुगनू एक हिप्पोपोटैमस के पीछे भाग रहा था। जिसका तीसरे ने यह विश्लेषण किया कि अगर जुगनू यह दौड़ जीत गया था तो राजकुमारी मर जायेगी।

जादूगर ने राजकुमारी से कहा — "यह बिल्कुल बेकार की बात है। सत्तर अनजान भाषाओं में भी ऐसी बातें सब बेकार हैं।"

अब यह तो उनकी भविष्यवाणी पर एक बड़ी खास टिप्पणी थी इसलिये उन्होंने उसे बहुत ध्यान दे कर सुना।

जादूगर ने कहा — "राजकुमारी बस थकी हुई हैं। जैसे जैसे दुनियाँ आगे बढ़ती जायेगी और अमीरी बढ़ती जायेगी यह बीमारी भी बढ़ती जायेगी। ये इस बात से बीमार हैं कि इनके पास बहुत सारी दासियाँ हैं। कोई इनके हाथों के लिये है कोई इनके पैरों के लिये है कोई इनके सामने झुकने के लिये है आदि आदि।

इन्हें कभी सामान्य बच्चों की तरह से नहीं घूमने दिया गया। अपने साथियों को अपने आप नहीं चुनने दिया गया। और भी बहुत सारे ऐसे काम नहीं करने दिये गये जो सामान्य बच्चे करते हैं। इसी लिये ये इन सब चीज़ों से ऊब गयी हैं। इनका यह मामला तो साफ है। इनको धैर्य विवेक आदि की जरूरत है।"

यह सुन कर दूसरे लोग जँभाइयाँ लेने लगे और शब्दकोष देखने लगे। यह देख कर कि वे लोग उन शब्दों के अर्थ देख कर उस पर बरस पड़ेंगे वह चुप हो गया।

उस सभा के सरदार जो सबसे बड़ी उम्र का था उसने कहा — "शायद ये ठीक कह रहे हैं। मैं इस बीमारी को और सादा तरीके से कहना चाहता हूँ। राजकुमारी को प्यार हो गया है।"

यह सुन कर सब लोग आपस में फुसफुसाने लगे। फिर सब सलाह कर के इस नतीजे पर पहुँचे कि अब राजकुमारी की शादी कर देनी चाहिये ताकि वह किसी नयी जगह जा सके दूसरे लोगों रह सके और नयी चीज़ें देख सके।

राजा अनमनेपन से राजी हो गया क्योंकि वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था और यही चाहता था कि अगर यह सम्भव है तो वह हमेशा उसी के पास रहे।

पर अब इस नयी सलाह के अनुसार बहुत सारे दूत इधर उधर दूर पास भेजे गये। बहुत जल्दी ही राजकुमारी का हाथ माँगने के लिये राजकुमारों की लाइन लगनी शुरू हो गयी। हर तरह की शक्ल रंग और आकार के राजकुमार थे।

कुछ बहुत सारे जवाहरात पहने हुए थे। कुछ के साथ भेंट लिये हुए बहुत सारे नौकर आये हुए थे।

कुछ किसी दूसरे का प्रतिनिधित्व कर रहे थे यानी कुछ ने लड़की को देखने के लिये पहले किसी और को भेज दिया था ताकि वे लड़की के बारे में फैसला ले सकें। इनको राजकुमारी ने यह कहते हुए बहुत जल्दी ही वापस भेज दिया कि वे न्यायपूर्ण तरीके से व्यवहार नहीं कर रहे थे।

जब सारे उम्मीदवारों को राजा ने देख लिया तब उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी सोलीमा। तुम इनमें से जिसे चाहो चुन लो।"

उसने तुरन्त ही उत्तर दिया — "कोई नहीं।"

राजा बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। क्योंकि तब हमें इन सबकी भेंटें वापस करनी पड़ेंगी।"

राजकुमारी को इस बात की बिल्कुल चिन्ता नहीं थी और न उसे अपने पिता की विनती की चिन्ता थी कि उसकी उसके जानने वाले राजकुमारों की निगाहों में कितनी बदनामी होगी।

राजा ने अपना धीरज खोते हुए कहा — "पर तुम मुझे बताओ तो सही कि तुम चाहती क्या हो।"

राजकुमारी बोली — "मैं किसी भी आदमी से शादी करूँगी।" उसके इतना कहते ही राजा सोचने लगा कि न जाने राजकुमारी अब क्या कहने वाली है। वह आगे बोली — "जो कम से कम इतना बेवकूफ न हो जो अपने आपको दुनियाँ भर का सबसे महत्वपूर्ण आदमी समझता हो।"

अब राजा कोई बुद्धिहीन तो था नहीं। वह समझता था कि जिस मूड में यह टिप्पणी की गयी थी उसकी यह टिप्पणी बेवकूफी की थी या अक्लमन्दी की और इसके पीछे उसके विचार क्या थे।

राजा ने उससे मुलायमियत से पूछा — "तो क्या तुम्हें इनमें से कोई पसन्द नहीं है जो तुम्हारे योग्य हो।"

राजकुमारी बीच में ही बात काट कर बोली — "सुनिये पिता जी। आपने मुझे हमेशा खुश रखने की कोशिश की है और अभी तक आपने मुझे खुश रखा भी है।

मैं आपकी हर बात मानने के लिये तैयार हूँ यहाँ तक कि आपकी पसन्द का पति भी। पर क्या आप सचमुच में आप मेरी

शादी इनमें से किसी बेवकूफ से करना चाहते हैं? आप मुझसे गुस्सा न हों। क्या इनमें से किसी में भी ज़रा सी भी अक्लमन्दी या सामान्य ज्ञान की कोई किरन आपको दिखायी देती है? क्या ये सब हॅसी के पात्र नहीं हैं?

मैं आपको विस्तार में बताती हूॅ – इनमें से एक राजकुमार हाफिज़ था जो अपनी लड़ाइयों और उन आदमियों स्त्रियों और बच्चों के बारे में ही बात करता रहता था जिन्हें उसके सिपाहियों ने मारे थे। वह अपने आपको एक योद्धा और हीरो के रूप में मुझे दिखाना चाहता था। मैं ऐसे देश की रानी नहीं बनना चाहती जहॉ के लोग शान्ति में न रहते हों।

फिर एक राजकुमार अज़ीज़ था जो इस बात की डींग हॉक रहा था कि उसकी सारी ज़िन्दगी शिकार में घोड़ों कुत्तों और बाज़ों के साथ बितायी है। वह जानवरों की जरूरतों को तो समझता है पर आदमियों की जरूरतों को नहीं।

मैं ऐसे राजकुमार की दुलहिन नहीं बनना चाहती जो अपनी प्रजा को गरीबी और दीनता में भूखा मारे और खुद जंगली जानवरों को मारने में खुशी प्राप्त करे।

एक राजकुमार गुज़मान थे जिनके पास मुझसे कीमती पत्थरों और पोशाकों के बारे में बात करने के सिवा और कुछ नहीं था।

राजकुमार अब्दुल केवल यही बात करता रहा कि वह दिन में शराब की कितनी बोतलें खाली कर देता था पर वह मुझे यह नहीं बता सका कि उसके शहर में कितने स्कूल थे।

राजकुमार हसन को इस बात का ज़रा भी अन्दाजा नहीं था कि उसकी प्रजा में अधिकतम लोग क्या करते थे – बिज़नस करते थे या व्यापार करते थे या चोरी करते थे या फिर भीख माँगते थे।"

राजा जुलीमान ने अपनी बेटी की सभी बातें बड़े ध्यान से सुनी। हालाँकि राजकुमारी के लिये यह एक असाधारण भाषण था पर राजा को लगा कि अगर इसे तर्क से देखा जाये तो यह एक बुद्धिमत्ता भरा भाषण था।

फिर सोलीमा अचानक ज़ोर से रो पड़ी — "पिता जी। मैं थक गयी हूँ। मेरी ऐसे जीने की कोई इच्छा नहीं है कि अगर आप आदमियों स्त्रियों और बच्चों पर राज करें और उनकी भलाई की बात न सोचें।

पिता जी। सुनिये। मैं ऐसे देश की रानी नहीं बनना चाहती जहाँ राजा यह सोचता हो कि केवल उसके देश की जनता उसको बड़ा बनाये। मुझे वहाँ बड़ा होना अच्छा लगेगा और वहाँ गर्व महसूस होगा जहाँ राजा यह समझता हो कि उसका यह कर्तव्य हे कि वह अपनी जनता को खुश रखे और देश को वैभवशाली बनाये।"

राजा अपनी बेटी को छोड़ कर चला गया। वह बहुत चिन्तित था। उसने अपने जादूगरों को बुलवाया। उसने उनसे कहा — "मेरी बेटी अपने समय से हजारों साल पहले जन्मी है। सितारों ने मेरे साथ चाल खेली है। उन्होंने समय से पहले ही मेरी पोती की पोती की पोती की पोती को मेरे घर में भेज दिया है।"

जादूगरों को यह सुन कर हॅसी नहीं आयी। उनको लगा कि यह तो एक साधु वाला भाषण था। वे इसके बारे में बहुत देर तक आपस में फुसफुसा कर बात करते रहे। फिर एक दूसरे से सलाह कर के किताबें देख कर क्रिस्टल देख कर उन्होंने राजा को बताया कि उसकी बेटी किसी गरीब से शादी करेगी।

इस परिणाम पर पहुँच कर उन लोगों ने सोचा कि जैसे उन्होंने कोई बहुत बड़ी भविष्यवाणी कर दी है जो उन्होंने केवल राजकुमारी के राजकुमारों के वर्णन से ही निकाली थी।

राजा जुलीमान का धैर्य अब तक समाप्त हो चुका था। उसका गुस्सा अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुका था। उसने अपनी बेटी से वही कहा जो उसके जादूगरों ने उससे कहा था।

और जब उसने केवल यही कहा — "ओह कितना अच्छा होगा।" तो उसका मन किया कि वह उसको समुद्र में बने हुए किले के अन्दर बन्द कर दे। पर हिज़ मैजेस्टी का मतलब भी यही था।

हिज़ मैजेस्टी का एक छोटा सा किला समुद्र के बीच में एक छोटे से टापू पर था। उन्होंने उस किले को बहुत अच्छी तरह से सजवाया। उसमे सुख सुविधा के सारे सामान रखे। और उसे अपनी बेटी के लिये तैयार करवा दिया।

फिर एक रात उसने अपनी बेटी को गुप्त रूप से वहाँ उस किले में भिजवा दिया पर बेटी ने भी उसकी इस इच्छा का कोई विरोध नहीं किया। उसने कहा — "अच्छा है कि मैं कुछ समय के लिये महल के इस वातावरण से आजाद रहूँगी।

XXXXXXX

राजकुमारी के गायब हो जाने से लोग दुखी हो गये क्योंकि वह सबके साथ बहुत अच्छी थी। वह सबको समझती थी। उन्हें तो बेचारों को यह भी पता नहीं था कि वह मर गयी या विदा का एक शब्द कहे बिना ही चली गयी हालाँकि ऐसा होना बहुत मुश्किल था।

बस उनको इतना पता था कि राजा अचानक से गुस्सा हो गया था। और इससे भी ज़्यादा आश्चर्य की बात यह थी कि वह अब गरीबों में रुचि लेने लग गया था। वह अब उनसे अजीब अजीब से सवाल पूछने लग गया था जो एक राजा के लिये ठीक नहीं थे।

जैसे वे अपनी जीविका कैसे कमाते थे? वे क्या करते थे? क्या वे खुश थे? वे क्या सोचते थे? आदि आदि।

नौजवान लोग तो इन बातों पर हॅसते थे पर बूढ़े लोगों का कहना था कि राजा इस तरह से अपने नियमों को बढ़ा रहा था जो जनता के लिये अच्छा था।

कुछ भी हो राजा की अपनी प्रजा में यह रुचि प्रजा में खुशी फैला रही थी। राजा के औफीसर भी अब नयी नयी योजनाओं में व्यस्त होने लगे थे जो व्यापार को बढ़ाने लोगों को काम देने और बच्चों को शिक्षा देने के लिये बनायी गयी थीं।

एक बुढ़िया ने जो बाजार में सेब बेचती थी कहा — "लोगों का कहना है कि एक कानून बनेगा कि सूरज रोज चमका करेगा और बाजार दिनों में बारिश नहीं होनी चाहिये। ओह तब कितना अच्छा होगा।"

यह कह कर उसने यह सोच कर खुशी से अपने हाथ मले कि तब उसको किसी बारिश के दिन सिकुड़ कर नहीं बैठना पड़ेगा और ठंड में जब बारिश ज़ोर से पड़ेगी तो उसको अपने जमे हुए और सुन्न पड़े हाथों को गर्म करने के लिये पीतल के बर्तन में आग नहीं जलानी पड़ेगी।

यहॉ तक कि खेत में काम करने वाले मजदूरों ने जो या तो बिल्कुल ही बेअक्ल थे या फिर उन्हें बहुत ही थोड़ी अक्ल थी यह खबर सुनी तो उन्होंने सोचा कि अब उन्हें भूखे नहीं रहना पड़ेगा और फटे कपड़े नहीं पहनने पड़ेंगे।

पर इन सबमें जिसने इसके ऊपर सबसे अधिक विचार किया वह था एक गड़रिये का बेटा। वह धूप में चारों तरफ आलसी सा घूमता रहता था। वह चिड़ियों की चहचहाहट सुनता था हवा खेत और जंगल की तरह तरह की आवाजें सुनता था।

ऐसा लगता था जैसे वह उन सबको जानता और समझता था। किसी गर्म दिन वह नालों में पानी के बहने की आवाजें सुनता था जो उसको सुला देती थीं।

किसी दिन जब हवा बहुत ज़ोर ज़ोर से चलती थी और उस नाले का पानी पत्थरों से टकरा कर ज़ोर ज़ोर की आवाज करता था तो वह जान जाता था कि अभी उसमें बाढ़ आने वाली है और उसको अपने जानवर किसी सुरक्षित जगह ले जाने चाहिये।

वह यह सोचता रहता कि काश उसको भी लिखना और पढ़ना आता तो वह इस नाले और चिड़ियों का गीत लिख पाता ताकि उसे दूसरे लोग भी जान सकें। और यह सब सोचते सोचते वह सो गया।

वह और दिनों से कुछ अधिक ही सोया और जब वह उठा तो वह यह देख कर चिन्तित हो गया कि सूरज डूब चुका था। ॲधेरा तेज़ी से बढ़ रहा था और उसको अपने जानवर सुरक्षित घर ले जाने थे।

उसकी गाय और भेड़ों ने अपनी आदत के अनुसार खुद ही इकट्ठा होना शुरू कर दिया था तो उसी की आवाज से वह जागा था। उन्होंने अपने जाने पहचाने रास्ते पर चलना शुरू कर दिया था। उसको तो बस इतना करना था कि वे कहीं इधर उधर न हो जायें रास्ता न भटक जायें या फिर नाले में न गिर जायें।

जब तक उसे अपना घर दिखायी दिया तब तक सब कुछ ठीक था कि तभी ज़िज़ चिड़िया[117] वहाँ आयी जो कई घरों के बराबर बड़ी थी और उसने गायों और भेड़ों के ऊपर कूद लगायी। गड़रिये ने उसे एक बड़े डंडे से मार कर भगाने की कोशिश की जबकि डरे हुए जानवर घर की ओर भागने की कोशिश करने लगे।

ऐसा लग रहा था कि ज़िज़ अपने शिकार को खोना नहीं चाहती थी। उसने अपने पंजे बहुत नीचे किये और एक बैल को पकड़ लिया जो गलत दिशा में जा रहा था और दूसरे जानवरों से कुछ पीछे रह गया था।

बेचारा बैल दर्द से चिल्लाया तो गड़रिया उसको बचाने के लिये भागा। वह उसके आगे के पैर पकड़ने में सफल हो गया क्योंकि ज़िज़ ने उसे जमीन से ऊपर उठा लिया था। गड़रिये ने अपने पैर एक पेड़ के पतले तने के चारों तरफ लपेट लिये और ज़िज़ से उसको छुड़वाने के लिये कोशिश करने लगा।

---

[117] Ziz is a mythological bird in Jewish mythology. It is as big as it can hide the Sun with its wing span.

उस शक्तिशाली चिड़िया ज़िज़ ने जिसकी आँखें लैम्प की तरह से जल रही थी अपनी बहुत चोंच से गड़रिये को मारने की कोशिश की जिसका एक ही वार गड़रिये को मौत के मुँह में पहुँचा सकता था।

पर क्योंकि अँधेरा बहुत तेज़ी से बढ़ रहा था उसका वार खाली गया। यह गड़रिये के लिये तो अच्छी किस्मत थी पर चिड़िया की चोंच पेड़ के ऊपरी हिस्से में जा कर लगी। इस लगने से उसकी चोंच उसमें अटक गयी। इससे गड़रिये को पेड़ का तना छोड़ना पड़ा। पर वह अभी तक बैल के आगे वाले पैर पकड़े हुए था।

पर क्योंकि अब चिड़िया के लिये पकड़ने के लिये कुछ भी नहीं था सो अब उसे ऊपर उड़ना आसान हो गया। इससे पहले कि गड़रिये की समझ में कुछ आता कि क्या हो रहा है उसने अपने आपको पेड़ों के ऊपर उठते पाया।

इस समय अगर वह बैल के पैर को छोड़ देता तो इसका मतलब होता उसकी मौत सो वह अपनी पूरी ताकत के साथ बैल के पैर पकड़े ही रहा और साथ में अपने पैर भी ऊपर की ओर हिलाता रहा जिनसे वह बैल के पिछले पैर पकड़ पाये।

चिड़िया आसमान में अपने बड़े बड़े पंख फैला कर ऊपर और ऊपर उड़ती चली जा रही थी। वह बड़ी शान्ति से और तेज़ी से उड़ी चली जा रही थी।

उस समय गड़रिया अगर नीचे देखता तो उसे जरूर ही चक्कर आ जाते। नीचे जमीन उससे और नीचे छूटती जा रही थी। इसलिये उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं।

पर फिर पल भर के लिये उसने अपनी ऑखें खोलीं तो वह यह देख कर बहुत डर गया कि वह चिड़िया अब समुद्र के ऊपर से उड़ रही थी। चॉद अपनी चॉदी जैसी चमक के साथ समुद्र के पानी के ऊपर चमक रहा था।

एक गहरी सॉस ले कर उसने सोचा कि बस अब तो वह खो गया। अब वह यह सोचने लगा कि अब क्या ज़्यादा अच्छा होगा अपनी पकड़ छोड़ देना और नीचे समुद्र में गिर कर डूब जाना या फिर उस बड़ी चिड़िया का खाना बनना।

इससे पहले कि वह कुछ निश्चय कर पाता चिड़िया रुक गयी और गड़रिया इतनी ज़ोर से नीचे गिर पड़ा कि कुछ देर तक तो उसे होश ही नहीं आया।

जब उसे कुछ होश आया तो उसने देखा कि वह समुद्र में बने एक किले की मीनार पर है और बैल का ढॉचा उसके पास पड़ा है। उसके ऊपर ज़िज़ है। उसकी ऑखें दो अंगारे जैसी जल रही हैं और उसकी चोंच ने उसमें चोंच गड़ाने की सोचा।

तुरन्त ही गड़रिये ने अपना चाकू निकाला जो वह अपनी कमर की पेटी में लगा कर रखता था और उसे चिड़िया की खुली हुई चोंच

में मारा। चिड़िया बहुत दर्द होने की वजह से बहुत ज़ोर से चिल्लायी क्योंकि उसके चाकू ने चिड़िया की जीभ काट दी थी।

कुछ पलों में ही वह चिड़िया वहाँ से गायब हो गयी। वह वहाँ से उतनी तेज़ उड़ी कि कुछ पलों में ही वह उसके सामने से चाँदनी भरे आसमान में गायब हो गयी।

गड़रिया बहुत थक गया था सो वह वहीं सो गया। फिर वह बस किसी की आवाज से ही उठा। उसने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि सूरज निकल आया है और उसके सामने एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी है। वह तुरन्त ही खड़ा हो गया और उसे नीचे तक सिर झुकाया।

यह राजकुमारी सोलीमा का किला था जिसमें उसके पिता ने उसे रख दिया था। राजकुमारी सोलीमा ने पूछा — "तुम कौन हो और मुझे बताओ कि तुम इस बैल के ढाँचे के साथ यहाँ कैसे आये। यह जगह तो जमीन से वहुत दूर है और यह मीनार भी समुद्र तल से बहुत ऊपर है।"

गड़रिया बोला — "सच बोलूँ तो मैं भी इसके बारे में कुछ नहीं जानता। यह भी हो सकता है कि मुझ पर जादू डाला गया हो या फिर मैं कोई सपना देख रहा होऊँ क्योंकि मेरा यहाँ आना तो मेरे सारे विश्वासों को पार कर गया है।"

और फिर उसने उसे सब कुछ बता दिया।

राजकुमारी ने कुछ नहीं कहा पर उसको इशारा किया कि वह उसके पीछे पीछे आये। उसने ऐसा ही किया और राजकुमारी ने पहले उसे खाना खिलाया। वह बहुत भूखा था सो उसने पेट भर कर खाना खाया।

उसके बाद वह उसको नहानघर ले गयी। वहॉ ले जा कर उसने उसे कुछ कपड़े दिये और कहा तुम नहा धो लो और ये कपड़े पहन लो उसके बाद ही मैं तुमसे तुम्हारे बारे में बात करूँगी।

गड़रिया नहाया धोया अजीब से नये कपड़े पहने जो उसे राजकुमारी ने दिये थे जिसके बाद उसे बहुत अच्छा महसूस हुआ। उसके बाद वह राजकुमारी के पास गया। राजकुमारी भी उसे बहुत देर तक देखती रह गयी। वह संकोच में कुछ शर्मा रहा था।

राजकुमारी बोली — "तुम्हें आदमी बना देख कर मुझे बहुत खुशी हो रही है।"

इसके जवाब में गड़रिया कुछ हकला ही सका पर कुछ देर बाद में उसने कहा — "ओ सुन्दरी। मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं और क्या हैं पर आपकी जैसी सुन्दरता तो केवल राजकुमारियों में ही मिलती है। मैं तो एक बहुत ही गरीब गड़रिया हूँ।"

राजकुमारी ने मुस्कुराते हुए पूछा — "और क्या गड़रिये लोग सुन्दर नहीं होते हैं। मुझे यह तो बताओ कि यह नियम किसने बनाया है कि केवल शाही लोग ही देखने में सुन्दर होते हैं। मैंने

बहुत तरीके के राजकुमार देखे हैं।" वह अचानक ही रुक गयी क्योंकि वह अपना भेद नहीं खोलना चाहती थी।

दोनों उस मीनार के एक छोटे से कमरे में बैठे हुए थे। नीचे जो राजकुमारी के चौकीदार थे उनको तो अभी कुछ पता ही नहीं था कि ऊपर क्या हो रहा था।

हालाँकि गड़रिये ने इस बात का विरोध किया पर फिर भी राजकुमारी उसका काम अपने हाथ से करती रही। उसका खाना लाती रही। वह उसे तकिये देती रही ताकि रात को वह आराम से सो सके।

अगली सुबह वे दोनों मीनार से साथ साथ नीचे उतरे। राजकुमारी ने उससे कहा — "मैं यहाँ रोज सुबह आती हूं।"

गड़रिये ने पूछा — "क्यों?"

वह बोली — "यह देखने के लिये मेरे पति आ रहे होंगे।"

गड़रिये ने पूछा — "कौन हैं वह?"

राजकुमारी हँसी और बोली — "पता नहीं। कुछ सुबहों को जब मैं यहाँ खड़ी रहती हूं और अकेला महसूस करती हूं तो मुझे लगा कि मैं यह प्रतिज्ञा करूँ कि यहाँ पहले जो कोई भी आयेगा मैं उसी से शादी कर लूँगी।"

गड़रिया यह सुन कर चुप हो गया। फिर उसने राजकुमारी की आँखों में बहादुरी से देखा और बोला — "तुमने मुझसे कह दिया है

कि मैं ही वह पहला आदमी हूँ जो यहाँ आया है। तो अब मेरी भी यह हिम्मत हो गयी है कि मैं तुमसे यह कह दूँ कि मुझे भी तुमसे प्यार है।

यह मुझे तुमसे तभी हो गया था जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था। तुम कौन हो क्या हो यह मुझे अभी भी नहीं पता मैं इसे जानना भी नहीं चाहता और मुझे इसकी चिन्ता भी नहीं है। क्या हम लोग पति पत्नी बन जायें?"

राजकुमारी ने अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया और दोनों ने एक दूसरे को शादी का वचन दे दिया।

राजकुमारी बोली — "हम लोग हमेशा के लिये यहाँ नहीं रह सकते सो प्रिय क्या तुम यहाँ से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं खोज सकते?"

गड़रिये ने कुछ पल के लिये बैल के ढाँचे की ओर देखा और सोचा। फिर खुशी से बोला — "मैंने खोज लिया। यह मेरी ठीक सोच हो सकती है कि जो बड़ी चिड़िया मुझे यहाँ ले कर आयी थी वह अपना खाना खोजने के लिये यहाँ फिर आयेगी। फिर वह हमें यहाँ से ले जा सकती है। भगवान ने चाहा तो ऐसा ही होगा।"

उसी रात वह चिड़िया अपने खाने के लिये वहाँ लौटी और बैल खाने लगी। जब वह बैल खाने में पूरी तरह व्यस्त थी तो गड़रिये ने किसी तरह उसकी टाँगों में एक मजबूत रस्सी कस कर बाँध दी।

और रस्सी से एक टोकरी बॉध दी जिसमें वह राजकुमारी के साथ बैठ कर वहॉ से जा सकता था।

टोकरी में उसने आराम से बैठने के लिये कुछ तकिये रख लिये और रास्ते के लिये खाना रखना भी वह नहीं भूला।

सुबह के समय वह चिड़िया उड़ी तो साथ में उड़े गड़रिया और राजकुमारी भी। जब वह हवा में उड़ी तो उनकी टोकरी चारों ओर गोल गोल घूमने लगी सो दोनों ने एक दूसरे को कस कर पकड़ लिया।

अब क्योंकि वह चिड़िया तो बहुत बड़ी थी सो उसको उनका बोझ पता ही नहीं चल रहा था। कुछ पल बाद ही वह तेज़ी से समुद्र के ऊपर उड़ने लगी।

कई घंटों की उड़ान के बाद ही एक शहर दिखायी दिया। जब चिड़िया शहर के पास पहुॅची तो गड़रिये को शहर में ज़िज़ देखने की खुशी दिखायी दी।

चिड़िया भी उड़ते उड़ते थक गयी थी तब उसे अपनी टॉगों से बॅधा बोझ महसूस हुआ जिससे बचने के लिये वह शहर में उतर गयी। जब वह उतर रही थी तब उसकी टोकरी एक मीनार से टकरा गयी।

उसमें रहने वालों को लगा जैसे वे तो मर ही जायेंगे पर अचानक ही टोकरी की रस्सी फॅस कर खुल गयी और वह टोकरी

मीनार के ऊपर ही रुक गयी। चिड़िया हवा में उड़ती हुई चली गयी।

जैसे ही गड़रिया और राजकुमारी उस टोकरी में से बाहर निकले वैसे ही वहाँ हथियारबन्द पहरेदार आ गये। उन्होंने राजकुमारी को देखा तो उन्होंने अपने हथियार नीचे कर लिये और नीचे झुक गये।

राजकुमारी बोली — "जाओ मेरे पिता को बताओ कि मैं वापस आ गयी हूँ।" और वे तुरन्त ही उसका कहा करने के लिये चले गये।

गड़रिये ने पूछा — "क्या तुम्हें मालूम है कि तुम कहाँ हो?"

"हाँ मुझे मालूम है। यह राजा का महल है।"

तभी वहाँ राजा भी वहाँ आ गया। उसे अपनी बेटी को देख कर इतनी खुशी हुई कि उसने उसे गले लगा लिया। वह बोला — "आज तुमको देख कर मुझे बहुत खुशी हुई। तुम्हें वहाँ समुद्री किले में भेजने के बाद तो मैं तुमसे क्षमा माँगने के लिये तरस रहा था। अब तुम बताओ कि तुम्हारे साथ क्या क्या हुआ।"

तब उसकी निगाह गड़रिये पर पड़ी तो उसने पूछा — "यह कौन है।"

राजकुमारी बोली — "आपका दामाद और मेरा पति।" उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं।

राजा ने पूछा — "तुम कहाँ के राजकुमार हो?"

जवाब राजकुमारी ने दिया — "साधारण आदमियों में राजकुमार। एक आदमी जिसके पास बहुत धन नहीं है एक आदमी जो सामान्य जनता में से आता है। यह हमको उनकी आवश्यकताओं के बारे में बतायेगा और हमें राज करना सिखायेगा।"

राजा ने इस न रोक पाने वाली घटना के आगे अपना सिर झुका दिया। उसने अपनी बेटी और दामाद को आशीर्वाद दिया। वे सब फिर सबको सुखी समृद्ध और खुश रखने के लिये जुट गये।

Glossary of Jewish Religion

Abraham
There were ten generations from Noah to Abraham.

Adam
The first human being created by God.

David
King David is one of the most well-known figures in Jewish history. His life was filled with much happiness and much pain. David, the second king of ancient Israel flourished c. 1000 BC. He founded the Judaean dynasty and united all the tribes of Israel under a single monarch. His son Solomon expanded the empire that David built. He died c. 962 BC in Jerusalem Israel. His son was Solomon.

David was the youngest of seven or eight sons. David is mentioned more than 1,000 times in the Bible. David is the first figure in the Hebrew Bible for whom we have archaeological evidence. Nothing confirms the existence of the patriarchs or the matriarchs, Joseph or Moses or Saul. But the discovery of an inscription on an ancient stone in 1993 seems to confirm that David was, in fact, a flesh and blood figure.

Jewish tradition says David never died. David's mortal death is described in the Bible. But by long tradition in both Judaism and Christianity, he will live forever, both in the bloodline of the Messiah as he is imagined in Jewish tradition and the bloodline of Jesus of Nazareth as it is given in the New Testament.

David is the traditional author of the Book of Psalms — a set of 150 poems in the Hebrew Bible.

Enoch
Enoch is a biblical figure and patriarch prior to Noah's flood and the son of Jared and father of Methuselah.

Jacob
Jacob, called Israel also, Hebrew patriarch who was the grandson of Abraham, the son of Isaac and Rebekah, and the traditional ancestor of the people of Israel. Stories about Jacob in the Bible begin at Genesis 25:19.

Jethro
A daughter of Reuel, number two magician of Pharao's court, who after marrying Moses became Hebrew and was known as Jethro.

Korah
The Sons of Korah were the sons of Moses' cousin Korah. The story of Korah is found in Numbers 16. Korah led a revolt against Moses; he died, along with all his co-conspirators, when God caused "the earth to open her mouth and swallow him and all that appertained to them. Immediately after this event, the Lord's anger

burned and a plague struck killing another 14,700 Israelites. However, "the children of Korah died not"

Moses
Moses is considered the most important prophet in Judaism and one of the most important prophets in Christianity and Islam, Moses was the leader of the Israelites and lawgiver to whom the authorship of the Torah (the first five books of the Bible) is attributed. There many stories of Moses.

Moses married a daughter of Reuel, number two magician of Pharao's court, who later became Hebrew and was known as Jethro.

Noah
Noah was the 10th and last Pre-flood Patriarchs in the tradition of Abrahamic religions. His story appears in the Hebrew Bible (the Book of Genesis), the Quran and the Baha'I writings

Persia/Iran
Generally, "Persia" today refers to Iran because the country formed over the center of the ancient Persian empire and the majority of its original citizens inhabited that land. In 1935 the Iranian government requested those countries which it had diplomatic relations with, to call Persia "Iran," which is the name of the country in Persian. The suggestion for the change is said to have come from the Iranian ambassador to Germany, who came under the influence of the Nazis.

In the later parts of the Bible this kingdom is frequently mentioned as Paras. In India also it was called Paras or Pharas.

Rabbi
A Jewish scholar or teacher, especially one who studies or teaches Jewish law.

Seth
Seth was the third son of Adam, after Cain and Abel, a son in his likeness and image. He was sent by God and was born after Cain had murdered Abel as a replacement of Abel when Adam was 130 years old. He lived up to the age of 912 i.e 14 years before Noah's birth. The line of descent from Adam to Noah is reckoned through Seth. His eldest son was Enosh who was born when Seth was 105 years old. There has been another "Set" who is an Egyptian god.

Talmud
Talmud is the central text of Rabbinic Judaism and the primary source of Jewish religious law (halakha) and Jewish theology. Until the advent of modernity, in nearly all Jewish communities, the Talmud was the centerpiece of Jewish cultural life and was foundational to "all Jewish thought and aspirations", serving also as "the guide for the daily life" of Jews. It may also be called as "six orders" of the Mishnah.

Talmud means "study" or "learning". The Talmud is a record of the rabbinic debates in the 2nd-5th century on the teachings of the Torah, both trying to

understand how they apply and seeking answers for the situations they themselves were encountering.

The Talmud is the source from which the code of Jewish Halakhah (law) is derived. It is made up of the Mishnah and the Gemara. The Mishnah is the original written version of the oral law and the Gemara is the record of the rabbinic discussions following this writing down. It includes their differences of view.

Traditionally, Judaism holds that Yahweh, the God of Abraham, Isaac, and Jacob and the national god of the Israelites, delivered the Israelites from slavery in Egypt, and gave them the Law of Moses at Mount Sinai as described in the Torah. Within Judaism, the Talmud serves much the same function as the Old Testament in Bible,

Torah

The first five books of the Hebrew Bible or Old Testament are calles Torah – Genesis, Exodus, Leviticua, Numbers and Deuteronomy. This is called "Law of Pentateusch" in Christianity. Jews believe that God dictated the Torah to Moses on Mount Sinai 50 days after their exodus from Egyptian slavery. They believe that the Torah shows how God wants Jews to live. It contains 613 commandments and Jews refer to the ten best known of these as the ten 10 statements or Ten Commandments.

List of Tales of “Jewish Fairy Tales and Legends”

1. The Palace of Eagles
2. The Giant of the Flood
3. The Fairy Princess of Ergetz
4. The Higgledy Piggledy Palace
5. The Red Slipper
6. The Star-Child
7. The Feast of Abi Fressa
8. The Beggar King
9. The Quarrel of the Cat and Dog
10. The Water Babe
11. Sinbad of the Talmud
12. The Outcast Prince
13. The Story of Bostanai
14. From Shepherd-boy to King
15. The Magic Palace
16. The Sleep of One Hundred Years
17. King For Three Days
18. The Palace in the Clouds
19. The Pope's Game of Chess
20. The Slave's Fortune
21. The Paradise in the Sea
22. The Rabbi's Bogey-man
23. The Fairy Frog
24. The Princess of the Tower

Folktale Books About Israel

1. The Legends of the Jews. By Louis Genzeberg. **1909**. Tr : By Henrietta Szone. Stories of Bible times and characters
2. Jewish Fairy Tales and Legends. By Aunt Naomi. **1919**. e-Book available at : www.hawkstories.com and at https://www.sacred-texts.com/jud/jftl/index.htm
3. The Exempla of the Rabbies : being a collection of exempla, apologues and tales culled from Hebrew manuscripts and rare Hebrew books. By Moses Gaster. Leipzig: The Asia Pub Co. **1924**.
4. Elijah's Violin and other Jewish folktales. By Howard Schwartz. Harmondsworth : Penguin, **1987**.
5. The Power of a Tale : stories from the Israel folktale archives. Ed by Haya Bar-Itzhak and Idet Pintel-Ginsberg. Wayne State University Press. **2005**. 53 Tales. 404 p.
6. Folktales of the Jews. By Dov Noy. The Jewish Publication Society. Vol I. **2006**. 71 Tales
7. The First Thousand Folktales in the Israel Folktale Archives
8. The Hungry Clothes and Other Jewish Folktales. By Penninah Schram. Sterling Publishing. **2008**.
9. Treasures of Israeli Folktales Explored in New Volume. By Neville Teller. **2020**.

Asian Folktales Under "Classic Books of Folktales Seies"
Translated in Hindi by Sushma Gupta (Available from hindifolktales@gmail.com)

INDIA
4. Folktales of Bengal/ Behari Lal Dey/ 1889/ (22 Tales)/ NBT/ 2020
10. Tales of the Punjab/ Steel/ 1894/ (43 Tales)
11. Folk-Tales Kashmir/ Knowles/ 1887/ (64 tales) 4 Parts
19. Tales of the Sun/ Kingscote/ 1890/ 26 Tales
22. Deccan Nursery Tales/ Charles Augustus Kincaid / 1914/ 20 Tales
23. Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends/ Mary Frere/ 1868/ 24 Tales
24. Tales of Four Dervesh/ Amir Khusro/ early 14th century/ 5 Tales
29. Shuk Saptati/ Tr by B Hale Wortham/ 1911/ 60 Tales out of 72 Tales
34. Indian Antiquary/ 1872

ORIENT
16. Folktales and Legends : Orient/ Tibbits / 1889 / (13 Tales)
17. The Oriental Story Book/ Wilhelm Hauff/ 1855/ 7 Tales
25. Adventures of Hatim Tai/ Duncan Forbes/ 1830/ 330p

RUSSIA
5. Russian Folktales/ Afanasief/ 1916/ (73 Tales) 3 Parts
6. Folktales From the Russian/ Verra Blumenthal/ 1903/ (9 Tales)
26. Russian Garland/ Robert Steele/ 1916 (tales from 1830s)/ (17 Tales)
36. Cossack Fairy Tales (Ukraine)/ 1894/ (27 Tales)

Collected Folktales of Asian Countries/ translated by Sushma Gupta
Available from hindifolktales@gmail.com

Folktales of Arabians
Folktales of Asia. (36 Tales. 248 p)
Folktales of China (25 Tales. 196 p)
Folktales of China – Myths (2 Vols. 38 Tales)
Folktales of India. (3 Vols. 60 Tales)
Folktales of Israel
Folktales of Japan
Folktales of Russia. (2 Vols. 36 Tales)
Baba Yaga of Russia. (16 Tales. 202 p)
Folktales of Ukraine. (27 Tales)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group

https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचाया जा सकेगा।

विंडसर, कैनेडा
2023